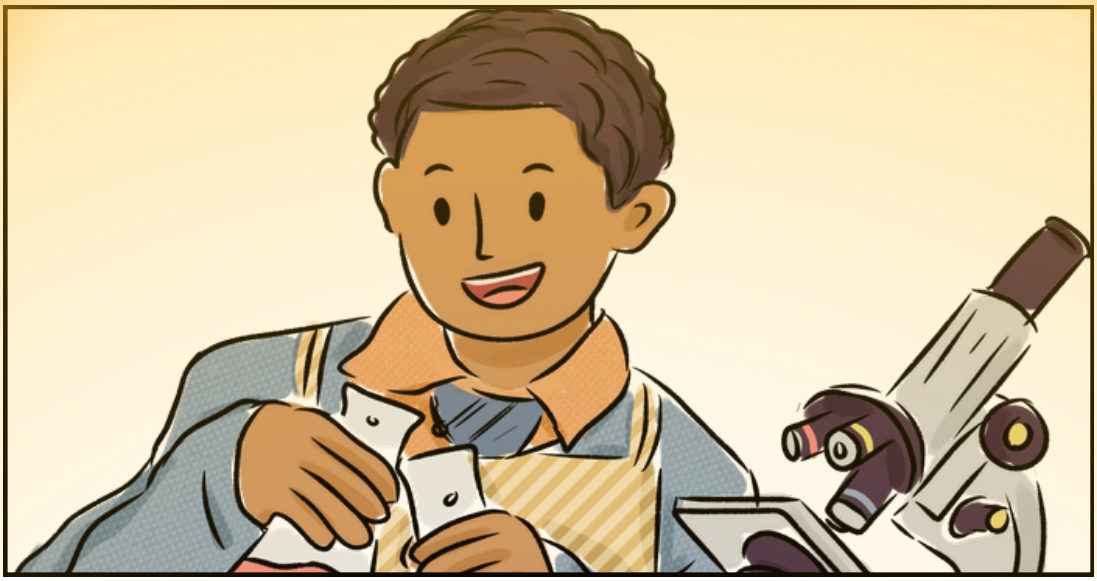
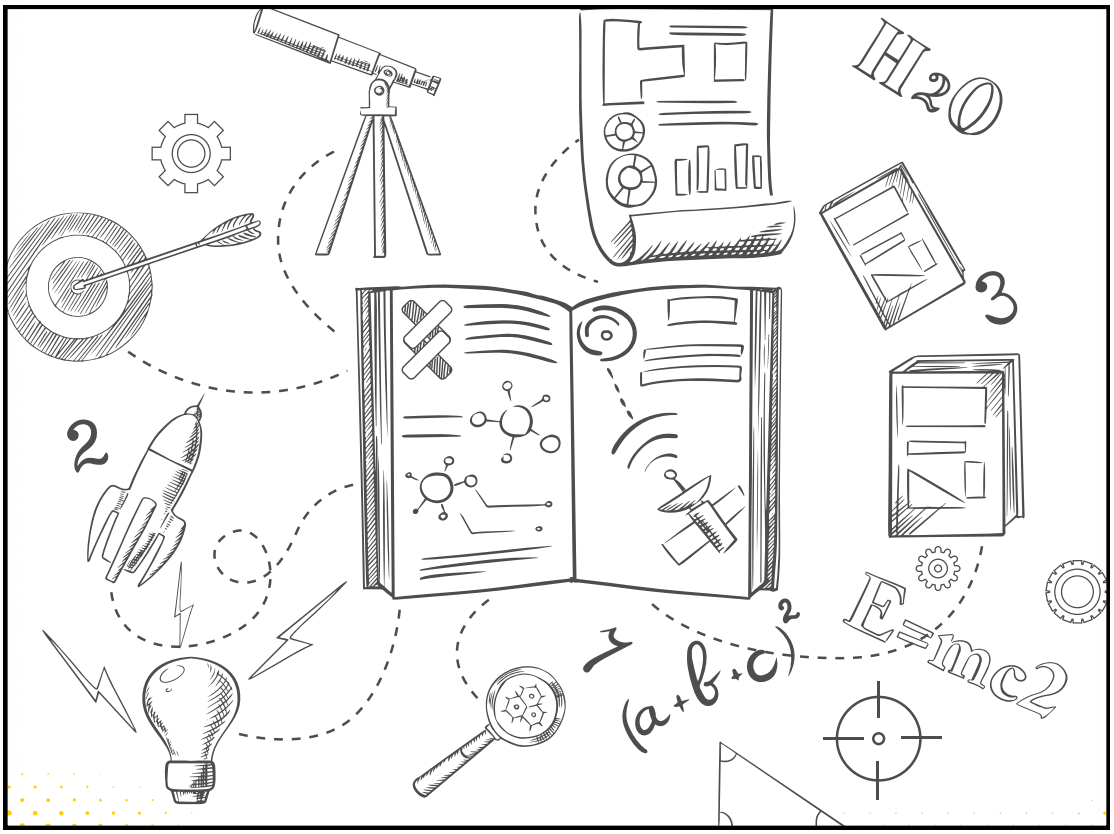


प्रगतिशील विज्ञान

स्वर्णिम मध्यप्रदेश की ओर




H2O
E=mc2
(a+b+c)²



"प्रगतिशील विज्ञान - स्वर्णिम मध्य प्रदेश की ओर" हमारे प्रदेश के वैज्ञानिक उत्थान, नवाचार और तकनीकी प्रगति की दिशा में हो रही अग्रणी यात्रा का एक जीवंत दस्तावेज़ है। यह वार्षिक स्मारिका केवल वैज्ञानिक गतिविधियों का संकलन नहीं, बल्कि मध्य प्रदेश की वैज्ञानिक सोच, अनुसंधान, शिक्षा और नवाचार की प्रेरणादायक कहानी है।

इस अंक में हमने उन संस्थानों, वैज्ञानिकों, शिक्षकों, शोधकर्ताओं और नवप्रवर्तकों को स्थान दिया है, जिन्होंने अपने ज्ञान, समर्पण और दृष्टिकोण से "स्वर्णिम मध्य प्रदेश" के वैज्ञानिक निर्माण में अमूल्य योगदान दिया है। यहाँ आपको विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की नीतियों, नवाचारों, अनुसंधान परियोजनाओं, शिक्षा, उद्योग, स्टार्टअप्स और सामाजिक परिवर्तन की प्रेरणादायक कहानियाँ पढ़ने को मिलेंगी।

हमारा उद्देश्य केवल वैज्ञानिक जानकारी का प्रसार करना नहीं है, बल्कि प्रदेशवासियों में विज्ञान के प्रति जागरूकता, जिज्ञासा और सहभागिता की भावना को प्रोत्साहित करना भी है। यह पत्रिका प्रदेश के वैज्ञानिक आत्मबल को उजागर करने का एक विनम्र प्रयास है – जहाँ ज्ञान की परंपरा, अनुसंधान की ऊर्जा और नवाचार के सपने एक साथ संजोए गए हैं।

हम आशा करते हैं कि यह स्मारिका पाठकों को न केवल विज्ञान की नई दिशाओं से परिचित कराएगी, बल्कि उन्हें प्रदेश के वैज्ञानिक और तकनीकी विकास में सक्रिय भागीदारी के लिए भी प्रेरित करेगी।

- संपादकीय टीम
"प्रगतिशील विज्ञान - स्वर्णिम मध्य प्रदेश की ओर"

संपादक की कलम से

प्रिय पाठकों,

मध्य प्रदेश, जिसे भारत का "हृदय प्रदेश" कहा जाता है, केवल भौगोलिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार के क्षेत्र में अपनी उल्लेखनीय प्रगति के कारण भी देश में विशेष पहचान बना चुका है। यहाँ की शासन व्यवस्था सदैव “विज्ञान आधारित विकास” और “जनकल्याण में तकनीकी संवेदनशीलता” के सिद्धांतों पर कार्य करती रही है।

पिछले कुछ वर्षों में प्रदेश ने वैज्ञानिक अनुसंधान, नवाचार, स्टार्टअप, शिक्षा, कृषि, स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण और उद्योग के क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की है। मध्य प्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद (MPCST) द्वारा चलाए जा रहे नवाचार, उद्यमिता और अनुसंधान प्रोत्साहन कार्यक्रमों ने युवाओं और वैज्ञानिकों में नई ऊर्जा का संचार किया है।

प्रदेश के विश्वविद्यालयों, अनुसंधान संस्थानों और नवाचार केन्द्रों ने विज्ञान को समाज से जोड़ने के अनेक सफल प्रयास किए हैं—चाहे वह ग्रामीण नवाचारों को प्रोत्साहन देना हो, स्वदेशी तकनीकों का विकास हो, या पर्यावरण-संवेदनशील तकनीकी समाधानों को अपनाना। ये सभी पहलें “विज्ञान से स्वावलंबन” की दिशा में मध्य प्रदेश को नई पहचान दे रही हैं।

विज्ञान के क्षेत्र में हो रहे यह प्रयास न केवल प्रदेश की विकास यात्रा को सशक्त आधार प्रदान कर रहे हैं, बल्कि “स्वर्णिम मध्य प्रदेश” के निर्माण के लिए ठोस नींव भी रख रहे हैं। प्रगतिशील विज्ञान के इस अंक के माध्यम से हमारा उद्देश्य है कि हम प्रदेश के इन वैज्ञानिक प्रयासों, नवाचारों और उपलब्धियों को जन-जन तक पहुँचाएँ—ताकि विज्ञान केवल प्रयोगशालाओं तक सीमित न रहे, बल्कि समाज के हर वर्ग के जीवन में उपयोगी सिद्ध हो। आइए, हम सब मिलकर ऐसे मध्य प्रदेश के निर्माण में योगदान दें, जहाँ विज्ञान और नवाचार से प्रेरित हर नागरिक ज्ञानवान, सक्षम और सशक्त बने।





<u>यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी</u>

भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का व्यक्तित्व दृढ़ संकल्प, अदम्य साहस, राष्ट्रनिष्ठा और जनसेवा के प्रति समर्पण का अद्वितीय प्रतीक है। आपने अपने नेतृत्व में भारत को नई दिशा और नई दृष्टि प्रदान की है—जहाँ शासन केवल प्रशासनिक तंत्र न होकर, जनभागीदारी, पारदर्शिता और परिणामोन्मुख नीति निर्माण का माध्यम बन गया है।

“सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास” का आपका मंत्र आज भारत की विकास यात्रा का मूल आधार बन चुका है। यह केवल एक नारा नहीं, बल्कि सामाजिक समानता, समावेशी विकास और राष्ट्रीय एकता की भावना का सशक्त प्रतीक है। आपके नेतृत्व में भारत ने विश्व मंच पर अपनी अस्मिता, आत्मविश्वास और क्षमता का परिचय दिया है। आपके कुशल मार्गदर्शन में देश ने अनेक क्षेत्रों में ऐतिहासिक उपलब्धियाँ अर्जित की हैं।

आर्थिक क्षेत्र में आपने भारत को स्थायित्व, आत्मनिर्भरता और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के पथ पर अग्रसर किया। मेक इन इंडिया, स्टार्टअप इंडिया, डिजिटल इंडिया, गति शक्ति योजना और वोकल फॉर लोकल जैसी पहलों ने न केवल अर्थव्यवस्था को सशक्त किया, बल्कि करोड़ों युवाओं को रोजगार और आत्मनिर्भरता के अवसर प्रदान किए।

सामाजिक क्षेत्र में आपने समाज के अंतिम व्यक्ति तक विकास की रोशनी पहुँचाने का कार्य किया। प्रधानमंत्री आवास योजना, जन धन योजना, उज्ज्वला योजना, स्वच्छ भारत मिशन और आयुष्मान भारत योजना जैसी पहलें आपके “अंत्योदय” के आदर्श को साकार करती हैं। आज देश का हर नागरिक विकास की मुख्यधारा से जुड़ रहा है और आत्मसम्मान के साथ आगे बढ़ रहा है।

स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में आपके प्रयासों ने एक नया अध्याय लिखा है। आयुष्मान भारत ने करोड़ों परिवारों को स्वास्थ्य सुरक्षा दी है, वहीं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भारत की युवा पीढ़ी के लिए आधुनिक, कौशल-आधारित और नवाचार-संवर्धक शिक्षा का मार्ग प्रशस्त किया है।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत ने आपके नेतृत्व में विश्व को अपनी क्षमता का परिचय दिया है। चंद्रयान-3 और आदित्य-L1 जैसी सफलताओं ने भारत को अंतरिक्ष अनुसंधान के अग्रणी देशों की पंक्ति में स्थापित किया है। 5G संचार क्रांति, डिजिटल भुगतान प्रणाली और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित नवाचारों ने भारत को तकनीकी रूप से सशक्त राष्ट्र बनाया है।

कृषि और ग्रामीण विकास में भी आपके दूरदर्शी दृष्टिकोण ने गाँवों को आत्मनिर्भरता की राह पर अग्रसर किया है। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना और मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना जैसी योजनाओं ने किसानों को सम्मान, सुरक्षा और समृद्धि का नया आयाम प्रदान किया है।

महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में आपका दृष्टिकोण सामाजिक परिवर्तन का आधार बना है। बेटी बचाओ – बेटी पढ़ाओ, स्वयं सहायता समूहों को प्रोत्साहन, और महिला उद्यमिता योजनाएँ आज महिलाओं को समाज और राष्ट्र निर्माण के केंद्र में ला रही हैं।



यशस्वी नेतृत्व का आलोक – मुख्यमंत्री श्री मोहन यादव जी

मध्य प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री **श्री मोहन यादव जी** का व्यक्तित्व सेवा, समर्पण और संकल्प का प्रतीक है। आपने जनसेवा को अपने जीवन का उद्देश्य बनाकर, विकास को केवल नीतियों तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे जनता के जीवन से जोड़ा है। आपकी दूरदर्शी सोच, पारदर्शी प्रशासन और संवेदनशील कार्यशैली ने मध्य प्रदेश को नई पहचान दी है।

आपके नेतृत्व में राज्य ने शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, उद्योग और विज्ञान-प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में ऐतिहासिक प्रगति की है। आपकी **"सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास"** की नीति ने शासन व्यवस्था को अधिक सहभागी और उत्तरदायी बनाया है। आपने यह सिद्ध किया है कि जब नीति और निष्ठा का संगम होता है, तब विकास केवल कागज़ पर नहीं बल्कि जन-जीवन में दिखाई देता है।

शिक्षा के क्षेत्र में आपकी पहल से राज्य में डिजिटल लर्निंग, नवाचार प्रयोगशालाओं और कौशल विकास केंद्रों की स्थापना हुई है। इससे युवाओं को न केवल आधुनिक तकनीक का ज्ञान मिला है, बल्कि रोजगार और उद्यमिता के नए अवसर भी खुले हैं।

स्वास्थ्य सेवाओं में आपके मार्गदर्शन से टेलीमेडिसिन, ई-हॉस्पिटल प्रबंधन प्रणाली, और ग्रामीण स्वास्थ्य मिशनों को मज़बूती मिली है। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों और जिला अस्पतालों में तकनीकी सुविधाओं का विस्तार हुआ है, जिससे आम नागरिक को बेहतर और सुलभ चिकित्सा सेवाएँ मिल रही हैं।

कृषि और ग्रामीण विकास में वैज्ञानिक नवाचारों को अपनाकर आपने किसानों को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में सराहनीय कदम उठाए हैं। सटीक सिंचाई, मृदा परीक्षण और ड्रोन आधारित फसल निगरानी जैसी पहलें किसानों को आधुनिक तकनीक से जोड़ रही हैं। "हर खेत हरा-भरा" और "हर घर जल" जैसे अभियानों ने ग्रामीण जीवन में नई ऊर्जा भरी है।

आपके नेतृत्व में मध्य प्रदेश आज **ग्रीन एनर्जी, बायोटेक्नोलॉजी, स्पेस-टेक और स्टार्टअप इनोवेशन** जैसे क्षेत्रों में अग्रणी राज्यों की पंक्ति में खड़ा है। Morena में ग्रीन हाइड्रोजन प्रोजेक्ट, इलेक्ट्रॉनिक्स मैन्युफैक्चरिंग हब, और इनक्यूबेशन सेंटर जैसे कदमों ने राज्य को तकनीकी प्रगति की नई दिशा दी है।

आपकी पहल पर प्रशासनिक व्यवस्था में ई-गवर्नेंस, एआई और डेटा एनालिटिक्स का प्रयोग बढ़ा है, जिससे शासन पारदर्शी, जवाबदेह और नागरिक-केंद्रित हुआ है। यह आधुनिक तकनीक न केवल कार्यकुशलता बढ़ा रही है बल्कि जनता के बीच विश्वास को भी मज़बूत कर रही है।

पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास के क्षेत्र में भी आपकी सोच प्रेरक रही है। हरित ऊर्जा, जल संरक्षण, और कचरा प्रबंधन जैसे अभियानों ने समाज में जागरूकता बढ़ाई है। आपने यह दिखाया है कि जब विकास में पर्यावरणीय जिम्मेदारी जोड़ी जाती है, तभी वह स्थायी और सर्वहितकारी बनता है।

आपके नेतृत्व में मध्य प्रदेश आज **"स्वर्णिम मध्य प्रदेश"** के विज़न की ओर तेजी से अग्रसर है – एक ऐसा प्रदेश जहाँ हर नागरिक को शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और अवसर समान रूप से उपलब्ध हों; जहाँ विज्ञान, संस्कृति और सामाजिक समरसता साथ-साथ आगे बढ़ें; और जहाँ हर युवा अपने सपनों को साकार करने की क्षमता रखता हो।

मध्य प्रदेश की जनता गर्व महसूस करती है कि उन्हें आपका मार्गदर्शन प्राप्त है। आपका नेतृत्व न केवल विकास का प्रतीक है, बल्कि यह उस नए भारत की झलक भी है जो आत्मनिर्भर, सशक्त और संवेदनशील है।

आपके कुशल नेतृत्व में प्रदेश निश्चित ही आने वाले वर्षों में विज्ञान, तकनीकी, पर्यावरण और मानव विकास के क्षेत्र में देश के लिए आदर्श बनेगा।



शिक्षा से समृद्धि की ओर: “माननीय राज्यपाल श्री मंगूभाई पटेल जी” के प्रेरणादायी प्रयास

मध्यप्रदेश के शैक्षिक विकास की कहानी आज एक नई ऊँचाई पर है, और इसके पीछे है राज्यपाल श्री मंगूभाई पटेल जी का दूरदर्शी नेतृत्व। उन्होंने शिक्षा को केवल डिग्री प्राप्त करने का माध्यम नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण का सशक्त साधन माना है।

नई दिशा, नया संकल्प

श्री पटेल जी का मानना है कि जब शिक्षा समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचेगी, तभी प्रदेश आत्मनिर्भरता और समृद्धि की ओर बढ़ेगा। इसी सोच के साथ उन्होंने शिक्षा को अपनी प्राथमिकता में सर्वोच्च स्थान दिया है।

गुणवत्ता और विस्तार की पहल

उनके कार्यकाल में उच्च शिक्षा संस्थानों में नवाचार और शोध को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं लागू की गईं:
ग्रामीण और जनजातीय क्षेत्रों में उच्च शिक्षा की पहुँच आसान बनाना
रोजगारोन्मुखी कोर्सेज़ की शुरुआत
युवाओं को शोध परियोजनाओं में सक्रिय भागीदारी देना

नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा

श्री पटेल जी का दृष्टिकोण भविष्य की पीढ़ियों को ध्यान में रखकर शिक्षा का स्वरूप तय करता है:
नैतिक शिक्षा और भारतीय संस्कृति के मूल्यों को समाहित करना
युवाओं को स्टार्टअप और नवाचार की ओर प्रेरित करना
डिजिटल शिक्षा और ई-लर्निंग को बढ़ावा देना

राज्यपाल श्री मंगूभाई पटेल जी के प्रयासों ने मध्यप्रदेश को शिक्षा के क्षेत्र में नई पहचान दी है। उन्होंने यह सिद्ध किया है कि जब शिक्षा सशक्त होती है, तो समाज और राष्ट्र दोनों समृद्ध होते हैं। **Saumya Science and Research Foundation** उनके इन प्रयासों को देशभर में पहुँचाने का संकल्प लेता है, ताकि हर नागरिक शिक्षा की शक्ति को समझे और उसका लाभ उठाकर उज्ज्वल भविष्य की ओर बढ़े।



सिकल सेल एनीमिया के विरुद्ध जन-जागरण: श्री मंगू भाई पटेल जी का प्रेरणादायक नेतृत्व

मध्यप्रदेश के माननीय राज्यपाल श्री मंगू भाई पटेल जी ने सिकल सेल एनीमिया जैसी गंभीर आनुवांशिक बीमारी के खिलाफ एक व्यापक जन-जागरण अभियान की शुरुआत कर समाज के स्वास्थ्य और भविष्य को नई दिशा दी है। यह रोग विशेष रूप से आदिवासी समुदायों को पीढ़ी दर पीढ़ी प्रभावित करता रहा है, जिससे न केवल स्वास्थ्य बल्कि सामाजिक संरचना भी प्रभावित होती है। श्री पटेल जी ने इस चुनौती को केवल एक चिकित्सा समस्या नहीं, बल्कि सामाजिक सुधार का अवसर मानते हुए इसे एक जन-आंदोलन का रूप दिया है।

उनके नेतृत्व में प्रदेश के आदिवासी बहुल क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर स्क्रीनिंग, जाँच और उपचार अभियान चलाए जा रहे हैं। बच्चों, महिलाओं और युवाओं को प्राथमिकता के साथ इस अभियान में शामिल किया गया है ताकि समय रहते निदान और उपचार संभव हो सके। स्वास्थ्य शिविरों, जागरूकता रैलियों और गाँव-गाँव संवाद कार्यक्रमों के माध्यम से यह संदेश फैलाया जा रहा है कि सिकल सेल एनीमिया को छिपाना नहीं, बल्कि मिलकर मिटाना है। श्री पटेल जी का यह दृष्टिकोण समाज को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक और संगठित बना रहा है।

राज्यपाल महोदय ने इस अभियान को शिक्षा और सामाजिक भागीदारी से भी जोड़ा है। विद्यालयों, महाविद्यालयों और पंचायत स्तर पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं, जहाँ युवाओं और महिलाओं को प्रशिक्षित कर उन्हें “स्वास्थ्य प्रहरी” के रूप में तैयार किया जा रहा है। यह पहल न केवल बीमारी के खिलाफ लड़ाई को मजबूत करती है, बल्कि समाज में नेतृत्व और सहभागिता की भावना को भी बढ़ावा देती है। श्री पटेल जी का यह प्रयास एक मॉडल के रूप में देश के अन्य राज्यों के लिए भी प्रेरणास्रोत बन रहा है।

सौम्या साइंस एंड रिसर्च फाउंडेशन इस जनहितकारी अभियान को कोटि-कोटि नमन करता है। श्री मंगू भाई पटेल जी का समर्पण यह सिद्ध करता है कि जब नेतृत्व संवेदनशील और दूरदर्शी हो, तो सामाजिक समस्याओं का समाधान केवल नीति से नहीं, बल्कि जनभागीदारी से संभव होता है। हमारी मैगज़ीन के माध्यम से हम पूरे देश को यह संदेश देना चाहते हैं — आइए, हम सब मिलकर सिकल सेल एनीमिया को जड़ से मिटाएँ और एक स्वस्थ, सशक्त भारत का निर्माण करें।

हमारा प्यारा मध्य प्रदेश – विकास की स्वर्णिम ऊँचाइयों की ओर

भारत के हृदय में बसा मध्य प्रदेश न केवल अपनी भौगोलिक स्थिति के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि अपनी समृद्ध संस्कृति, गौरवशाली इतिहास, अपार प्राकृतिक संपदा और सतत विकास यात्रा के लिए भी जाना जाता है। यह वह भूमि है जहाँ राजा भोज की विद्या, ताँडव करती नर्मदा की धारा, खजुराहो के मंदिरों की अद्भुत शिल्पकला, भीमबेटका की प्राचीन गुफाएँ और साँची के स्तूप जैसी विरासतें हमारी पहचान बनकर खड़ी हैं।
मध्य प्रदेश की मिट्टी में मेहनत की खुशबू और संस्कारों की मिठास घुली हुई है। यहाँ के गाँवों में आत्मीयता है, शहरों में आधुनिकता की चमक है और जनजीवन में सह-अस्तित्व की अनूठी मिसाल है।

आज हमारा प्यारा प्रदेश विकास के स्वर्णिम पथ पर है। लोककल्याणकारी योजनाओं ने हर वर्ग तक राहत और प्रगति की किरणें पहुँचाई हैं। कृषि क्षेत्र में नई तकनीकें, सिंचाई सुविधाओं का विस्तार और किसानों के हित में संवेदनशील नीतियाँ—हमारे अन्नदाताओं को सशक्त बना रही हैं।
उद्योग और निवेश के क्षेत्र में तेज़ी से उभरता मध्य प्रदेश, देश-विदेश के निवेशकों का केंद्र बन रहा है। शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार, विशेषकर एयर एम्बुलेंस सेवा जैसी पहल, हर नागरिक तक आधुनिक सुविधा पहुँचाने का प्रमाण है।
संस्कृति और पर्यटन की राजधानी मध्य प्रदेश की सांस्कृतिक धरोहर और पर्यटन स्थलों की प्रसिद्धि देश ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया में है। उज्जैन का महाकाल लोक, अमरकंटक का पवित्र संगम, पंचमढ़ी का हरा-भरा सौंदर्य, खजुराहो की विश्वप्रसिद्ध मूर्तिकला, ग्वालियर और ओरछा का ऐतिहासिक वैभव—ये सब मिलकर मध्य प्रदेश को भारत का सांस्कृतिक ध्रुवतारा बनाते हैं।

काव्यात्मक अभिव्यक्ति

“हृदय प्रदेश का हृदय है विशाल,
जहाँ हर कोना है अद्वितीय और बेमिसाल।
खेतों में लहराती हरियाली की मुस्कान,
नदियों की कलकल, जंगलों की शान।
प्रगति की राह पर दौड़ता कारवाँ,
यही है हमारा मध्य प्रदेश महान।”
“जहाँ अतीत की महिमा और भविष्य की उड़ान,
मिलते हैं एक पथ पर, बनाते पहचान।
संस्कृति, सेवा और समर्पण का संगम,
यही है मध्य प्रदेश—भारत का अभिमान।”

आज हमारा मध्य प्रदेश केवल एक भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि आकांक्षाओं, अवसरों और उपलब्धियों का जीवंत प्रतीक बन चुका है। यह वह प्रदेश है जहाँ परंपरा और आधुनिकता का अद्भुत संगम देखने को मिलता है, जहाँ हर नागरिक का सपना, सरकार की प्राथमिकता है, और जहाँ भविष्य के हर कदम में एक स्वर्णिम कल की आहट है। आइए, हम सब मिलकर इस विकास यात्रा के सहभागी बनें और अपने प्यारे मध्य प्रदेश को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाएँ।



समाज निर्माण और राष्ट्र उत्थान की दिशा में
(आदरणीय श्री मोहन भागवत जी एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की विचारधारा से प्रेरित)

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) का नाम भारत की सांस्कृतिक चेतना, राष्ट्रभक्ति और सेवा भावना का पर्याय बन चुका है। संघ ने अपनी स्थापना के प्रारंभिक दिनों से ही यह स्पष्ट कर दिया था कि राष्ट्र निर्माण केवल शासन या राजनीति का कार्य नहीं, बल्कि समाज की एकजुटता, संस्कारों की दृढ़ता और नागरिकों की सक्रिय भागीदारी से ही संभव है।
संघ की मूल भावना इस सिद्धांत में निहित है —

“व्यक्ति से बड़ा समाज और समाज से बड़ा राष्ट्र।”

यह विचार केवल एक संगठनात्मक सिद्धांत नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक दिशा है — जो प्रत्येक स्वयंसेवक को सेवा, अनुशासन और समर्पण के भाव से जोड़ता है।
आदरणीय श्री मोहन भागवत जी, वर्तमान सरसंघचालक, अपने विचारों और कर्म से इस परंपरा को और अधिक सशक्त बना रहे हैं।
उनका मानना है कि समाज में स्थायी परिवर्तन का आधार राजनीतिक शक्ति नहीं, बल्कि सांस्कृतिक मूल्य और नैतिक शक्ति है।
उनकी प्रेरणा से संघ केवल विचार नहीं, बल्कि एक गतिशील आंदोलन बन गया है — जो हर क्षेत्र में सकारात्मक परिवर्तन की भावना को बल देता है।
संघ की विचारधारा हमें सिखाती है कि जाति, वर्ग, भाषा या धर्म के भेदभाव से ऊपर उठकर राष्ट्र को सर्वोपरि मानना ही सच्चा देशप्रेम है।
संघ का उद्देश्य समाज के हर वर्ग तक एकता, सद्भावना और आत्मगौरव का संदेश पहुँचाना है — ताकि हर नागरिक स्वयं को इस राष्ट्र का अभिन्न अंग महसूस करे।
सेवा, संस्कार और संगठन — ये तीन स्तंभ संघ की कार्यप्रणाली के केंद्र में हैं।
सेवा के माध्यम से संघ ने लाखों जीवनों को स्पर्श किया है, संस्कारों के माध्यम से चरित्र निर्माण किया है, और संगठन के माध्यम से राष्ट्र की शक्ति को एक दिशा दी है।
चाहे प्राकृतिक आपदा हो, सामाजिक संकट या राष्ट्रहित का कोई कार्य — संघ के स्वयंसेवक हर परिस्थिति में राष्ट्रसेवा के लिए तत्पर रहते हैं।

आदरणीय श्री मोहन भागवत जी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वर्तमान सरसंघचालक, भारतीय समाज जीवन में आदर्श नेतृत्व, गहन चिंतन और राष्ट्रनिष्ठ दृष्टिकोण के प्रतीक हैं। उनके विचार, आचरण और जीवनदर्शन में राष्ट्रप्रेम, संस्कृति, सेवा और आत्मानुशासन का अद्भुत संगम दिखाई देता है। उन्होंने यह सिद्ध कर दिखाया है कि सच्चा नेतृत्व केवल दिशा देने वाला नहीं होता, बल्कि प्रेरणा देने वाला होता है — जो समाज के हर व्यक्ति में राष्ट्र के प्रति कर्तव्यबोध जागृत करता है।

आदरणीय भागवत जी का यह प्रेरक विचार समाज के लिए मार्गदर्शक बन चुका है —

“हमें किसी को बदलने की आवश्यकता नहीं, बल्कि स्वयं को बदलकर उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए।”

यह वाक्य केवल एक संदेश नहीं, बल्कि एक जीवन सूत्र है। इसका अर्थ है कि परिवर्तन की शुरुआत सदैव स्वयं से होती है। जब व्यक्ति अपने भीतर अनुशासन, सेवा और समर्पण का भाव लाता है, तभी समाज में वास्तविक परिवर्तन संभव होता है।

आज का भारत इसी आत्मपरिवर्तन की चेतना से प्रेरित होकर आगे बढ़ रहा है। व्यक्ति जब अपने आचरण को संस्कारित करता है, तो समाज में एक नई ऊर्जा का संचार होता है, और वही ऊर्जा राष्ट्र को सशक्त बनाती है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की विचारधारा एक ऐसे भारत की परिकल्पना करती है जो सशक्त, आत्मनिर्भर और संस्कारित हो। संघ का उद्देश्य केवल संगठन बनाना नहीं, बल्कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति में राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्व और गर्व की भावना जागृत करना है।

संघ की प्रेरणा से आज समाज का हर क्षेत्र — शिक्षा, विज्ञान, ग्राम विकास, पर्यावरण संरक्षण, सेवा कार्य या सामाजिक समरसता — राष्ट्रहित की भावना से ओत-प्रोत होकर नई दिशा में आगे बढ़ रहा है।

संघ का यह दृष्टिकोण भारत की सांस्कृतिक आत्मा को पुनः जागृत करने का कार्य कर रहा है।

भारत की आत्मा सेवा, त्याग और संस्कार में निहित है, और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ इसी आत्मा को जागृत रखने का सतत प्रयास कर रहा है।

चाहे वह गाँवों में सेवा प्रकल्प हों, शिक्षा में मूल्य आधारित दृष्टिकोण हो, या युवाओं में राष्ट्रीय एकता की भावना — हर कार्य के केंद्र में राष्ट्र सर्वोपरि की भावना ही रहती है।

संघ की यही भावना आज भारत को “वसुधैव कुटुम्बकम्” के दर्शन की ओर ले जा रही है —

जहाँ समाज के हर वर्ग में एकता, सहयोग और संवेदनशीलता की भावना विकसित हो रही है।

संघ का यह सतत प्रयास आने वाले समय में भारत को “विश्व गुरु” के रूप में पुनः प्रतिष्ठित करने की दिशा में एक सशक्त आधार प्रदान कर रहा है।

यह वह भारत होगा जो केवल आर्थिक या तकनीकी रूप से नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और नैतिक दृष्टि से भी विश्व को दिशा देगा।

आदरणीय श्री मोहन भागवत जी का जीवन और नेतृत्व आज करोड़ों लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

उनके दूरदर्शी विचार और एकात्म दृष्टि समाज में नवचेतना का संचार कर रहे हैं।

उनकी प्रेरणा से राष्ट्र एक नई दिशा, नई शक्ति और नई गति के साथ “स्वर्णिम भारत” के निर्माण की ओर अग्रसर है —

एक ऐसा भारत जो आत्मनिर्भर, सशक्त, संस्कारित और विश्व के कल्याण के लिए समर्पित है।

आदरणीय श्री मोहन भागवत जी के नेतृत्व, चिंतन और राष्ट्रनिष्ठ दृष्टि को कोटि-कोटि नमन।

उनकी प्रेरणा से भारत का प्रत्येक नागरिक अपने भीतर सेवा, संस्कार और समर्पण की भावना लेकर राष्ट्र की उन्नति में योगदान दे रहा है।

यही वह चेतना है जो आने वाले समय में भारत को पुनः जगद्गुरु की भूमिका में प्रतिष्ठित करेगी।

– संपादकीय टीम

"प्रगतिशील विज्ञान – स्वर्णिम मध्य प्रदेश की ओर"

लुप्त होती शिक्षालय की आत्मा – एक स्वयंसेवक की पीड़ा

संघ के एक स्वयंसेवक होने के नाते मेरा जीवन सदैव मातृभूमि, समाज और संस्कारों के प्रति समर्पित रहा है। मेरे जीवन की शिक्षा यात्रा सरस्वती शिक्षा मंदिर से आरंभ हुई – वही विद्यालय जहाँ मैंने चौदह वर्षों तक अध्ययन किया, जहाँ केवल अक्षर ज्ञान ही नहीं, बल्कि जीवन का सच्चा अर्थ भी सिखाया गया।

आज जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो हृदय में पीड़ा होती है कि जिस शिक्षा पद्धति ने हमें गढ़ा, वही आज विलुप्त होती जा रही है।

उन शिक्षकों को याद करता हूँ जिनसे मैंने ज्ञान प्राप्त किया – जिनका जीवन तपस्या के समान था। मैंने उन्हें 500 रुपये की वेतन से लेकर 15,000 रुपये तक का संघर्ष करते देखा है। इतने अल्प साधनों में वे अपने परिवार का पोषण भी कठिनाई से कर पाते थे। जिनके घर के बच्चे कॉलेज जाने लगे, वे उनकी फीस तक नहीं चुका पाते थे।

यह वही गुरुजन थे जिन्होंने हम जैसे अनगिनत स्वयंसेवकों में राष्ट्रभक्ति, अनुशासन और सेवा का भाव भरा। किंतु आज विडंबना यह है कि उनके परिश्रम का उचित मूल्य उन्हें कभी नहीं मिला।

कभी यह विद्यालय हमारे जीवन का संस्कार मंदिर था – जहाँ हम आदिवासी भाइयों के साथ रहते, उनके भोजन, वस्त्र और शिक्षा की चिंता करते। हम गेहूँ-चावल से लेकर उनके जीवन-निर्वाह की व्यवस्था करते थे। वह शिक्षा केवल कक्षा तक सीमित नहीं थी; वह समाज से जोड़ने वाली, व्यक्ति को मनुष्य बनाने वाली शिक्षा थी।

परंतु आज कुछ ऐसे लोग, जिनका स्वयं कोई अस्तित्व नहीं था, जिन्होंने मुश्किल से एक माह का औपचारिक प्रशिक्षण लिया, वे उन्हीं विद्यालयों के स्वामी बन बैठे हैं। जिन्होंने विद्यालय के निर्माण और विकास के नाम पर करोड़ों रुपयों की हेराफेरी की, उन्हीं ने हमारे "ज्ञान और संस्कार के मंदिर" को समाप्त कर दिया।

जो स्वयं बोलना तक नहीं जानते थे, जिनको हमने बोलना सिखाया – वही आज हमारी संस्कृति में घुसकर विद्यालय की आत्मा को निगल रहे हैं। वे स्वयंसेवक नहीं, भक्षक हैं।

जब कोई मुझसे पूछता है कि "क्या आपने तृतीय वर्ष किया है?"

तो मैं मुस्कुरा कर कहता हूँ – "हमने तृतीय वर्ष नहीं, बल्कि चौदह वर्ष उस शिक्षा मंदिर में बिताए हैं जहाँ ज्ञान के साथ संस्कार भी पढ़ाए जाते थे।"

हमने वहाँ केवल पुस्तकें नहीं पढ़ीं, बल्कि भारत के निर्माण की प्रेरणा पाई।

आज भी मुझे उस मंदिर की चिंता सताती है।

मैं संकल्प करता हूँ कि यदि जीवन में उच्च पद पर आने का अवसर मिला, तो उन सरस्वती मंदिरों को पुनः जीवित करूँगा।

मैं फिर से ऐसे करोड़ों स्वयंसेवकों को तैयार करूँगा, जो सालों-साल नहीं, बल्कि जन्म-जन्मांतर तक सच्चे स्वयंसेवक बनें –

जो राष्ट्र, संस्कृति और समाज के लिए समर्पित रहें।

यह लेख केवल एक व्यक्ति की व्यथा नहीं, बल्कि उन असंख्य गुरुओं की पुकार है, जिनका परिश्रम किसी कोने में भुला दिया गया है।

उनकी साधना को पुनर्जीवित करना ही सच्चा राष्ट्रधर्म है।

सच्चे स्वयंसेवक की यही पहचान होगी – जो भटकी हुई शिक्षा को फिर से संस्कृति से जोड़ दे, और अपने गुरुजनों के सम्मान को राष्ट्र के शिखर तक पहुँचा दे।





<u>विचार और कर्म के प्रेरणास्रोत – श्री सुरेश सोनी जी</u>

राष्ट्र निर्माण की दिशा में अपने अमूल्य योगदान से समाज को नई दृष्टि देने वाले व्यक्तित्वों में श्री सुरेश सोनी जी का नाम अत्यंत आदर के साथ लिया जाता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सहकार्यवाहक के रूप में वे न केवल संगठन को सशक्त दिशा प्रदान कर रहे हैं, बल्कि अपने विचारों और कर्म से समाज में राष्ट्रभक्ति, अनुशासन और संगठन की भावना को गहराई से स्थापित कर रहे हैं। उनका जीवन संघ के मूल सिद्धांत "स्वयं से पहले राष्ट्र" का जीवंत उदाहरण है।
सादगी, समर्पण और साधना से परिपूर्ण श्री सोनी जी का व्यक्तित्व चिंतन और कर्म का सुंदर संगम है। उन्होंने अपने आचरण से यह सिद्ध किया है कि सच्चा नेतृत्व केवल विचार देने में नहीं, बल्कि स्वयं उदाहरण प्रस्तुत करने में निहित होता है। उनकी विनम्रता और गहन दृष्टि ने हजारों स्वयंसेवकों को राष्ट्रसेवा के मार्ग पर अग्रसर किया। वे नए कार्यकर्ताओं को केवल प्रशिक्षित नहीं करते, बल्कि उन्हें समाज परिवर्तन के उद्देश्य से भावनात्मक रूप से जोड़ते हैं।

संघ के विभिन्न विस्तारों — शिक्षा, संस्कृति, ग्राम विकास, स्वदेशी आंदोलन, और सामाजिक सेवा — में श्री सोनी जी का योगदान अमूल्य रहा है। उन्होंने देश के कोने-कोने में जाकर समाज के हर वर्ग में एकता, संगठन और आत्मविश्वास की भावना जगाई। उनके नेतृत्व में संघ केवल एक संगठन नहीं रहा, बल्कि समाज सुधार और राष्ट्रजागरण का प्रबल माध्यम बना।

आज जब भारत **"वसुधैव कुटुम्बकम्"** के आदर्श के साथ विश्व मंच पर अपनी पहचान पुनः स्थापित कर रहा है, तब श्री सोनी जी का विचार दर्शन हमें यह सिखाता है कि व्यक्ति का जीवन तभी सार्थक है जब वह राष्ट्र के हित में समर्पित हो। उनकी विचारधारा गंगा की निर्मलता और हिमालय की दृढ़ता का संगम है — जो निरंतर प्रवाहित होकर आने वाली पीढ़ियों को दिशा देती है।

श्री सुरेश सोनी जी का व्यक्तित्व उस दीपक के समान है जो स्वयं जलकर दूसरों के मार्ग को आलोकित करता है। उनका जीवन हमें यह सिखाता है कि राष्ट्रनिर्माण केवल नारे या विचारों से नहीं, बल्कि सतत कर्म, धैर्य और समर्पण से संभव है। उन्होंने दिखाया कि सच्चा नेतृत्व वही है जो बिना दिखावे के, मौन रहते हुए भी समाज के हृदय में परिवर्तन की लहरें उत्पन्न कर दे। उनकी प्रेरणा से हर स्वयंसेवक और नागरिक यह समझता है कि यदि हम सब मिलकर राष्ट्रहित को अपनी प्राथमिकता बना लें, तो भारत न केवल आत्मनिर्भर बनेगा, बल्कि पूरी मानवता के लिए प्रकाशस्तंभ सिद्ध होगा।



दीपक विस्पुते जी: राष्ट्र निर्माण के विचारशील पथिक

श्री दीपक विस्पुते जी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय सह बौद्धिक प्रमुख, एक ऐसे प्रेरक व्यक्तित्व हैं जिन्होंने अपने चिंतन, लेखन और संगठनात्मक कार्यशैली से राष्ट्रवाद की भावना को समाज के हर वर्ग तक पहुँचाया है। उनका जीवन सादगी, समर्पण और सेवा का प्रतीक है।
वे मानते हैं कि राष्ट्र निर्माण केवल नीतियों से नहीं, बल्कि विचारों और व्यवहार से होता है। **"विचार से व्यवहार तक"** की उनकी कार्यशैली समाज को अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक करती है। भारतीय संस्कृति, स्वदेशी चेतना, सामाजिक समरसता और आत्मनिर्भरता जैसे विषयों को वे सरल भाषा में प्रस्तुत कर युवाओं को प्रेरित करते हैं।

उनका नेतृत्व मंच से नहीं, समाज के बीच रहकर होता है—जहाँ वे लोगों के सुख-दुःख को समझते हैं और समाधान का मार्ग दिखाते हैं। आत्मनिर्भर भारत की दिशा में उनके विचार और कर्म एक प्रकाश स्तंभ की तरह हैं, जो आने वाली पीढ़ियों को दिशा देते हैं।

दीपक विस्पुते जी का मानना है कि विचारों की शक्ति से समाज में क्रांति लाई जा सकती है। वे केवल भाषणों तक सीमित नहीं रहते, बल्कि अपने जीवन में उन विचारों को जीते हैं। उनके व्याख्यानों में गहराई होती है, जो श्रोताओं को आत्ममंथन के लिए प्रेरित करते हैं। वे युवाओं को केवल प्रेरित नहीं करते, बल्कि उन्हें राष्ट्र निर्माण की दिशा में सक्रिय भागीदारी के लिए तैयार करते हैं।

दीपक जी सामाजिक समरसता को राष्ट्र की एकता का मूल मानते हैं। वे जाति, वर्ग, भाषा या क्षेत्रीय भेदभाव से ऊपर उठकर समाज को एक सूत्र में बाँधने का कार्य करते हैं। उनके प्रयासों से विभिन्न समुदायों के बीच संवाद और सहयोग की भावना विकसित हुई है, जो भारत की विविधता में एकता को सशक्त बनाती है।

वर्तमान समय में जब भारत आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर है, दीपक विस्पुते जी का योगदान और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। वे स्वदेशी उत्पादों के उपयोग, स्थानीय संसाधनों के विकास और ग्रामीण भारत के सशक्तिकरण पर विशेष बल देते हैं। उनका मानना है कि आत्मनिर्भरता केवल आर्थिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और वैचारिक भी होनी चाहिए।



स्वप्निल कुलकर्णी जी – राष्ट्रसेवा और समर्पण की अद्भुत मिसाल

स्वप्निल कुलकर्णी जी का जीवन राष्ट्रभक्ति, अनुशासन और समाजसेवा का प्रेरणास्रोत है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की गौरवशाली परंपरा से प्रेरित होकर उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र के उत्थान और समाज की एकता के लिए समर्पित किया। उनका मानना है कि सच्ची सेवा वही है, जो व्यक्ति को अपने स्वार्थ से ऊपर उठाकर राष्ट्र के प्रति कर्तव्यनिष्ठ बनाती है।
कुलकर्णी जी ने संघ के कार्यों के माध्यम से शिक्षा, संस्कृति, सेवा, स्वदेशी और आत्मनिर्भरता के क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान दिया। उन्होंने समाज के हर वर्ग को जोड़ते हुए एकता और संगठन की भावना को मजबूत किया। उनके प्रयासों से युवाओं में राष्ट्रप्रेम, कर्तव्यनिष्ठा और आत्मविश्वास की भावना विकसित हुई।

उनका जीवन इस बात का सजीव उदाहरण है कि जब व्यक्ति अपने कर्म से राष्ट्रहित को सर्वोपरि मानता है, तब समाज में वास्तविक परिवर्तन संभव होता है। वे निरंतर इस दिशा में कार्यरत रहे कि भारत आत्मनिर्भर बने और विश्व में "**वसुधैव कुटुम्बकम्**" के आदर्श को साकार करे।
आज भी स्वप्निल कुलकर्णी जी का समर्पण और दृष्टिकोण नई पीढ़ी को प्रेरित करता है। उनका जीवन संदेश देता है कि राष्ट्रसेवा कोई दायित्व नहीं, बल्कि जीवन का श्रेष्ठतम उद्देश्य है। उनके योगदान से संगठन, स्वदेशी भावना और समाज में एकता की शक्ति और भी प्रखर हुई है, जो आने वाले भारत के स्वर्णिम भविष्य की नींव रखती है।

स्वप्निल कुलकर्णी जी का जीवन यह सिखाता है कि सच्ची सफलता केवल व्यक्तिगत उपलब्धियों में नहीं, बल्कि राष्ट्र और समाज के उत्थान में निहित है। उन्होंने अपने कर्म, निष्ठा और आदर्शों से यह प्रमाणित किया कि जब हर नागरिक अपने कर्तव्यों को राष्ट्रहित से जोड़ता है, तब एक सशक्त, आत्मनिर्भर और संस्कारित भारत का निर्माण संभव होता है। उनका जीवन दर्शन आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का दीपक है, जो हमें यह संदेश देता है कि "**राष्ट्रसेवा ही जीवन की सर्वोच्च साधना है।**"



श्री अनुराग जैन (IAS): सुशासन और संवेदनशील नेतृत्व के प्रतीक

मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन मध्यप्रदेश प्रशासनिक सेवा के उन वरिष्ठ अधिकारियों में से हैं जिन्होंने अपनी सादगी, कार्यकुशलता और दूरदर्शी सोच से शासन को नई दिशा दी है। उनकी प्रशासनिक यात्रा पारदर्शिता, जवाबदेही और जनसेवा के मूल्यों पर आधारित रही है। वे मानते हैं कि शासन केवल आदेश देने का माध्यम नहीं, बल्कि जनता की आकांक्षाओं को पूरा करने का संकल्प है। इसी सोच के साथ उन्होंने प्रदेश को विकास के नए पथ पर अग्रसर करने में निर्णायक भूमिका निभाई है।
श्री जैन जी ने शासन के विभिन्न विभागों में समन्वय और सहभागिता की संस्कृति को बढ़ावा दिया, जिससे निर्णय प्रक्रिया अधिक तेज़ और परिणाममूलक बनी। उन्होंने अधिकारियों और कर्मचारियों के बीच संवाद को सशक्त किया, जिससे योजनाओं का क्रियान्वयन जमीनी स्तर पर प्रभावी रूप से हो सका। उनकी पहल से प्रशासनिक तंत्र अधिक संवेदनशील और नागरिक-केंद्रित बना है, जो सुशासन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

ग्रामीण और शहरी विकास, डिजिटल प्रशासन और सामाजिक सुधारों में दीर्घकालिक दृष्टिकोण अपनाया।
शासन को केवल आदेश का तंत्र नहीं, बल्कि जनसेवा का माध्यम मानते हुए नागरिकों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने पर बल दिया।
उनकी कार्यशैली आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत और मार्गदर्शक के रूप में स्थापित है।

उनके नेतृत्व में मध्यप्रदेश ने आर्थिक, सामाजिक और तकनीकी सुधारों के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। ग्रामीण विकास, शहरी आधुनिकीकरण, डिजिटल प्रशासन और जनकल्याणकारी योजनाओं में उनकी दीर्घकालिक दृष्टि और सटीक रणनीतियाँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। श्री जैन जी ने यह सिद्ध किया है कि ईमानदारी, पारदर्शिता और जनहित को प्राथमिकता देने वाला प्रशासन ही जनता के जीवन में वास्तविक परिवर्तन ला सकता है।



IAS मनु श्रीवास्तव: नवीकरणीय ऊर्जा और जनसेवा के प्रेरक शिल्पकार

IAS मनु श्रीवास्तव, मध्यप्रदेश शासन में अतिरिक्त मुख्य सचिव के रूप में नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा विभाग का नेतृत्व करते हुए प्रदेश को विकास की नई दिशा दे रहे हैं। उनका प्रशासनिक दृष्टिकोण यह सिद्ध करता है कि शासन केवल नियमों का अनुपालन नहीं, बल्कि जनसेवा का सशक्त माध्यम है। ऊर्जा, उद्योग, नगरीय विकास जैसे विविध विभागों में कार्य करते हुए उन्होंने हमेशा योजनाओं को ज़मीन पर उतारने और आम नागरिक तक लाभ पहुँचाने को प्राथमिकता दी है।
विशेष रूप से नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में उनका योगदान उल्लेखनीय रहा है। मध्यप्रदेश आज सौर और पवन ऊर्जा उत्पादन में अग्रणी राज्यों में गिना जाता है, और इसका श्रेय मनु श्रीवास्तव जी की दूरदृष्टि और ठोस नीतियों को जाता है। उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि स्वच्छ ऊर्जा केवल औद्योगिक क्षेत्रों तक सीमित न रहे, बल्कि गाँव-गाँव तक पहुँचे और हर घर में उजाला लाए। उनकी सोच ने ऊर्जा को जन-आंदोलन में बदलने की दिशा दी है।

मनु श्रीवास्तव जी की कार्यशैली में त्वरित निर्णय क्षमता और जनभावनाओं के प्रति गहरी संवेदनशीलता का अनूठा संगम देखने को मिलता है। वे समस्याओं को केवल प्रशासनिक दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि सामाजिक और मानवीय दृष्टि से भी समझते हैं। यही कारण है कि उनके नेतृत्व में लागू योजनाएँ दीर्घकालिक और टिकाऊ परिणाम देती हैं। उनका मानना है कि विकास तभी सार्थक है जब उसका लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे।
उनका प्रशासनिक जीवन ईमानदारी, पारदर्शिता और सेवा भावना का उत्कृष्ट उदाहरण है। वे केवल एक अधिकारी नहीं, बल्कि जन-अपेक्षाओं के सजग प्रहरी हैं, जो जनता के बीच जाकर उनकी समस्याओं को सुनते हैं और समाधान के लिए तत्पर रहते हैं। उनकी सोच और संकल्प ने मध्यप्रदेश को नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में अग्रणी बनाया है और शासन को जनसेवा के नए मानकों तक पहुँचाया है। ऐसे प्रशासक आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा-पथ हैं और प्रदेश की जनता के लिए विश्वास और उम्मीद का प्रतीक।



नीरज मण्डलोई: प्रशासनिक दूरदृष्टि और जनसेवा का सशक्त समन्वय

मध्यप्रदेश शासन के अतिरिक्त मुख्य सचिव श्री नीरज मण्डलोई एक ऐसे वरिष्ठ अधिकारी हैं जिन्होंने प्रशासनिक दक्षता को मानवीय संवेदनशीलता से जोड़कर शासन को जन-केन्द्रित और प्रभावशाली बनाया है। उनकी तेज़ निर्णय क्षमता और गहन चिंतनशील दृष्टिकोण ने उन्हें मुख्यमंत्री कार्यालय में एक निर्णायक भूमिका में स्थापित किया है। वे मानते हैं कि नीति निर्माण का उद्देश्य तभी पूर्ण होता है जब उसका लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे, और इसी सोच के साथ वे शासन को ज़मीनी स्तर पर सार्थक बनाने में जुटे हैं।

श्री मण्डलोई जी की कार्यशैली में तथ्यों का सूक्ष्म विश्लेषण और समयबद्ध निर्णय का अद्भुत संतुलन देखने को मिलता है। वे किसी भी विषय पर गहराई से विचार करते हैं और फिर त्वरित निर्णय लेकर योजनाओं को गति देते हैं। उनके निर्णय केवल प्रशासनिक बदलाव नहीं लाते, बल्कि आम नागरिकों के जीवन में वास्तविक सुधार का कारण बनते हैं। यही कारण है कि वे शासन के हर मोर्चे पर विकास की दिशा और गति दोनों तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

उनका व्यक्तित्व प्रशासनिक सीमाओं से परे जाकर समाज के प्रति संवेदनशीलता और सहयोग की भावना को दर्शाता है। वे जनता की समस्याओं को नज़दीक से समझते हैं और समाधान के लिए तत्पर रहते हैं। श्री मण्डलोई का नेतृत्व यह सिद्ध करता है कि जब प्रशासन में दृढ़ इच्छाशक्ति, लोकहित की भावना और व्यवहारिक दृष्टिकोण हो, तब शासन एक परिवर्तनकारी शक्ति बन सकता है। उनकी सोच और समर्पण मध्यप्रदेश को विकास की नई ऊँचाइयों तक ले जाने में निरंतर सहायक सिद्ध हो रहे हैं।

श्री नीरज मण्डलोई का प्रशासनिक योगदान यह दर्शाता है कि जब नेतृत्व में संवेदनशीलता, गहराई और निष्पक्षता हो, तो शासन केवल व्यवस्था नहीं, बल्कि जनकल्याण का माध्यम बन जाता है। उन्होंने अपने अनुभव और दृष्टिकोण से मध्यप्रदेश शासन को अधिक उत्तरदायी, पारदर्शी और जनहितकारी बनाया है। उनकी उपस्थिति प्रशासनिक सेवा में एक प्रेरणा है, जो आने वाली पीढ़ियों को सेवा, समर्पण और सकारात्मक परिवर्तन की दिशा में आगे बढ़ने का मार्ग दिखाती है।



विवेक पोरवाल: नवाचार और प्रशासनिक उत्कृष्टता के प्रतीक

IAS विवेक पोरवाल, मध्यप्रदेश शासन के राजस्व विभाग के प्रमुख सचिव, एक ऐसे दूरदर्शी अधिकारी हैं जिन्होंने प्रशासनिक कार्यशैली को नवाचार और तकनीकी दक्षता से जोड़कर एक नई दिशा दी है। वे मानते हैं कि शासन की प्रभावशीलता तभी बढ़ती है जब तकनीक को जनसेवा से जोड़ा जाए। इसी सोच के साथ उन्होंने राजस्व विभाग की पारंपरिक कार्यप्रणाली को आधुनिक आईटी समाधानों से सशक्त किया, जिससे शासन अधिक पारदर्शी, सुलभ और जनोन्मुखी बन पाया।
उनके नेतृत्व में विभाग में डिजिटलीकरण, डेटा इंटीग्रेशन और ई-गवर्नेंस को लेकर कई उल्लेखनीय पहलें की गईं, जिनका सीधा लाभ प्रदेश के नागरिकों को मिला है। श्री पोरवाल हर योजना को केवल एक सरकारी दस्तावेज नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का माध्यम मानते हैं। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में सेवाओं की गति और गुणवत्ता को सुधारने के लिए उन्होंने तकनीक आधारित समाधान अपनाए, जिससे जनता का शासन में विश्वास और सहभागिता बढ़ी है।

श्री विवेक पोरवाल की कार्यशैली में टीमवर्क, संवाद और नवाचार को विशेष महत्व दिया जाता है। वे प्रशासन को केवल दायित्व नहीं, बल्कि समाज के उत्थान का मिशन मानते हैं। उनकी सोच है कि शासन तभी सफल होता है जब उसका हर निर्णय आमजन के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाए। **Saumya Science and Research Foundation** उन्हें उनके नवाचारी दृष्टिकोण और जनसेवा के प्रति समर्पण के लिए हार्दिक अभिनंदन प्रेषित करता है।

श्री विवेक पोरवाल का प्रशासनिक दृष्टिकोण यह दर्शाता है कि जब नवाचार, तकनीक और जनसेवा एक साथ जुड़ते हैं, तो शासन केवल व्यवस्था नहीं, बल्कि परिवर्तन का माध्यम बन जाता है। उनके प्रयासों ने यह सिद्ध किया है कि एक दूरदर्शी अधिकारी अपने विचारों और कर्मों से प्रदेश के विकास की नई इबारत लिख सकता है। ऐसे नेतृत्वकर्ता ही भविष्य के समृद्ध और सशक्त भारत की नींव रखते हैं।



IAS पी. नरहरि: स्वच्छ प्रशासन और जनसेवा की मिसाल

पी. नरहरि जी का प्रशासनिक दृष्टिकोण केवल योजनाओं के क्रियान्वयन तक सीमित नहीं है, बल्कि वे समाज के हर वर्ग को सशक्त बनाने की दिशा में कार्य करते हैं। उन्होंने जल प्रबंधन को जनजागरण से जोड़ा है, जिससे लोगों में जल संरक्षण की भावना विकसित हुई है। उनके नेतृत्व में जल स्रोतों की वैज्ञानिक जाँच, गुणवत्ता नियंत्रण और आधुनिक प्रयोगशालाओं की स्थापना जैसे कदमों ने प्रदेश में जल सुरक्षा को नई मजबूती दी है। वे मानते हैं कि जब नागरिक स्वयं जागरूक होंगे, तभी योजनाओं का वास्तविक लाभ संभव होगा। यही कारण है कि उनकी कार्यशैली में सहभागिता, संवाद और संवेदनशीलता का विशेष स्थान है, जो उन्हें एक जनप्रिय और प्रेरणादायक प्रशासक बनाता है।

आईएएस पी. नरहरि, मध्यप्रदेश शासन के सार्वजनिक स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के प्रमुख सचिव, एक ऐसे प्रशासक हैं जिन्होंने प्रशासन को जनसेवा का सशक्त माध्यम बनाया है। उनकी कार्यशैली पारदर्शिता, नवाचार और जनहित को केंद्र में रखती है। “हर घर जल” मिशन, ग्रामीण पेयजल योजनाएं और जल गुणवत्ता निगरानी जैसे अभियानों को उन्होंने गति दी, जिससे राज्य के अनेक गाँवों में स्वच्छ पेयजल की सुविधा पहुँची। वे तकनीक के माध्यम से योजनाओं के क्रियान्वयन को प्रभावी बनाते हैं और फील्ड विज़िट व जनसुनवाई के जरिए जनता से सीधे संवाद करते हैं। उनकी सोच है कि प्रशासन तभी सार्थक है जब वह आम नागरिक के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाए। पी. नरहरि जी की ईमानदारी, संवेदनशीलता और दूरदृष्टि ने उन्हें मध्यप्रदेश के सबसे विश्वसनीय और प्रेरणादायक अधिकारियों में शामिल कर दिया है। **Saumya Science and Research Foundation** उन्हें एक ऐसे नेतृत्वकर्ता के रूप में देखती है जो स्वच्छ शासन और जनकल्याण के माध्यम से समाज को नई दिशा दे रहे हैं।

पी. नरहरि जी का कार्य केवल प्रशासन नहीं, बल्कि जनसेवा की मिसाल है। उनकी सोच, ईमानदारी और नवाचार ने मध्यप्रदेश में विकास की नई दिशा तय की है। ऐसे अधिकारी ही सच्चे राष्ट्रनिर्माता होते हैं।



श्री संदीप यादव: स्वास्थ्य प्रशासन में नवाचार और संवेदनशीलता का नेतृत्व

श्री संदीप यादव, भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS) के वरिष्ठ अधिकारी, वर्तमान में मध्यप्रदेश शासन में प्रमुख सचिव, लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग के पद पर कार्यरत हैं। उन्होंने स्वास्थ्य व्यवस्था में पारदर्शिता, तकनीकी नवाचार और मानवीय संवेदनशीलता का ऐसा समन्वय प्रस्तुत किया है, जो राज्य के स्वास्थ्य प्रशासन के लिए एक आदर्श बन गया है।

डिजिटल स्वास्थ्य प्रणाली की दिशा में अग्रसर

श्री यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश ने टेलीमेडिसिन, **ई-हॉस्पिटल प्रबंधन प्रणाली**, और **डिजिटल स्वास्थ्य रिकॉर्डिंग** जैसी आधुनिक तकनीकों को अपनाया। इन पहलों के परिणामस्वरूप ग्रामीण और दूरस्थ इलाकों में भी गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएँ सुलभ हो सकी हैं। इससे न केवल मरीजों की देखभाल में पारदर्शिता आई है, बल्कि सेवा वितरण में दक्षता भी बढ़ी है।

गुणवत्तापूर्ण दवा वितरण और नियंत्रण

उन्होंने दवा गुणवत्ता नियंत्रण, रैशनल ड्रग यूज़, और सस्ती व सुरक्षित दवाओं की उपलब्धता पर विशेष ध्यान केंद्रित किया। उनके प्रयासों से राज्य में दवा आपूर्ति प्रणाली अधिक प्रभावी, पारदर्शी और जवाबदेह बनी है।

राष्ट्रीय स्तर पर मध्यप्रदेश की पहचान

श्री यादव ने मध्यप्रदेश की स्वास्थ्य नीतियों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। वे WHO, नीति आयोग, और केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के साथ सक्रिय समन्वय में कार्य करते हुए राज्य की प्राथमिकताओं को वैश्विक स्वास्थ्य लक्ष्यों से जोड़ रहे हैं।

उनकी सक्रिय भागीदारी से मध्यप्रदेश को कई केंद्रीय योजनाओं में अग्रणी स्थान प्राप्त हुआ है, जिससे राज्य स्वास्थ्य प्रशासन के क्षेत्र में एक “मॉडल स्टेट” के रूप में उभर रहा है।

विज्ञान, सेवा और जनहित का संगम

श्री संदीप यादव का प्रशासनिक दृष्टिकोण जनहित-केंद्रित है, जहाँ विज्ञान और सेवा का मेल एक स्वस्थ समाज की नींव रखता है। उन्होंने यह सिद्ध किया है कि तकनीक केवल सुविधा नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय और समानता का माध्यम भी बन सकती है।



मानवता, नेतृत्व और समर्पण का प्रतीक – "श्री सुदाम खाड़े"

मध्यप्रदेश प्रशासनिक सेवा में कुछ अधिकारी ऐसे होते हैं जो अपने कार्य, विचार और संवेदनशील नेतृत्व से शासन-प्रशासन को नई दिशा देते हैं। श्री सुदामा खाड़े, इंदौर संभाग के आयुक्त, ऐसे ही प्रेरणादायी व्यक्तित्व हैं जिनकी पहचान है — कुशल प्रशासन, मानवीय संवेदना और अटूट जनसेवा।

उनका व्यक्तित्व प्रशासनिक दृढ़ता और संवेदनशीलता का अद्भुत संगम है। वे शासन को केवल नियमों तक सीमित नहीं रखते, बल्कि जनता की सुविधा और कल्याण को केंद्र में रखकर निर्णय लेते हैं। उनका मानना है कि "जनसेवा ही प्रशासन का सर्वोच्च उद्देश्य है।" इसी दृष्टिकोण ने इंदौर संभाग में विकास की नई लहर उत्पन्न की है। चाहे वह स्वच्छता अभियान हो, शिक्षा या स्वास्थ्य सुधार योजनाएँ — हर क्षेत्र में उनके नेतृत्व में उल्लेखनीय प्रगति दर्ज की गई है।

श्री खाड़े की कार्यशैली अनुशासन और आत्मीयता का अनोखा मिश्रण है। वे हर कर्मचारी या नागरिक से सुलभता और सम्मान के साथ संवाद करते हैं। उनका यह व्यवहार एक सकारात्मक कार्यसंस्कृति का निर्माण करता है जहाँ प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को टीम का महत्वपूर्ण हिस्सा महसूस करता है।

उनका निर्णय लेने का दृष्टिकोण गहराई और दूरदर्शिता से भरा है। वे केवल तत्कालिक समाधान पर नहीं, बल्कि दीर्घकालिक प्रभाव पर ध्यान देते हैं। प्रशासनिक निर्णयों में पारदर्शिता और नैतिकता को वे सर्वोच्च प्राथमिकता देते हैं, जिससे जनविश्वास बढ़ा है।

जन-संपर्क और प्रेरक नेतृत्व उनकी सबसे बड़ी विशेषता है। वे हमेशा यह संदेश देते हैं कि "प्रशासन जनता के लिए है, न कि जनता प्रशासन के लिए।" ग्रामीण क्षेत्रों से लेकर शहरी गलियारों तक, उनका जुड़ाव प्रत्येक नागरिक के साथ सच्ची संवेदना का प्रतीक है।

उनकी ऊर्जा, नैतिकता और समर्पण उन्हें एक आदर्श प्रशासक बनाते हैं। आपात स्थितियों में वे स्वयं अग्रिम पंक्ति में रहकर जिम्मेदारी निभाते हैं, जबकि सामान्य परिस्थितियों में भी वे जनता की समस्याओं को व्यक्तिगत रूप से सुनते और हल करते हैं। उनकी सोच केवल कार्य-सिद्धि तक सीमित नहीं, बल्कि समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने तक विस्तृत है।

इस संतुलित नेतृत्व और प्रेरणात्मक कार्यशैली ने श्री खाड़े को मध्यप्रदेश के सबसे सम्मानित प्रशासनिक अधिकारियों में स्थान दिलाया है। वे न केवल एक सक्षम आयुक्त हैं, बल्कि एक आदर्श जन-सेवक भी हैं जो प्रशासन को जनभावना से जोड़ते हैं।

"सौम्या साइंस एंड रिसर्च फाउंडेशन" ऐसे कर्मयोगी अधिकारी को नमन करता है जिनके कार्यों में समर्पण है, जिनकी सोच में विकास है, और जिनके हृदय में जनता के लिए करुणा है।



IAS श्री अनुराग चौधरी – तेज़ तर्रार प्रशासनिक सोच और निर्णायक नेतृत्व का प्रतीक

मध्यप्रदेश जैसे विशाल और विविधता से भरे प्रदेश को तेज़ गति से विकास की ओर ले जाने के लिए जिस प्रकार के प्रशासनिक नेतृत्व की आवश्यकता होती है, श्री अनुराग चौधरी जैसे अधिकारी उसका जीवंत उदाहरण हैं। अपनी असाधारण निर्णय लेने की क्षमता, तेज़ और दूरदर्शी सोच तथा प्रशासनिक कुशलता के बल पर उन्होंने यह सिद्ध किया है कि यदि संकल्प स्पष्ट हो और निष्ठा अटूट, तो शासन व्यवस्था केवल नियमों का ढांचा नहीं रहती, बल्कि जनता के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन का सशक्त माध्यम बन जाती है।

निर्णायक और दूरदर्शी नेतृत्व

श्री अनुराग चौधरी का कार्यशैली का सबसे बड़ा गुण है उनकी "तुरंत निर्णय लेने की क्षमता"। प्रशासनिक सेवा में निर्णयहीनता विकास की गति को धीमा कर देती है, लेकिन श्री चौधरी प्रत्येक विषय पर त्वरित और सटीक निर्णय लेकर न केवल विभागों को गति प्रदान करते हैं बल्कि समाज को यह संदेश भी देते हैं कि शासन जनता के जीवन में ठोस परिवर्तन लाने के लिए प्रतिबद्ध है। उनका मानना है कि शासन व्यवस्था में विलंब का कोई स्थान नहीं होना चाहिए — प्रत्येक निर्णय जनता के हित और विकास की दिशा में समय पर और पारदर्शी होना चाहिए।

विकास की नई दिशा देने वाला प्रशासन

श्री अनुराग चौधरी का प्रशासनिक योगदान केवल विभागों तक सीमित नहीं है। उन्होंने हर स्तर पर शासन को गति, पारदर्शिता और संवेदनशीलता से जोड़ा है। उनकी अगुवाई में विभागों ने नई ऊर्जा के साथ कार्य करना शुरू किया है और जनता के विश्वास को मजबूत किया है। उनका मानना है कि शासन का हर कदम जनता के जीवन को आसान बनाने, अवसरों को बढ़ाने और प्रदेश को नई ऊँचाइयों पर पहुँचाने के लिए होना चाहिए।

प्रदेश और राष्ट्र के निर्माण में अतुलनीय योगदान

श्री अनुराग चौधरी जैसे अधिकारी केवल शासन की जिम्मेदारी नहीं निभाते, बल्कि वे एक विकसित, सशक्त और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण की दिशा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उनकी कार्यशैली यह सिद्ध करती है कि यदि प्रशासन में दृष्टिकोण स्पष्ट हो, तो वह समाज के हर वर्ग के जीवन में गहरा परिवर्तन ला सकता है।

इस प्रकार, श्री अनुराग चौधरी केवल एक सफल IAS अधिकारी नहीं हैं, बल्कि वे एक प्रेरणादायक व्यक्तित्व हैं जिनकी सोच और कार्यशैली मध्यप्रदेश ही नहीं बल्कि पूरे देश के लिए एक आदर्श प्रस्तुत करती है। उनका तेज़तर्रार नेतृत्व और विकासोन्मुख दृष्टिकोण आने वाले समय में प्रदेश को नई ऊँचाइयों तक ले जाएगा।



श्री दीपक सक्सेना (IAS): जनसंपर्क और जनसेवा के संवेदनशील सूत्रधार

श्री दीपक सक्सेना, मध्यप्रदेश शासन के जनसंपर्क विभाग में कार्यरत एक कुशल, ईमानदार और दूरदर्शी IAS अधिकारी हैं, जिनका प्रशासनिक अनुभव और मानवीय दृष्टिकोण उन्हें एक विशिष्ट पहचान प्रदान करता है। उन्होंने अपने कार्यकाल में शासन की नीतियों को जन-जन तक पहुँचाने में न केवल महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, बल्कि उन्हें जनभागीदारी के माध्यम से और अधिक प्रभावशाली बनाने का कार्य भी किया है।
उनकी कार्यशैली का मूल आधार पारदर्शिता, उत्तरदायित्व और नवाचार है। वे मानते हैं कि शासन केवल आदेश और योजनाओं तक सीमित नहीं, बल्कि जनता के जीवन में वास्तविक परिवर्तन लाने का माध्यम है। इसी विचारधारा के तहत उन्होंने विभागीय कार्यों में तकनीकी नवाचारों को बढ़ावा दिया, सूचना के प्रभावी प्रसार हेतु आधुनिक संचार माध्यमों का प्रयोग किया और आम नागरिकों तक शासन की योजनाओं की सटीक जानकारी पहुँचाने का नया मानक स्थापित किया।

जनसंपर्क विभाग में उनके नेतृत्व ने शासन और जनता के बीच संवाद को एक नई दिशा दी है। उन्होंने सरकारी योजनाओं और नीतियों को डिजिटल माध्यमों और सामाजिक संचार के आधुनिक उपकरणों के जरिए घर-घर तक पहुँचाया। उनकी सोच यह रही है कि जनसंपर्क केवल सूचना का आदान-प्रदान नहीं, बल्कि दो-तरफा सहभागिता का सेतु होना चाहिए। इसी दृष्टिकोण से उन्होंने विभाग को 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुरूप ढालते हुए जनता की आवाज़ को शासन तक पहुँचाने का सशक्त माध्यम बनाया।

श्री सक्सेना का योगदान समाज के वंचित, ग्रामीण और युवा वर्ग के उत्थान में भी उल्लेखनीय रहा है। शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सशक्तिकरण और स्वच्छता जैसे क्षेत्रों में उनकी पहलें जनहित को केंद्र में रखती हैं। उनका सरल, सौम्य और मिलनसार स्वभाव उन्हें आम नागरिकों और सहकर्मियों के बीच प्रिय बनाता है। उन्होंने यह सिद्ध किया है कि एक अच्छा प्रशासक वही होता है जो जनहित को सर्वोच्च प्राथमिकता दे और शासन को जनता के विश्वास का प्रतीक बनाए। उनके नेतृत्व में जनसंपर्क विभाग केवल सूचना का स्रोत नहीं, बल्कि विकास और विश्वास का सेतु बन चुका है।



श्री शैलेन्द्र सिंह (आई.ए.एस.) — एक दूरदर्शी प्रशासक और विकास के साधक

मध्यप्रदेश प्रशासनिक सेवा में अपनी अद्भुत कार्यशैली, दूरदर्शिता और लोकहित के प्रति समर्पण के लिए प्रसिद्ध श्री शैलेन्द्र सिंह (IAS)आज उन अधिकारियों में गिने जाते हैं जिन्होंने अपने प्रत्येक कार्यस्थल को "उत्कृष्टता का केंद्र" बना दिया। चाहे वह छिंदवाड़ा, छतरपुर या होशंगाबाद जिला रहा हो — हर स्थान पर उन्होंने जनता की भागीदारी से विकास का ऐसा वातावरण निर्मित किया, जिसने शासन और समाज के बीच सेतु का कार्य किया।

श्री सिंह सदैव यह मानते हैं कि "प्रशासन का उद्देश्य केवल योजनाओं का क्रियान्वयन नहीं, बल्कि नागरिकों के जीवन में ठोस परिवर्तन लाना है।" इस सिद्धांत को ध्यान में रखते हुए उन्होंने अपने कार्यकाल के दौरान शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, जल-संरक्षण, स्वच्छता, और नवाचार के अनेक मॉडल विकसित किए। उनके नेतृत्व में जिलों में विज्ञान और तकनीक आधारित विकास की नई परंपराएं आरंभ हुईं — विद्यालयों में 'साइंस मॉडल लैब' और 'इनोवेशन क्लब' जैसे प्रयासों ने ग्रामीण बच्चों में वैज्ञानिक सोच को प्रोत्साहित किया।

ज्ञान और विज्ञान का संगम

श्री सिंह की प्रशासनिक शैली में ज्ञान और विज्ञान का अद्भुत संतुलन देखने को मिलता है। वे सदैव युवाओं और विद्यार्थियों को नई तकनीक, अनुसंधान, और नवाचार की दिशा में प्रेरित करते रहे हैं। उनका मानना है कि "यदि कोई जिला शिक्षित और वैज्ञानिक दृष्टि से सक्षम है, तो वही सच्चे अर्थों में समृद्ध बन सकता है।" इसी सोच के चलते उन्होंने अपने कार्यक्षेत्रों में डिजिटल प्रशासन, ई-गवर्नेंस, और स्मार्ट सेवा वितरण की अवधारणा को आगे बढ़ाया।

जनहित और विकास के प्रति समर्पण

श्री शैलेन्द्र सिंह की कार्यशैली में सबसे प्रमुख तत्व है— जनसुनवाई और संवेदनशीलता। वे न केवल प्रशासनिक निर्णयों में पारदर्शिता को महत्व देते हैं, बल्कि प्रत्येक नागरिक की बात को सुनने और समाधान देने में सदैव अग्रणी रहते हैं। उनकी नीतियों का केंद्र सदैव "जनता का कल्याण" रहा है। इसीलिए उनके कार्यकाल में कई जिलों ने सामाजिक-आर्थिक सूचकांकों में उल्लेखनीय सुधार दर्ज किए।

नगरीय विकास में योगदान

वर्तमान में वे मध्यप्रदेश शासन में नगरीय विकास एवं आवास विभाग में अतिरिक्त सचिव के रूप में कार्यरत हैं। इस पद पर रहते हुए भी उन्होंने शहरों के नियोजन, स्वच्छता, हरियाली, और आधुनिक शहरी ढांचे को बढ़ावा देने के लिए कई अभिनव योजनाओं की रूपरेखा तैयार की है। उनके नेतृत्व में "सस्टेनेबल अर्बन ग्रोथ" और "स्मार्ट सिटी विज़न" जैसे विचारों को जमीनी स्तर पर लागू करने के ठोस प्रयास हो रहे हैं।

एक प्रेरणा-स्रोत व्यक्तित्व

श्री शैलेन्द्र सिंह का जीवन-दर्शन यही सिखाता है कि जब प्रशासनिक दायित्वों को सेवा भावना के साथ निभाया जाए, तो परिवर्तन अवश्य संभव है। उनकी सादगी, दृढ़ निश्चय और कर्मनिष्ठा उन्हें एक विशिष्ट प्रशासक बनाती है। वे आने वाले युवा अधिकारियों और विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा-पुंज हैं — जो यह दिखाते हैं कि यदि नीयत सच्ची हो और दृष्टि व्यापक, तो किसी भी जिले को ज्ञान, विज्ञान और संस्कृति का केंद्र बनाया जा सकता है।



इंदौर के गौरव: महापौर पुष्यमित्र भार्गव – एक दूरदृष्टि, एक संकल्प, एक प्रेरणा

भारत की स्वच्छता राजधानी कहे जाने वाले इंदौर का नाम आज केवल सफाई के लिए ही नहीं, बल्कि सुव्यवस्थित विकास, नवाचार और जनसंपर्क की नई परिभाषा के लिए भी जाना जाता है। इस परिवर्तन के पीछे जिन कुछ दूरदर्शी व्यक्तित्वों का योगदान रहा है, उनमें महापौर श्री पुष्यमित्र भार्गव जी का नाम अग्रणी है।

एक जनसेवक, जो 'नेता' नहीं 'मार्गदर्शक' हैं

पुष्यमित्र भार्गव जी ने राजनीति को सेवा का माध्यम बनाया है, न कि प्रतिष्ठा का मंच। इंदौर की गलियों में जब वे जनता से संवाद करते हैं, तो उनके चेहरे पर विनम्रता और मन में स्पष्ट दृष्टि दिखाई देती है – शहर के हर नागरिक तक विकास की रौशनी पहुँचाने की। उनका विश्वास है कि "सच्चा विकास वही है जो हर व्यक्ति तक समान रूप से पहुँचे।"

इंदौर मॉडल: स्वच्छता से स्मार्ट सिटी तक

उनके नेतृत्व में इंदौर ने 'स्वच्छता' को केवल एक अभियान नहीं, बल्कि एक 'संस्कृति' में बदल दिया। कचरा प्रबंधन, पुनर्चक्रण, और नागरिक सहभागिता के मॉडल ने इंदौर को बार-बार देश का सबसे स्वच्छ शहर बनाया। महापौर जी का प्रयास रहा है कि यह सफलता केवल पुरस्कार तक सीमित न रहे, बल्कि समाज में पर्यावरणीय चेतना का स्थायी स्वरूप ले।

नवाचार और युवाओं की भागीदारी

पुष्यमित्र भार्गव जी का मानना है कि शहर का भविष्य युवाओं के हाथों में है। इसलिए उन्होंने 'युवा संवाद', 'इनोवेशन वीक', और 'स्टार्टअप प्रमोशन कार्यक्रम' जैसे अनेक मंचों के माध्यम से युवाओं को शासन-प्रक्रिया से जोड़ने का कार्य किया है। उनका यह दृष्टिकोण इंदौर को एक 'स्मार्ट सिटी' से आगे बढ़ाकर 'स्मार्ट नागरिकों का शहर' बना रहा है।

संवेदनशीलता और सरलता का संगम

महापौर जी का व्यक्तित्व संवेदनशीलता और सरलता का अद्भुत संगम है। वे किसी भी छोटे से नागरिक के सुझाव या समस्या को समान गंभीरता से सुनते हैं। कई बार उन्हें शहर के आम लोगों के बीच साइकिल चलाते, पौधारोपण करते या स्वच्छता कर्मियों को सम्मानित करते देखा गया है। यह उनके नेतृत्व का मानवीय पक्ष है, जो उन्हें 'जनप्रिय' बनाता है।

समापन: एक प्रेरणा स्रोत के रूप में

महापौर पुष्यमित्र भार्गव जी केवल एक प्रशासक नहीं, बल्कि एक प्रेरक व्यक्तित्व हैं – जो यह सिखाते हैं कि यदि निष्ठा, दृष्टि और सेवा भावना एक साथ हों तो कोई भी शहर देश का आदर्श बन सकता है।

सौम्या साइंस एंड रिसर्च फाउंडेशन (SSRF) उन्हें अपने समाज-सेवी कार्यों और नवाचारपरक नेतृत्व के लिए हार्दिक सम्मान अर्पित करता है और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।



श्री अनिल कोठारी जी: नवाचार के अग्रदूत और विज्ञान के जननायक

मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद (MPCST) के महानिदेशक श्री अनिल कोठारी जी ने विज्ञान को प्रयोगशालाओं की सीमाओं से निकालकर जन-जन तक पहुँचाने का ऐतिहासिक कार्य किया है। उनके नेतृत्व में MPCST ने विज्ञान को राष्ट्र निर्माण का सशक्त उपकरण बना दिया है।

विज्ञान को समाज से जोड़ने की पहल

श्री कोठारी जी का मानना है कि विज्ञान केवल शोध तक सीमित न रहे, बल्कि हर नागरिक के जीवन को बेहतर बनाने का माध्यम बने। इसी सोच के तहत उन्होंने अनुसंधान को जमीनी हकीकत से जोड़ने के लिए कई योजनाएं शुरू कीं, जिससे ग्रामीण अंचलों तक विज्ञान की पहुँच सुनिश्चित हुई।

पर्यावरण, ऊर्जा और तकनीक में नवाचार

उनके मार्गदर्शन में परिषद ने पर्यावरण संरक्षण, जैव विविधता, जलवायु परिवर्तन, नवीकरणीय ऊर्जा और औद्योगिक तकनीक जैसे क्षेत्रों में उल्लेखनीय योजनाएं लागू कीं। इन योजनाओं से प्रदेश के युवाओं, शोधकर्ताओं और उद्यमियों को नई दिशा मिली।

युवा पीढ़ी को प्रेरणा

श्री कोठारी जी ने नई पीढ़ी को अनुसंधान और नवाचार की ओर प्रेरित किया है। उनके प्रयासों से मध्यप्रदेश विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अग्रणी राज्यों में शामिल हो गया है।

विकसित भारत 2047 की ओर

जब भारत विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में अग्रसर है, तब श्री कोठारी जी जैसे दूरदर्शी नेतृत्वकर्ता का योगदान अमूल्य है। आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में वैज्ञानिक शक्ति को केंद्र में लाने और नवाचार से विकास की गति को तीव्र करने में उनकी भूमिका अविस्मरणीय रहेगी।



प्रोफेसर एस. के. जैन: बर्कतुल्लाह विश्वविद्यालय के नवयुग निर्माता

र्कतुल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल की पहचान आज एक आधुनिक, नवाचारी और राष्ट्रनिर्माण में सक्रिय संस्थान के रूप में उभर रही है। इस परिवर्तन का श्रेय जाता है कुलपति प्रोफेसर एस. के. जैन को, जिनकी दूरदृष्टि, नेतृत्व क्षमता और सुधारवादी सोच ने विश्वविद्यालय को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया है।

प्रो. जैन का दृष्टिकोण शिक्षा को केवल डिग्री प्राप्ति तक सीमित नहीं रखता, बल्कि उसे राष्ट्र निर्माण का आधार मानता है। इसी सोच के साथ उन्होंने विश्वविद्यालय को सामाजिक उत्तरदायित्वों से जोड़ते हुए युवाओं में राष्ट्रप्रेम, नवाचार और सामाजिक संवेदनशीलता की भावना को विकसित करने के लिए कई पहलें शुरू कीं। 'नवाचार और स्टार्टअप प्रोत्साहन केंद्र', 'रोजगार मार्गदर्शन प्रकोष्ठ', और 'पर्यावरण एवं सतत विकास अध्ययन केंद्र' जैसी योजनाएं छात्रों को समाज और राष्ट्र के विकास में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित करती हैं।

शैक्षणिक गुणवत्ता और अनुशासन
उनके नेतृत्व में विश्वविद्यालय में शैक्षणिक अनुशासन की पुनर्स्थापना हुई। छात्रों, शोधार्थियों और संकाय सदस्यों को एक प्रेरणादायक और सुसज्जित वातावरण मिला, जिससे शिक्षा की गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार हुआ।

एक नई पहचान की ओर
बर्कतुल्लाह विश्वविद्यालय अब केवल उच्च शिक्षा का केंद्र नहीं, बल्कि ज्ञान, अनुसंधान और सामाजिक परिवर्तन का संगम बन चुका है। प्रो. जैन के नेतृत्व में यह संस्थान मध्यप्रदेश ही नहीं, पूरे देश में उच्च शिक्षा के सर्वोच्च मानकों की ओर अग्रसर है।

प्रोफेसर एस. के. जैन ने अपने कार्यकाल में यह सिद्ध किया है कि जब नेतृत्व दूरदर्शी और समर्पित हो, तो संस्थान केवल बदलता नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र के विकास में अग्रणी भूमिका निभाता है। उनका योगदान शिक्षा के माध्यम से एक नए भारत के निर्माण की दिशा में प्रेरणास्रोत है।



IPS गौरव राजपूत : अपराधमुक्त समाज की दिशा में सशक्त नेतृत्व

मध्यप्रदेश पुलिस सेवा के गौरव, रीवा संभाग के पुलिस महानिरीक्षक (IG) श्री गौरव राजपूत (IPS) अपने प्रखर नेतृत्व, दूरदर्शी सोच और समाज के प्रति अटूट समर्पण के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने पुलिसिंग को केवल कानून-व्यवस्था तक सीमित न रखते हुए, इसे एक लोक-केंद्रित व्यवस्था के रूप में विकसित किया है, जहाँ सुरक्षा, न्याय और विश्वास एक साथ चलते हैं।

उनकी सबसे उल्लेखनीय पहल, "ज़ीरो क्राइम मिशन", रीवा संभाग में पुलिसिंग के स्वरूप को पूरी तरह बदलने वाली साबित हुई है। इस मिशन के माध्यम से उन्होंने अपराध की रोकथाम, त्वरित कार्रवाई, आधुनिक तकनीकी संसाधनों के उपयोग और सामुदायिक सहभागिता को एकीकृत किया। परिणामस्वरूप, अपराध दर में उल्लेखनीय कमी आई है, और आम नागरिकों के मन में पुलिस के प्रति भरोसे की भावना और भी मजबूत हुई है।

गौरव राजपूत केवल प्रशासनिक अधिकारी नहीं, बल्कि एक मैदान पर उतरने वाले नेता हैं। वे स्वयं घटनास्थलों पर पहुँचकर हालात का जायज़ा लेते हैं, स्थानीय नागरिकों से संवाद करते हैं और उनकी समस्याओं का तत्काल समाधान सुनिश्चित करते हैं। उनकी यही जमीनी जुड़ाव की नीति उन्हें जनता के बीच अत्यंत लोकप्रिय बनाती है और पुलिस को एक सहयोगी, विश्वसनीय और मानवीय संस्था के रूप में स्थापित करती है।

उनकी निर्णय लेने की तीव्र क्षमता, सजगता, और जन-संवेदनशील दृष्टिकोण रीवा संभाग की कानून-व्यवस्था को नई ऊँचाइयों पर ले गए हैं। वे मानते हैं कि "कानून केवल किताबों में नहीं, बल्कि सड़कों पर, समाज में और नागरिकों के व्यवहार में दिखना चाहिए।"

युवाओं में कानून के प्रति सम्मान, समाज में न्याय की भावना और अनुशासन की संस्कृति विकसित करने हेतु उन्होंने कई जन-जागरूकता और शैक्षिक कार्यक्रमों की शुरुआत की है। उनके प्रयासों से न केवल अपराध घटे हैं, बल्कि नागरिकों में सकारात्मक सामाजिक भागीदारी की भावना भी बढ़ी है।

IPS गौरव राजपूत का कार्यशैली यह सिद्ध करती है कि जब प्रशासनिक इच्छाशक्ति, मानवीय संवेदनशीलता और तकनीकी दक्षता एक साथ आती हैं, तो "अपराधमुक्त समाज" केवल एक सपना नहीं, बल्कि एक साकार लक्ष्य बन जाता है।

Saumya Science and Research Foundation उन्हें एक ऐसे प्रेरणादायी और आदर्श अधिकारी के रूप में सम्मानित करता है, जिन्होंने अपनी कर्मनिष्ठा, दूरदर्शिता और जनसेवा के प्रति समर्पण से प्रशासनिक सेवा को नई गरिमा प्रदान की है। उनका नेतृत्व न केवल वर्तमान पीढ़ी के लिए एक प्रेरणा है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी कर्तव्यनिष्ठा और नैतिकता का प्रतीक बन चुका है।



जन–जन के प्रहरी: IPS अखिल पटेल

IPS अखिल पटेल मध्यप्रदेश पुलिस विभाग में सेवा देने वाले उन चुनिंदा अधिकारियों में से हैं जिन्होंने ईमानदारी, समर्पण और जनसेवा को अपने प्रशासनिक जीवन का मूल मंत्र बनाया है। उनका उद्देश्य केवल कानून लागू करना नहीं, बल्कि समाज के हर वर्ग तक न्याय की पहुँच सुनिश्चित करना है। उनकी कार्यशैली में स्पष्ट दृष्टिकोण, समावेशी नेतृत्व और संवेदनशीलता का अनूठा समावेश है, जिससे वे आम नागरिकों के बीच विश्वास और सुरक्षा की भावना को मजबूत करते हैं।

वे कानून को भय नहीं, बल्कि विश्वास और न्याय का प्रतीक मानते हैं। इसी सोच के साथ उन्होंने पुलिसिंग को जनजागरूकता और संवाद का माध्यम बनाया है। वे नागरिकों को उनके अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक करने के लिए लगातार प्रयासरत रहते हैं। उनकी शांतचित्त निर्णय क्षमता और संवेदनशील व्यवहार ने उन्हें एक ऐसे अधिकारी के रूप में स्थापित किया है जो कानून और समाज के बीच संतुलन बनाए रखते हैं।

IPS अखिल पटेल जी की सेवा भावना और नेतृत्व क्षमता ने पुलिस विभाग में एक नई कार्यसंस्कृति को जन्म दिया है, जहाँ कानून का पालन सख़्ती से होता है लेकिन मानवीय संवेदनाओं के साथ। वे युवाओं को प्रेरित करने, समाज में न्याय की भावना जगाने और पुलिस को एक सहयोगी संस्था के रूप में स्थापित करने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं। उनकी सोच और कार्यशैली ने पुलिसिंग को जनसहभागिता और विश्वास का प्रतीक बना दिया है।

IPS अखिल पटेल जी का योगदान केवल प्रशासन तक सीमित नहीं है, बल्कि वे समाज में अनुशासन, न्याय और आपसी विश्वास की संस्कृति को स्थापित करने के लिए निरंतर कार्य कर रहे हैं। सौम्या साइंस एंड रिसर्च फाउंडेशन उन्हें एक ऐसे सच्चे जनसेवक के रूप में नमन करता है, जिनकी सोच और कर्म आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं।



उद्योग से आत्मनिर्भरता की ओर: डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश की निर्णायक पहल

मध्यप्रदेश आज भारत के औद्योगिक परिदृश्य पर एक तेजस्वी, सशक्त और भविष्य-दर्शी राज्य के रूप में अपनी नई पहचान बना रहा है। इस परिवर्तनशील यात्रा के केंद्र में हैं राज्य के गतिशील, कर्मनिष्ठ और दूरदर्शी मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, जिनके नेतृत्व ने "विकास" को केवल नीतियों तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे **जन-भागीदारी और आत्मनिर्भरता** का सशक्त आंदोलन बना दिया है।

डॉ. यादव का स्पष्ट और व्यावहारिक विज़न—

"उद्योग बढ़ेंगे तो प्रदेश की आय बढ़ेगी, कौशल विकसित होगा और हर घर में समृद्धि आएगी"

आज मध्यप्रदेश के औद्योगिक पुनर्जागरण का आधारस्तंभ बन चुका है।

राज्य सरकार ने इस विज़न को मूर्त रूप देने के लिए नीति-निर्माण, बुनियादी ढांचे के विस्तार और कौशल विकास को एकीकृत दृष्टिकोण के साथ आगे बढ़ाया है। ईज़ ऑफ डूइंग बिज़नेस की अवधारणा को धरातल पर उतारते हुए सिंगल-विंडो क्लियरेंस, ऑनलाइन अनुमतियाँ और डोर-टू-डिलीवरी जैसी अभिनव व्यवस्थाएँ लागू की गई हैं, जिनसे उद्यमियों को **परियोजना से उत्पादन तक की प्रक्रिया में पारदर्शिता, तीव्रता और विश्वास** प्राप्त हुआ है।

राज्य ने घरेलू और विदेशी निवेशकों के साथ निरंतर संवाद, निवेश सम्मेलनों और रोडशो के माध्यम से मध्यप्रदेश को **मैन्युफैक्चरिंग, लॉजिस्टिक्स, पर्यटन और सेवा क्षेत्रों** का एक विश्वसनीय निवेश गंतव्य बना दिया है। भूमि, ऊर्जा, जल और मानव संसाधन की सुनिश्चित उपलब्धता ने औद्योगिक विकास को स्थिरता और गति प्रदान की है।

डॉ. यादव के नेतृत्व में रोजगार सृजन को केवल संख्यात्मक लक्ष्य नहीं, बल्कि "**कौशल और अवसर का संगम**" मानते हुए आगे बढ़ाया गया है। प्रदेश के **आईटीआई, पॉलिटेक्निक और स्किल सेंटर्स** को स्थानीय उद्योगों की माँग के अनुरूप रूपांतरित किया जा रहा है। MSME और स्टार्टअप क्षेत्र को प्रोत्साहित करने के लिए **सरल पंजीयन, क्रेडिट लिंक योजनाएँ, नवाचार अनुदान, और सरकारी खरीद में प्राथमिकता** जैसे प्रावधान लागू किए गए हैं। महिला स्व-सहायता समूहों और युवा उद्यमियों के लिए विशेष योजनाएँ उन्हें "**साहस से सफलता**" की यात्रा तय करने की प्रेरणा दे रही हैं।

हरित औद्योगिकीकरण की दिशा में राज्य सरकार ने **नवीकरणीय ऊर्जा, अपशिष्ट प्रबंधन, जल संरक्षण और पर्यावरण संतुलन** को औद्योगिक स्थापना के मूल मानदंडों में सम्मिलित किया है। कृषि-प्रसंस्करण, वस्त्र (टेक्सटाइल), ऑटोमोबाइल/ईवी, आईटी/आईटीईएस, और पर्यटन जैसे क्षेत्रों में **क्लस्टर आधारित विकास रणनीति** अपनाई गई है, जिससे उद्योग और पर्यावरण के बीच संतुलित प्रगति का मॉडल तैयार हुआ है।

सौम्या साइंस एंड रिसर्च फाउंडेशन इस समावेशी, नवाचार-संचालित और विज्ञान-संवेदी औद्योगिक विकास दृष्टिकोण को एक **प्रेरणादायक उदाहरण** मानता है। यह न केवल प्रदेश की GDP को नई ऊँचाइयों तक ले जा रहा है, बल्कि समाज के हर वर्ग — किसान, युवा, महिला और उद्यमी — को आत्मनिर्भर भारत की मुख्यधारा से जोड़ रहा है।

डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश आज "उद्योग से आत्मनिर्भरता तक" की ऐसी यात्रा पर अग्रसर है, जो आने वाले वर्षों में प्रदेश को न केवल भारत का औद्योगिक केंद्र बनाएगी, बल्कि **विज्ञान, कौशल और स्वावलंबन का आदर्श मॉडल** भी प्रस्तुत करेगी।

सौम्या साइंस एंड रिसर्च फाउंडेशन: विज्ञान, शोध और राष्ट्र निर्माण की दिशा में समर्पित पहल

सौम्या साइंस एंड रिसर्च फाउंडेशन एक ऐसी संस्था है जो विज्ञान, तकनीक और सामाजिक समर्पण को एक सूत्र में पिरोकर राष्ट्र के सर्वांगीण विकास की दिशा में कार्यरत है। यह फाउंडेशन केवल प्रयोगशालाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका उद्देश्य विज्ञान को समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाना है। संस्थान का विश्वास है कि "ज्ञान तभी सार्थक है जब वह जीवन को बेहतर बनाए," और इसी सोच के साथ यह संगठन आधुनिक शोध, नवाचार और तकनीकी समाधान को जन-जन तक पहुँचाने का कार्य कर रहा है।

फाउंडेशन के शोध कार्य विविध क्षेत्रों में फैले हुए हैं—नवीन तकनीकों की खोज, सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर विकास, स्वास्थ्य और पर्यावरण संबंधी समाधान, और विज्ञान के माध्यम से रोजगार सृजन। इन प्रयासों का उद्देश्य है कि विज्ञान केवल विशेषज्ञों तक सीमित न रहे, बल्कि गाँव-गाँव और घर-घर तक पहुँचे। संस्थान यह मानता है कि जब विज्ञान आम नागरिक के जीवन का हिस्सा बनता है, तभी वह राष्ट्र निर्माण का सशक्त माध्यम बनता है।



सौम्या साइंस एंड रिसर्च फाउंडेशन सामाजिक योगदान को भी उतनी ही प्राथमिकता देता है जितनी वैज्ञानिक शोध को। यह संस्था समाज के प्रेरणास्रोतों को पहचानती है, उनके कार्यों को सामने लाकर समाज को प्रेरणा देती है, और विज्ञान को सामाजिक परिवर्तन का उपकरण बनाती है। फाउंडेशन का लक्ष्य है कि हर नागरिक स्वावलंबी बने और राष्ट्र एक जागरूक, सशक्त इकाई के रूप में आगे बढ़े। यह विज्ञान और समाज के बीच की दूरी को मिटाकर एक समन्वित और समर्पित भारत की कल्पना को साकार कर रहा है।

संस्थान का संकल्प है—"जागरूक राष्ट्र, वैज्ञानिक भारत।" इसके तहत सौम्या साइंस एंड रिसर्च फाउंडेशन नई पीढ़ी को विज्ञान के प्रति जागरूक करने, तकनीकी रूप से सशक्त बनाने और शोध की दिशा में प्रेरित करने के लिए निरंतर कार्य कर रहा है। यह पहल न केवल वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देती है, बल्कि एक ऐसा भविष्य गढ़ती है जहाँ हर नागरिक आत्मनिर्भर, जागरूक और नवाचार से जुड़ा हो। विज्ञान, शोध और नवाचार के माध्यम से राष्ट्र निर्माण की यह यात्रा एक प्रेरणादायक उदाहरण बन चुकी है।

इस दिशा में सौम्या साइंस एंड रिसर्च फाउंडेशन का प्रयास केवल एक संस्थागत पहल नहीं, बल्कि एक राष्ट्रीय चेतना का विस्तार है। यह संगठन यह विश्वास दिलाता है कि जब विज्ञान को जन-जीवन से जोड़ा जाता है, तो वह केवल तकनीकी उन्नति नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का आधार बनता है। हम सब मिलकर इस मिशन का हिस्सा बनें और एक ऐसा भारत गढ़ें जो ज्ञान, नवाचार और आत्मनिर्भरता के पथ पर अग्रसर हो—यही हमारी सच्ची राष्ट्र सेवा होगी।



सौम्या साइंस एंड रिसर्च फाउंडेशन: विज्ञान से राष्ट्र निर्माण की नई दिशा

सौम्या साइंस एंड रिसर्च फाउंडेशन एक ऐसी संस्था है जो विज्ञान, शोध और नवाचार को समाज के हर वर्ग तक पहुँचाकर भारत को आत्मनिर्भर और जागरूक राष्ट्र बनाने के मिशन पर कार्यरत है। इसका मूल मंत्र है—"विज्ञान से राष्ट्र निर्माण।" यह संस्था प्रयोगशालाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, पर्यावरण और तकनीकी विकास जैसे क्षेत्रों में व्यावहारिक समाधान तैयार कर रही है, जिससे आम नागरिक का जीवन सरल, सुरक्षित और समृद्ध हो सके।

फाउंडेशन की सोच यह है कि विकास केवल बुनियादी ढाँचे से नहीं, बल्कि विचारों के परिवर्तन से होता है। इसी सोच के तहत ग्रामीण नवाचार केंद्र, डिजिटल स्किलिंग हब, ग्रीन एनर्जी परियोजनाएँ और हेल्थ इनोवेशन मॉडल्स पर कार्य किया जा रहा है। इन पहलों का उद्देश्य है कि हर व्यक्ति को अपने घर के पास ही रोजगार और तकनीकी अवसर मिलें, जिससे वह आत्मनिर्भर बन सके और अपने परिवार को एक बेहतर भविष्य दे सके। यह विज्ञान को रोज़गार और सामाजिक सशक्तिकरण से जोड़ने की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है।

फाउंडेशन के शोध कार्य भविष्य के भारत को ध्यान में रखते हुए डिज़ाइन किए गए हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डेटा साइंस, कृषि तकनीक, शिक्षा नवाचार और मानसिक स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों में अनुसंधान चल रहा है, ताकि शासन प्रणाली अधिक पारदर्शी बने, किसान अधिक सक्षम हों, और युवा वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ आगे बढ़ें। "राष्ट्रीय विज्ञान नवाचार पार्क" और "ग्राम विज्ञान मिशन" जैसी योजनाएँ भारत को विज्ञान और स्टार्टअप के क्षेत्र में वैश्विक नेतृत्व दिलाने की दिशा में अग्रसर हैं।

सौम्या साइंस एंड रिसर्च फाउंडेशन का उद्देश्य केवल तकनीकी उन्नति नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना का विस्तार भी है। यह संस्था CSR के माध्यम से कॉर्पोरेट और सामाजिक संगठनों को जोड़कर विज्ञान को जन-जन तक पहुँचाने का कार्य कर रही है। इसका सपना है—एक ऐसा भारत जहाँ हर नागरिक वैज्ञानिक सोच से सशक्त हो, हर गाँव आत्मनिर्भर हो, और हर युवा नवाचार का वाहक बने। यह आंदोलन हमें यह विश्वास दिलाता है कि विज्ञान ही वह शक्ति है जो समाज को बदल सकती है और राष्ट्र को स्वर्ण युग की ओर ले जा सकती है।

वैज्ञानिक चेतना — मध्य प्रदेश के भविष्य का दार्शनिक अधिष्ठान

“विज्ञान केवल प्रयोगशाला का उपकरण नहीं, बल्कि समाज की आत्मा में निहित वह ऊर्जा है जो विचार, नीति और प्रगति — तीनों को गति देती है।”

— सौम्या साइंस एंड रिसर्च फाउंडेशन

मध्य प्रदेश आज उस ऐतिहासिक मोड़ पर खड़ा है जहाँ विकास केवल आंकड़ों या परियोजनाओं का पर्याय नहीं, बल्कि विचार और दृष्टि का विस्तार बन गया है।

राज्य की नीतिगत दिशा ने यह स्पष्ट कर दिया है कि प्रगति का नया युग केवल औद्योगिक नहीं, बल्कि वैज्ञानिक चेतना पर आधारित होगा।

“मध्य प्रदेश विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं नवाचार नीति–2022” इसी चेतना का घोषणापत्र है। इस नीति के केंद्र में यह विचार निहित है कि जब शासन और समाज दोनों वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाते हैं, तो विकास का हर आयाम टिकाऊ, समावेशी और न्यायपूर्ण बनता है।

यह नीति केवल प्रयोगशालाओं की दीवारों में सीमित दस्तावेज नहीं है — यह एक मानस परिवर्तन का घोष है। इसने यह स्वीकार किया है कि विज्ञान केवल वैज्ञानिकों का विषय नहीं, बल्कि नागरिक जीवन का अनिवार्य अंग है। यही कारण है कि राज्य ने लक्ष्य रखा है — वर्ष 2030 तक “इंडिया इनोवेशन इंडेक्स” में शीर्ष पाँच राज्यों में स्थान प्राप्त करना। यह कोई आकस्मिक आकांक्षा नहीं, बल्कि योजनाबद्ध और नीतिपरक परिवर्तन का परिणाम है।

वैज्ञानिक सोच — विकास का वास्तविक इंजन

आज का मध्य प्रदेश एक नए युग के द्वार पर खड़ा है। उसकी प्राथमिकताएँ केवल सड़कें, बिजली, पानी या उद्योग तक सीमित नहीं रहीं; बल्कि शासन के केंद्र में अब विज्ञान-प्रेरित निर्णय प्रक्रिया है।

जब निर्णय तर्क और प्रमाण पर आधारित होते हैं, तब नीतियाँ संवेदनशील भी होती हैं और प्रभावी भी।

किसी भी समाज में “वैज्ञानिक चेतना” का अर्थ केवल नई तकनीक अपनाना नहीं होता। इसका अर्थ है — प्रश्न पूछने का साहस, प्रमाण देखने की प्रवृत्ति और अनुभव से सीखने की क्षमता।

यही वह चेतना है जो समाज को अंधविश्वास से मुक्त करती है और उसे आत्मनिर्भरता की ओर ले जाती है।

मध्य प्रदेश में यह परिवर्तन धीरे-धीरे एक सांस्कृतिक आंदोलन का रूप ले रहा है। विद्यालयों में विज्ञान मेले, स्टार्टअप इनक्यूबेशन केंद्रों में शोध, पंचायत स्तर पर तकनीकी समाधान — ये सभी उदाहरण हैं कि विज्ञान अब प्रशासन का नहीं, बल्कि समाज का साझा अनुभव बन गया है।

नीति से जीवन तक: विज्ञान का विस्तार

विज्ञान तभी सार्थक होता है जब वह आम नागरिक के जीवन में उतर आए।

आज राज्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), ड्रोन प्रौद्योगिकी, डिजिटल हेल्थ, और हरित ऊर्जा जैसे क्षेत्र केवल उद्योग या विश्वविद्यालयों तक सीमित नहीं रहे — वे सीधे प्रशासन और समाज का हिस्सा बन चुके हैं।

जब “AI भारत @ MP” जैसी पहलें शासन में दक्षता और पारदर्शिता लाती हैं, जब ड्रोन भू-अभिलेखों को सटीकता से दर्ज करते हैं, जब सौर ऊर्जा ग्रामीण घरों को प्रकाशमान करती है — तब विज्ञान “परियोजना” से “अनुभव” बन जाता है।

यह वही बिंदु है जहाँ नीति, तकनीक और समाज एक साथ मिलते हैं — और विज्ञान एक जीवंत संस्कृति का रूप ले लेता है।

मध्य प्रदेश: नवाचार की प्रयोगशाला

मध्य प्रदेश को भौगोलिक और सामाजिक दृष्टि से "भारत का सूक्ष्म रूप" कहा जा सकता है। यहाँ पठार, वन, रेगिस्तान, पहाड़ और नदी — सब हैं; और साथ ही विविध भाषाएँ, संस्कृतियाँ और जीवनशैलियाँ।

यह विविधता ही इसे एक जीवंत प्रयोगशाला बनाती है, जहाँ किसी भी वैज्ञानिक या तकनीकी नीति की वास्तविक उपयोगिता को परखा जा सकता है।

राज्य में बन रहे सेंटर ऑफ एक्सीलेंस, इनोवेशन हब्स, और स्टार्टअप नीति के अंतर्गत बढ़ते उद्यमी — यह सब इस बात के प्रमाण हैं कि मध्य प्रदेश अब केवल संसाधनों का उपभोक्ता नहीं, बल्कि ज्ञान का सर्जक बन रहा है।

युवा शक्ति अब नौकरी नहीं, नवाचार को करियर के रूप में देख रही है।

विज्ञान और संस्कृति का संगम

कभी-कभी यह भ्रम होता है कि विज्ञान और संस्कृति परस्पर विरोधी हैं।

परंतु वास्तविकता इसके विपरीत है — जहाँ विज्ञान है, वहीं संस्कृति का उत्कर्ष संभव है।

मध्य प्रदेश की भूमि, जिसने कालिदास और भास जैसे कवियों को जन्म दिया, अब उसी संवेदनशीलता के साथ वैज्ञानिकों और नवोन्मेषकों को जन्म दे रही है।

यह राज्य यह सिद्ध कर रहा है कि तकनीक और परंपरा साथ-साथ चल सकती हैं।

जैसे 'भारत जेन' AI मॉडल स्थानीय बोलियों को डिजिटल संवाद का हिस्सा बना रहा है — यह केवल तकनीकी प्रगति नहीं, बल्कि सांस्कृतिक संरक्षण का आधुनिक माध्यम है।

इस प्रकार विज्ञान अब मध्य प्रदेश की संस्कृति का वाहक बन चुका है — वह संस्कृति जो प्रश्न करती है, सीखती है और आगे बढ़ती है।

2047 की दृष्टि: विज्ञान से स्वावलंबन की ओर

भारत की स्वतंत्रता के सौ वर्ष — 2047 — केवल इतिहास का उत्सव नहीं, बल्कि भविष्य की जिम्मेदारी का प्रतीक हैं।

उस भविष्य का निर्माण आज की नीतियों, प्रयोगों और दृष्टियों से होगा।

यदि विज्ञान को केवल प्रयोगों में बाँध दिया गया, तो वह समाज को नहीं बदल पाएगा; किंतु यदि विज्ञान को समाज के मूल्यों और निर्णयों का आधार बना दिया जाए, तो 2047 का भारत ज्ञान-संस्कृति का वैश्विक नेतृत्वकर्ता बन सकता है।

मध्य प्रदेश इस परिवर्तन का केंद्र बन सकता है।

इसके पास है —

- सृजनशील युवा,
- अनुसंधान-उन्मुख विश्वविद्यालय,
- प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता,
- और सबसे बड़ी बात — वैज्ञानिक सोच को नीति में बदलने की राजनीतिक इच्छाशक्ति।

उपसंहार: विज्ञान — विश्वास की नई परिभाषा

विज्ञान केवल उपकरण नहीं; यह विश्वास का पुनर्निर्माण है —

उस विश्वास का जो हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाता है।

विज्ञान हमें सिखाता है कि हर प्रश्न का उत्तर खोजा जा सकता है, हर समस्या का समाधान बनाया जा सकता है, और हर असंभव को संभव किया जा सकता है।

मध्य प्रदेश की वैज्ञानिक यात्रा इसी विश्वास की यात्रा है।

यह केवल मशीनों और प्रयोगों की कथा नहीं, बल्कि उस मानवीय दृष्टि की कहानी है जो कहती है —

"हमारे भीतर का प्रकाश ही भविष्य का सबसे बड़ा विज्ञान है।"

सौम्या साइंस एंड रिसर्च फाउंडेशन का यह प्रयास है कि विज्ञान केवल नीति या प्रयोग तक सीमित न रहे, बल्कि मानवता की चेतना में परिवर्तित हो।

क्योंकि जब विज्ञान चेतना बनता है — तभी समाज भविष्य का निर्माता बनता है।

अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी का क्रियान्वयन

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और ड्रोन प्रौद्योगिकी — आधुनिक मध्य प्रदेश की दिशा

"नवाचार तब सार्थक होता है जब वह जनहित से जुड़ता है; और तकनीक तब शक्तिशाली होती है जब वह मनुष्यता को सशक्त करे।"

1. कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence) — शासन से जन-कल्याण तक की यात्रा

AI का परिचय — सोचने वाली मशीनों का युग

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) आज केवल तकनीकी शब्द नहीं, बल्कि मानव सभ्यता के नए अध्याय का आरंभ है।

यह वह विज्ञान है जो मशीनों को "सोचने" और "सीखने" की क्षमता प्रदान करता है — यानी ऐसे सिस्टम जो अनुभव से निर्णय लेना सीख सकें, तर्क कर सकें, और समस्याओं का समाधान सुझा सकें।

AI का सार है — डेटा में छिपे ज्ञान को समझना और उसका उपयोग मानव कल्याण में करना।

मध्य प्रदेश इस विचार को केवल अपनाने तक सीमित नहीं रहा; बल्कि उसने इसे अपनी नीतियों, शासन और समाज के ताने-बाने में समाहित कर दिया है।

"AI भारत @ MP" — शासन में दक्षता की नई परिभाषा

राज्य शासन ने "AI भारत @ MP" पहल के माध्यम से यह सिद्ध कर दिया है कि प्रौद्योगिकी केवल तकनीकी प्रयोग नहीं, बल्कि सुशासन का साधन भी बन सकती है।

इस पहल के अंतर्गत AI को निम्न प्रमुख क्षेत्रों में सफलतापूर्वक लागू किया जा रहा है —

1. शिक्षा क्षेत्र में स्मार्ट एनालिटिक्स — विद्यालयों के प्रदर्शन, उपस्थिति, परीक्षा परिणाम और शिक्षण गुणवत्ता की निगरानी AI-आधारित डैशबोर्ड से की जा रही है, जिससे नीति-निर्माताओं को त्वरित और सटीक निर्णय लेने में सहायता मिल रही है।
2. स्वास्थ्य सेवाओं में भविष्यवाणी आधारित मॉडल — AI का उपयोग रोग फैलाव की संभावनाओं का पूर्वानुमान लगाने, दवा आपूर्ति प्रबंधन, और टेलीमेडिसिन सेवाओं में किया जा रहा है।
3. कृषि में निर्णय सहायता प्रणाली — मिट्टी, जलवायु और फसल पैटर्न का विश्लेषण कर किसानों को वैज्ञानिक परामर्श देना अब AI के माध्यम से संभव हुआ है।
4. राजस्व एवं शहरी नियोजन में GIS-AI संयोजन — भू-अभिलेखों, संपत्ति कर और भूमि उपयोग की सटीकता में अभूतपूर्व सुधार हुआ है।

"AI भारत" — एक नागरिक-अनुकूल डिजिटल संस्कृति

AI का सबसे बड़ा प्रभाव यह है कि इसने शासन को नागरिकों के निकट ला दिया है।

अब निर्णय केवल कागज पर नहीं, बल्कि डेटा पर आधारित हैं।

AI चैटबॉट्स, जनसेवा ऐप्स, और भाषा आधारित संवाद तंत्र ने शासन को "24×7 सेवा मंच" में बदल दिया है।

"भारत जेन" नामक स्थानीय AI मॉडल, जो हिंदी और क्षेत्रीय बोलियों में संवाद करने में सक्षम है, डिजिटल समावेशन की दिशा में ऐतिहासिक कदम है।

इससे तकनीकी सेवाएँ अब केवल अंग्रेज़ीभाषी वर्ग तक सीमित नहीं, बल्कि हर नागरिक तक सुलभ हो रही हैं।

नैतिकता और मानवता — AI की सामाजिक चुनौती

हर प्रौद्योगिकी की शक्ति के साथ जिम्मेदारी भी आती है।

AI के क्षेत्र में यह जिम्मेदारी और भी बड़ी है — क्योंकि यह निर्णयों को प्रभावित करती है।

इसलिए राज्य स्तर पर "AI एथिक्स फ्रेमवर्क" विकसित किया जा रहा है, जिसमें डेटा गोपनीयता, पारदर्शिता और निष्पक्षता को केंद्र में रखा गया है।

यह दृष्टिकोण स्पष्ट करता है कि मध्य प्रदेश की प्रौद्योगिकी नीति केवल विकास नहीं, बल्कि मानव-केंद्रित विकास की दिशा में अग्रसर है।

2. ड्रोन प्रौद्योगिकी — आकाश से धरती तक विकास की उड़ान

ड्रोन युग का आगमन

एक समय था जब ड्रोन का उपयोग केवल रक्षा क्षेत्र तक सीमित था।
आज यह कृषि, आपदा प्रबंधन, शहरी नियोजन, सर्वेक्षण, और स्वास्थ्य सेवा — हर क्षेत्र में क्रांति ला रहा है।
ड्रोन अब "आकाशीय तकनीक" नहीं, बल्कि "जनसेवा की नई दृष्टि" बन चुका है।
मध्य प्रदेश इस परिवर्तन में अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

ड्रोन नीति और स्थानीय नवाचार

राज्य सरकार द्वारा लागू "ड्रोन नीति–2023" ने ड्रोन उद्योग को संस्थागत रूप प्रदान किया है।
इस नीति का उद्देश्य स्पष्ट है —
"मध्य प्रदेश को ड्रोन निर्माण, प्रशिक्षण और सेवाओं का राष्ट्रीय केंद्र बनाना।"
राज्य में स्थापित ड्रोन प्रशिक्षण अकादमियाँ युवाओं को उन्नत तकनीकी दक्षता प्रदान कर रही हैं।
इन संस्थानों में प्रशिक्षित ऑपरेटर अब कृषि से लेकर भू-नक्शांकन तक अनेक क्षेत्रों में कार्यरत हैं।

कृषि में ड्रोन — हर खेत तक विज्ञान की पहुँच

कृषि क्षेत्र में ड्रोन का प्रयोग मध्य प्रदेश में एक "गेम चेंजर" साबित हुआ है।
ड्रोन आधारित छिड़काव प्रणाली ने किसानों के श्रम और लागत दोनों को कम किया है।
इसके अतिरिक्त,

- फसल स्वास्थ्य निगरानी,
- मिट्टी की नमी और पोषण का विश्लेषण,
- और फसल उपज का सटीक आकलन
- जैसे कार्य अब मिनटों में संभव हैं।

इससे कृषि वैज्ञानिकता को ग्रामीण स्तर तक पहुँचाने में अभूतपूर्व सफलता मिली है।

आपदा प्रबंधन और जनसुरक्षा में ड्रोन का योगदान

प्राकृतिक आपदाओं — जैसे बाढ़, भूस्खलन, आग, या भूकंप — की स्थिति में ड्रोन सबसे पहले घटनास्थल पर पहुँचने वाला "आकाशीय प्रहरी" बन गया है।
ड्रोन द्वारा त्वरित सर्वेक्षण और थर्मल इमेजिंग के माध्यम से राहत कार्यों की सटीकता में वृद्धि हुई है।
नगर निगम और पुलिस विभागों द्वारा उपयोग किए जा रहे "स्मार्ट सर्विलांस ड्रोन" अब शहरी सुरक्षा और यातायात प्रबंधन का महत्वपूर्ण अंग बन चुके हैं।

भविष्य की दृष्टि — ड्रोन उद्योग में आत्मनिर्भरता

मध्य प्रदेश में अब स्थानीय स्तर पर ड्रोन निर्माण, स्पेयर पार्ट्स असेंबली और सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट की दिशा में स्टार्टअप इकोसिस्टम विकसित किया जा रहा है।

"ड्रोन हब भोपाल" और "इंदौर टेक क्लस्टर" जैसी पहलकदमियाँ इस दिशा में मील का पत्थर साबित हो रही हैं।
इससे न केवल तकनीकी आत्मनिर्भरता को बल मिलेगा, बल्कि युवाओं के लिए हजारों नई नौकरियाँ भी सृजित होंगी।

3. एक साझा दिशा — तकनीक, नीति और नागरिक का संगम

AI और ड्रोन प्रौद्योगिकी केवल औजार नहीं हैं; ये उस मानसिकता का प्रतीक हैं जहाँ शासन, शोध और समाज एक ही दिशा में काम करते हैं।

दोनों तकनीकें "स्मार्ट गवर्नेंस" के माध्यम से पारदर्शिता, दक्षता और नागरिक सशक्तिकरण की दिशा में एकजुट प्रभाव पैदा कर रही हैं।

मध्य प्रदेश की नीति यही कहती है —

"प्रौद्योगिकी का लक्ष्य मशीन बनाना नहीं, बल्कि मनुष्य को सक्षम बनाना है।"



उपसंहार — तकनीकी विकास से सामाजिक पुनर्जागरण तक

AI और ड्रोन दोनों ही ऐसी तकनीकें हैं जिनमें ज्ञान और करुणा दोनों के लिए जगह है।

जब इन्हें सही दृष्टिकोण से अपनाया जाता है, तो वे केवल शासन का औजार नहीं, बल्कि समाज के उत्थान का साधन बन जाती हैं।

मध्य प्रदेश ने यह सिद्ध कर दिया है कि अत्याधुनिक तकनीक तब ही सार्थक होती है जब वह जनसेवा, पारदर्शिता और आत्मनिर्भरता के मूल्यों से जुड़ी हो।

यह राज्य अब केवल "तकनीकी उपभोक्ता" नहीं, बल्कि "तकनीकी सर्जक" के रूप में उभर रहा है —

जहाँ हर प्रयोग, हर नवाचार, और हर विचार का लक्ष्य है —

"विज्ञान से समाज, और समाज से भविष्य।"



उद्योग, निवेश और औद्योगिक नवाचार

“विज्ञान से उद्योग, उद्योग से आत्मनिर्भरता — मध्य प्रदेश का औद्योगिक नवजागरण”

“नवाचार तभी सार्थक होता है, जब वह विकास को जन-हित के साथ जोड़ दे; और उद्योग तभी प्रगतिशील कहलाता है, जब वह पर्यावरण, रोजगार और मानव गरिमा का संरक्षक बने।”

मध्य प्रदेश आज एक नये औद्योगिक युग के मुहाने पर खड़ा है। परंपरागत उद्योगों की जड़ों में जहाँ शिल्प और परिश्रम की गंध है, वहीं नई तकनीक की शाखाओं में बुद्धिमत्ता और हरित नवाचार की चमक है। इस समन्वय ने राज्य को उस दिशा में अग्रसर किया है जहाँ उद्योग केवल उत्पादन का केंद्र नहीं, बल्कि प्रगति, पर्यावरण और परंपरा का संगम बन रहा है।

पीएम-मित्र पार्क — वस्त्र उद्योग में हरित क्रांति की कथा

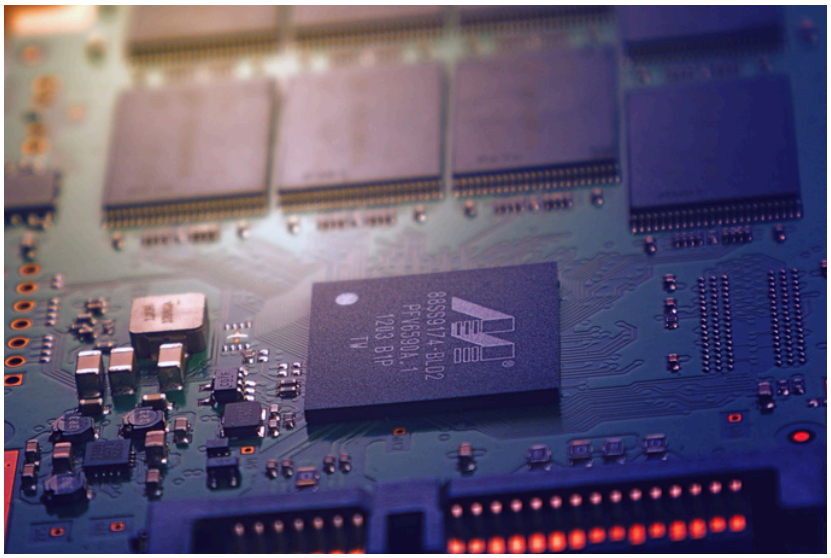
धार जिले के बदनावर में उभरता हुआ पीएम-मित्र पार्क इस नवयुगीन औद्योगिक दृष्टि का जीता-जागता उदाहरण है। 1,563 एकड़ में फैला यह पार्क केवल ईंट-पत्थरों का परिसर नहीं, बल्कि भारत की वस्त्र परंपरा और तकनीकी आधुनिकता का प्रतीक है। इस परियोजना की विशेषता यह है कि यहाँ वस्त्र उत्पादन की पूरी श्रृंखला — फाइबर से लेकर फैब्रिक और फैब्रिक से फैशन तक — एक ही परिसर में समाहित की जा रही है।

यह परियोजना न केवल उत्पादन दक्षता बढ़ाएगी, बल्कि लॉजिस्टिक लागत में भारी कमी लाकर भारत को वैश्विक प्रतिस्पर्धा में एक अग्रणी स्थान प्रदान करेगी। ₹12,508 करोड़ के अनुमानित निवेश और दो लाख से अधिक रोजगार अवसरों के साथ यह पार्क मध्य प्रदेश की औद्योगिक आत्मनिर्भरता का सशक्त प्रतीक बन गया है।

परंतु इसकी सबसे उल्लेखनीय विशेषता इसकी हरित तकनीकी दृष्टि है। यहाँ “ग्रीन टेक्सटाइल प्रोसेसिंग” को नीति का हिस्सा बनाया गया है। रासायनिक अपशिष्टों के निस्तारण के लिए ‘जीरो लिक्विड डिस्चार्ज सिस्टम’ अपनाया गया है, जिससे पर्यावरण पर न्यूनतम प्रभाव पड़े। ‘कॉमन एफ्लुएंट ट्रीटमेंट प्लांट’, सौर ऊर्जा संयंत्र और जल पुनर्चक्रण व्यवस्था जैसे कदम इसे सतत औद्योगिक विकास का आदर्श मॉडल बनाते हैं।

यहाँ केवल कपड़ा नहीं बुना जा रहा — बल्कि एक नए हरित भारत का स्वप्न बुना जा रहा है, जिसमें उद्योग और प्रकृति एक-दूसरे के पूरक बनकर उभर रहे हैं। ट्रायडेंट, अरविंद मिल्स और वर्धमान जैसे प्रतिष्ठित औद्योगिक समूहों का इस परियोजना से जुड़ना इस बात का प्रमाण है कि मध्य प्रदेश अब भारत के टेक्सटाइल वैल्यू चेन का एक सशक्त केंद्र बन चुका है।

राज्य सरकार की **औद्योगिक नीति–2023** ने इस दिशा में आधारशिला रखी है। नीति का उद्देश्य है — निवेश को सरल, पारदर्शी और तेज़ बनाना। ‘सिंगल विंडो सिस्टम’, टैक्स छूट, और भूमि आवंटन की डिजिटल प्रक्रिया ने निवेशकों का विश्वास अर्जित किया है। यही कारण है कि राज्य के छोटे कस्बों से लेकर महानगरों तक अब औद्योगिक संवाद की गूंज सुनाई दे रही है।



सेमीकंडक्टर, आईटी और स्पेस-टेक — डिजिटल युग की आत्मा

21वीं सदी की सबसे बड़ी औद्योगिक क्रांति सिलिकॉन चिप से शुरू हुई थी — एक नन्हा-सा अणु, जिसने पूरी मानव सभ्यता को डिजिटल बना दिया। आज वही क्रांति मध्य प्रदेश में नई ऊर्जा पा रही है। भोपाल के समीप **बैरसिया इलेक्ट्रॉनिक्स मैन्युफैक्चरिंग क्लस्टर** राज्य की डिजिटल आत्मनिर्भरता का आधार बन रहा है।

यह क्लस्टर इलेक्ट्रॉनिक्स सिस्टम डिज़ाइन एंड मैन्युफैक्चरिंग (ESDM) के लिए समर्पित है, जहाँ कंप्यूटर हार्डवेयर, सर्किट बोर्ड, स्मार्ट डिवाइस और घरेलू इलेक्ट्रॉनिक्स उपकरणों का स्थानीय उत्पादन किया जाएगा। इसके साथ-साथ, ई-वेस्ट प्रबंधन और ग्रीन एनर्जी समाधानों पर भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है, जिससे औद्योगिक विकास का संतुलन प्रकृति के साथ बना रहे।

इसी दिशा में ग्वालियर के **अटल बिहारी वाजपेयी ट्रिपल आईटीएम** में स्थापित हो रहा **"सेमीकंडक्टर सेंटर ऑफ एक्सीलेंस"** देश के उच्च प्रौद्योगिकी शोध का नया केंद्र बनेगा। यहाँ ग्रीन चिप टेक्नोलॉजी पर कार्य किया जा रहा है — ऐसे माइक्रोचिप्स जिनमें ऊर्जा खपत न्यूनतम हो, जो क्वांटम हार्डवेयर के साथ संगत हों, और जो भारत की "ग्रीन डिजिटल इकोनॉमी" की रीढ़ बन सकें।

यह केंद्र केवल प्रयोगशाला नहीं, बल्कि एक विजन सेंटर है — जहाँ शोधकर्ता, विद्यार्थी और उद्योग एक साझा मिशन के तहत कार्य कर रहे हैं। यह पहल भारत के "सेमीकंडक्टर आत्मनिर्भरता मिशन" को गति देने के साथ-साथ, ग्वालियर को हाई-टेक अनुसंधान नगर के रूप में स्थापित कर रही है।

स्पेस-टेक नीति — धरती से अंतरिक्ष तक दृष्टि का विस्तार

मुख्यमंत्री द्वारा घोषित **"स्पेस-टेक नीति"** ने मध्य प्रदेश को एक अनूठा स्थान प्रदान किया है। यह नीति अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी को केवल वैज्ञानिक प्रयोग तक सीमित नहीं रखती, बल्कि उसे शासन और जनकल्याण के कार्यों में समाहित करती है।

राज्य में एक सैटेलाइट डेटा एनालिटिक्स सेंटर स्थापित किया जा रहा है, जहाँ उपग्रह आंकड़ों के आधार पर कृषि, भू-अभिलेख, वन प्रबंधन, और शहरी नियोजन से जुड़े निर्णय लिए जा सकेंगे। यह नीति भू-सूचना तंत्र (GIS), जियोस्पेशियल डेटा, और रिमोट सेंसिंग को जनहितकारी अनुप्रयोगों में बदलने की दिशा में मील का पत्थर साबित होगी।

इसके साथ ही, स्पेस टेक्नोलॉजी स्टार्टअप इन्क्यूबेशन प्रोग्राम युवाओं को इस क्षेत्र में अनुसंधान एवं नवाचार के लिए प्रेरित कर रहा है। इंदौर, भोपाल और जबलपुर में विकसित हो रहे टेक पार्क्स अब केवल औद्योगिक क्षेत्र नहीं, बल्कि नवाचार के प्रयोगशाला रूप में विकसित हो रहे हैं।



युवा उद्यमिता और स्टार्टअप संस्कृति — नवाचार से रोजगार तक

मध्य प्रदेश के औद्योगिक पुनर्जागरण में युवाओं की भूमिका अत्यंत केंद्रीय है।
राज्य सरकार द्वारा प्रारंभ किया गया "StartUp MP Mission" हजारों युवाओं को नवाचार आधारित उद्यमिता की ओर अग्रसर कर रहा है।
इंदौर स्मार्ट सिटी लैब्स, भोपाल टेक पार्क, और जबलपुर इनोवेशन हब जैसे केंद्र युवाओं को संसाधन, मेंटरशिप और फंडिंग उपलब्ध कराकर उनके विचारों को उद्योग में परिवर्तित कर रहे हैं।
आज राज्य में सैकड़ों स्टार्टअप्स "ड्रोन-टेक", "AI इंटीग्रेशन", "ग्रीन एनर्जी" और "स्पेस एनालिटिक्स" जैसे भविष्यवादी क्षेत्रों में काम कर रहे हैं।
यह एक ऐसा परिवर्तन है जहाँ तकनीकी विचार केवल नवाचार नहीं, बल्कि नौकरी सृजन और सामाजिक सशक्तिकरण का माध्यम बन रहे हैं।

औद्योगिक नवाचार से सामाजिक प्रगति की ओर

मध्य प्रदेश की औद्योगिक नीति का मूल दर्शन यही है —
"उद्योग का अर्थ केवल उत्पादन नहीं, बल्कि समाज में समृद्धि और सम्मान का वितरण है।"
चाहे वह पीएम-मित्र पार्क के ग्रामीण रोजगार हों या सेमीकंडक्टर सेंटर के तकनीकी अवसर — हर पहल के केंद्र में मानव विकास की भावना विद्यमान है।
राज्य अब केवल निवेश आकर्षित नहीं कर रहा, बल्कि नवाचार का पारिस्थितिकी तंत्र गढ़ रहा है —
एक ऐसा इकोसिस्टम जहाँ वैज्ञानिकता, तकनीकी दक्षता और सामाजिक उत्तरदायित्व साथ चलते हैं।

उपसंहार — आत्मनिर्भरता की ओर एक प्रगतिशील यात्रा

मध्य प्रदेश ने यह सिद्ध कर दिया है कि औद्योगिक विकास केवल पूंजी पर निर्भर नहीं होता;
वह दृष्टि, नीति और निष्ठा के संगम से जन्म लेता है।
यह राज्य अब "मैन्युफैक्चरिंग बेस" नहीं, बल्कि "नॉलेज-बेस्ड इकोनॉमी" की दिशा में अग्रसर है।
2030 तक भारत के शीर्ष 5 औद्योगिक राज्यों में स्थान पाने का लक्ष्य केवल आकांक्षा नहीं, बल्कि एक सुविचारित रणनीतिक मिशन है —
जहाँ हर निवेश एक विचार है,
हर उद्योग एक प्रयोगशाला है,
और हर नागरिक इस विकास यात्रा का सहभागी है।
"यह केवल उद्योग का नवजागरण नहीं — यह मध्य प्रदेश के आत्मविश्वास का पुनर्जागरण है।"

स्वास्थ्य एवं सामाजिक सशक्तिकरण में तकनीकी हस्तक्षेप

“तकनीक के संग करुणा – नवभारत के आरोग्य का नवयुग”

“जब तकनीक जीवन को छूती है, तब विज्ञान मानवता का सबसे सुंदर रूप बन जाता है।”

मध्य प्रदेश का तकनीकी नवाचार अब केवल उद्योग या प्रशासन तक सीमित नहीं रहा।
राज्य ने स्वास्थ्य सेवा और सामाजिक सशक्तिकरण के क्षेत्र में जो कदम उठाए हैं, वे “विकास” शब्द को मानव जीवन के गहरे अर्थों से जोड़ते हैं।
यह युग उस सोच का प्रतिनिधित्व करता है जिसमें सरकार केवल योजनाएँ नहीं बनाती, बल्कि नागरिकों के जीवन की सुरक्षा और गरिमा की प्रहरी बनकर कार्य करती है।

1. स्वास्थ्य सेवा में प्रौद्योगिकी का पुनर्जागरण

कभी स्वास्थ्य सेवाएँ ग्रामीण भारत के लिए चुनौती हुआ करती थीं — सीमित चिकित्सक, लंबी दूरी, और संसाधनों का अभाव।
किन्तु अब मध्य प्रदेश ने डिजिटल साधनों, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और दूरसंचार के माध्यम से स्वास्थ्य सेवा को “सीमाहीन” बना दिया है।
यह परिवर्तन केवल सुविधा का नहीं, बल्कि विश्वास और समानता का है।
आज राज्य का हर नागरिक, चाहे वह बघेलखंड के किसी सुदूर गाँव में हो या भोपाल के शहरी क्षेत्र में, स्वास्थ्य सेवाओं से जुड़ सकता है।
राज्य की डिजिटल हेल्थ इंफ्रास्ट्रक्चर नीति के अंतर्गत स्वास्थ्य केंद्रों को हाई-स्पीड इंटरनेट, टेलीमेडिसिन यूनिट और ई-रिकॉर्ड सिस्टम से जोड़ा गया है।
अब मरीज की संपूर्ण स्वास्थ्य जानकारी — उपचार इतिहास, दवा विवरण, और प्रयोगशाला रिपोर्ट — डिजिटल प्लेटफॉर्म पर सुरक्षित रहती है।
यह एकीकृत प्रणाली डॉक्टरों को सटीक उपचार निर्णय लेने में सहायता करती है और समय की बचत भी करती है।

2. “पीएम श्री एयर एम्बुलेंस सेवा” — आकाश से जीवन की डोर

“समय ही जीवन है, और तकनीक वह शक्ति जो समय को पराजित कर देती है।”
मध्य प्रदेश की भौगोलिक विविधता — घने वन, पर्वतीय क्षेत्र, और दूरस्थ गाँव — स्वास्थ्य सेवाओं की दृष्टि से एक बड़ी चुनौती प्रस्तुत करती थी।
किन्तु पीएम श्री एयर एम्बुलेंस सेवा के आरंभ ने इस चुनौती को अवसर में बदल दिया।
यह सेवा अब उन इलाकों में जीवन की गारंटी बन चुकी है जहाँ पहले पहुँचने में घंटों लगते थे।
राज्य सरकार ने इस मिशन के तहत अत्याधुनिक हवाई एम्बुलेंस को डॉक्टरों, पैरामेडिकल स्टाफ और इन-फ्लाइट ICU उपकरणों से सुसज्जित किया है।
इसका संचालन इंटीग्रेटेड कंट्रोल सेंटर से होता है, जहाँ से हर आपात स्थिति पर त्वरित प्रतिक्रिया दी जाती है।
यह सेवा न केवल गंभीर मरीजों के लिए वरदान है, बल्कि मातृ मृत्यु-दर, दुर्घटना मृत्यु और ग्रामीण क्षेत्रों में चिकित्सा विलंब जैसी समस्याओं को भी प्रभावी रूप से कम कर रही है।
इससे एक नया विश्वास जन्मा है — कि अब राज्य का कोई नागरिक “दूरी” के कारण चिकित्सा सहायता से वंचित नहीं रहेगा।

3. चिकित्सा शिक्षा एवं सेवाओं का समन्वित पुनर्गठन

राज्य सरकार ने स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा को परस्पर पूरक मानते हुए "लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग" का विलय किया है।

यह नीतिगत सुधार केवल प्रशासनिक एकीकरण नहीं, बल्कि ज्ञान आधारित स्वास्थ्य प्रणाली की ओर निर्णायक कदम है।

इस समन्वय से मेडिकल कॉलेजों और सरकारी अस्पतालों के बीच संसाधनों का बेहतर उपयोग सुनिश्चित हुआ है।

अब शिक्षण संस्थानों के छात्र सीधे वास्तविक मरीज सेवाओं में भाग ले रहे हैं, जबकि डॉक्टरों को नवीनतम शैक्षणिक प्रशिक्षण प्राप्त हो रहा है।

"मेडिकल नॉलेज शेयरिंग मिशन" के माध्यम से विशेषज्ञ डॉक्टर लाइव सेशन, वेबिनार और केस स्टडी प्लेटफॉर्म के द्वारा छोटे शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों के चिकित्सकों को प्रशिक्षण दे रहे हैं।

इससे एक सशक्त चिकित्सीय नेटवर्क विकसित हुआ है, जो निरंतर सीखने, सहयोग और नवाचार को बढ़ावा देता है।

4. "स्वयंसिद्धि बॉट" — शिक्षा और स्वास्थ्य का डिजिटल सेतु

"ज्ञान जब कृत्रिम बुद्धिमत्ता से मिलता है, तो शिक्षा का स्वरूप बदल जाता है।"

राज्य के शिक्षा विभाग द्वारा विकसित "स्वयंसिद्धि बॉट" केवल एक तकनीकी उपकरण नहीं, बल्कि डिजिटल संवाद का नया अध्याय है।

AI आधारित यह चैटबॉट विद्यार्थियों को साप्ताहिक अभ्यास, वीडियो सामग्री, प्रश्नोत्तर सत्र और गृह-अध्ययन मार्गदर्शन प्रदान करता है।

इससे ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों के छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और आत्म-अध्ययन की सुविधा मिल रही है।

"स्वयंसिद्धि बॉट" विशेष रूप से सरकारी स्कूलों के विद्यार्थियों को लक्ष्य कर तैयार किया गया है ताकि डिजिटल समानता सुनिश्चित हो सके।

इसी मॉडल को अब स्वास्थ्य क्षेत्र में भी "स्वयंसिद्धि हेल्थ असिस्टेंट" के रूप में विस्तारित करने की योजना है।

यह वर्चुअल सहायक नागरिकों को प्राथमिक स्वास्थ्य परामर्श, सरकारी योजनाओं की जानकारी और टीकाकरण अनुसूची प्रदान करेगा।

यह नवाचार मध्य प्रदेश को "AI for Good Governance" की दिशा में अग्रणी बना रहा है।

5. सामाजिक सशक्तिकरण — तकनीक के माध्यम से संवेदना का विस्तार

स्वास्थ्य केवल शरीर की स्थिति नहीं, बल्कि समाज की सामूहिक चेतना है।

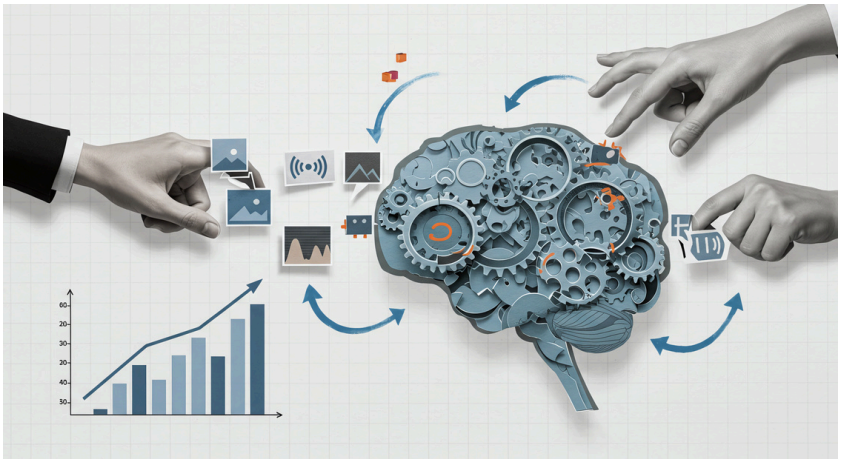
इसी दर्शन को ध्यान में रखते हुए राज्य ने तकनीक के जरिये समाज के कमजोर वर्गों, वृद्धजनों, महिलाओं और बच्चों के जीवन को अधिक सशक्त बनाया है।

"डिजिटल लाभांश पोर्टल", "सामाजिक सुरक्षा एप्लिकेशन", और "पोषण ट्रैकिंग नेटवर्क" जैसी पहलें सुनिश्चित करती हैं कि प्रत्येक नागरिक तक सरकारी योजनाओं का लाभ सीधे पहुँचे।

अब वृद्धजन पेंशन, मातृत्व सहायता या छात्रवृत्ति योजनाओं का लाभ एक क्लिक में प्राप्त कर सकते हैं।

महिलाओं की सुरक्षा के लिए "अभय मोबाइल एप" और बच्चों के संरक्षण हेतु "बाल प्रहरी प्रणाली" स्थापित की गई है।

ये डिजिटल प्लेटफॉर्म केवल तकनीकी तंत्र नहीं, बल्कि विश्वास और सुरक्षा का डिजिटल कवच हैं।



6. डेटा एनालिटिक्स और प्रिवेंटिव हेल्थ का नया युग

भविष्य की स्वास्थ्य सेवाएँ केवल उपचार पर नहीं, बल्कि रोग की रोकथाम पर केंद्रित होंगी।
राज्य सरकार ने इस दिशा में "AI आधारित हेल्थ डाटा एनालिटिक्स प्लेटफॉर्म" विकसित करने की योजना बनाई है।
यह प्रणाली नागरिकों के स्वास्थ्य डेटा का विश्लेषण कर रोगों की प्रवृत्तियों और संभावित महामारी जोखिम का पूर्वानुमान लगाएगी।
उदाहरणस्वरूप, यदि किसी जिले में लगातार फेफड़ों के संक्रमण के मामले बढ़ रहे हों, तो यह प्लेटफॉर्म स्वचालित चेतावनी जारी करेगा और प्रशासन को रोकथाम के निर्देश देगा।
इससे स्वास्थ्य नीति अधिक प्रतिक्रियात्मक नहीं, बल्कि पूर्व-निवारक (Proactive) बन सकेगी।

7. भविष्य की दिशा — "डिजिटल हेल्थ कार्ड" और "वर्चुअल मेडिकल क्लिनिक"

आने वाले वर्षों में राज्य "डिजिटल हेल्थ कार्ड मिशन" के माध्यम से प्रत्येक नागरिक को एक व्यक्तिगत स्वास्थ्य पहचान संख्या प्रदान करेगा।
इस कार्ड में व्यक्ति का पूरा स्वास्थ्य इतिहास, एलर्जी, दवा विवरण और चिकित्सीय सलाह एक ही स्थान पर संग्रहीत रहेगा।
इससे उपचार में पारदर्शिता, निरंतरता और सुविधा तीनों सुनिश्चित होंगी।
साथ ही, "वर्चुअल मेडिकल क्लिनिक नेटवर्क" की परिकल्पना के अंतर्गत टेलीमेडिसिन केंद्रों को जिला अस्पतालों और मेडिकल कॉलेजों से जोड़ा जाएगा, जिससे ग्रामीण मरीज विशेषज्ञ परामर्श तक सीधे पहुँच सकें।

उपसंहार — तकनीक में मानवता का स्पंदन

"स्वास्थ्य केवल अस्पतालों में नहीं, बल्कि नीति, तकनीक और संवेदना के संगम में जन्म लेता है।"
मध्य प्रदेश ने यह सच्चाई सिद्ध कर दी है कि विज्ञान का सर्वोत्तम उपयोग वही है जो समाज की भलाई के लिए हो।
एयर एम्बुलेंस से लेकर डिजिटल हेल्थ कार्ड तक — यह यात्रा करुणा, नवाचार और उत्तरदायित्व की त्रिवेणी है।
यह प्रदेश अब केवल विकासशील राज्य नहीं, बल्कि संवेदनशील राज्य बनकर उभर रहा है —
जहाँ तकनीक सिर्फ साधन नहीं, बल्कि मानवता का सेतु है।
और यही है मध्य प्रदेश की नई पहचान:

"टेक्नोलॉजी विद ह्यूमैनिटी — करुणा के संग विज्ञान की शक्ति।"



भविष्य के आयाम – 2047 की ओर तकनीकी दृष्टि

"नवाचार का क्षितिज – आत्मनिर्भर मध्य प्रदेश की विज्ञान यात्रा"

"भविष्य केवल समय का विस्तार नहीं, बल्कि दृष्टि का परिणाम है। जब तकनीक उस दृष्टि का साधन बन जाती है, तब सभ्यता नवजागरण का अनुभव करती है।"

भारत जब अपनी स्वतंत्रता के शताब्दी वर्ष 2047 की ओर अग्रसर हो रहा है, तब मध्य प्रदेश ने यह ठान लिया है कि वह केवल विकास का सहभागी नहीं, बल्कि तकनीकी आत्मनिर्भरता का अगुवा बनेगा।

राज्य की विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं नवाचार नीति (2022) ने जिस दिशा की रूपरेखा प्रस्तुत की थी, वह अब भविष्य के विस्तृत कैनवास पर साकार होती दिखाई दे रही है।

यह खंड उसी यात्रा का वृतांत है – एक ऐसी यात्रा जहाँ ऊर्जा, अंतरिक्ष, खगोल विज्ञान और मानव-केंद्रित नवाचार मिलकर नई सभ्यता का बीज बो रहे हैं।

1. नवीकरणीय ऊर्जा में उत्कृष्टता – हरित शक्ति का युग

"प्रकृति के संग तालमेल ही वह ऊर्जा है जो स्थायी विकास को जन्म देती है।"

मध्य प्रदेश ने ऊर्जा आत्मनिर्भरता को अपनी प्राथमिकता बनाया है।

राज्य का लक्ष्य है कि वर्ष 2030 तक उसकी कुल ऊर्जा खपत का 50 प्रतिशत हिस्सा नवीकरणीय स्रोतों से पूरा किया जाए।

यह केवल एक सांख्यिक लक्ष्य नहीं, बल्कि पर्यावरणीय और नैतिक प्रतिबद्धता का प्रतीक है।

राज्य के सौर और पवन ऊर्जा क्षेत्रों में अभूतपूर्व प्रगति हुई है –

रीवा, नीमच, आगर-मालवा और शाजापुर के विशाल सौर ऊर्जा पार्क अब भारत के स्वच्छ ऊर्जा परिदृश्य के प्रतीक बन चुके हैं।

रीवा अल्ट्रा मेगा सोलर प्रोजेक्ट आज दिल्ली मेट्रो तक को ऊर्जा प्रदान कर रहा है – यह इस बात का प्रमाण है कि मध्य प्रदेश अब ऊर्जा निर्यातक राज्य बनने की दिशा में अग्रसर है।

साथ ही, राज्य सरकार "ग्रीन हाइड्रोजन मिशन" की ओर कदम बढ़ा रही है, जिसके अंतर्गत जल विद्युत अपघटन के माध्यम से स्वच्छ हाइड्रोजन उत्पादन की योजना है।

यह भविष्य की ऊर्जा प्रणाली को न केवल कार्बन मुक्त बनाएगा, बल्कि राज्य को राष्ट्रीय हरित अर्थव्यवस्था का केंद्र स्थापित करेगा।

राज्य की 'स्मार्ट ग्रिड नीति' और 'एनर्जी डेटा मॉनिटरिंग सिस्टम' यह सुनिश्चित करेंगे कि ऊर्जा उत्पादन, वितरण और उपभोग पूरी तरह डिजिटल और दक्ष बने।

यह बदलाव आने वाले वर्षों में लाखों नागरिकों को सस्ती, स्वच्छ और स्थायी ऊर्जा उपलब्ध कराएगा।



2. अंतरिक्ष विज्ञान और खगोल अनुसंधान — ब्रह्मांड के द्वार पर मध्य प्रदेश

"जहाँ मानव दृष्टि समाप्त होती है, वहीं से विज्ञान की उड़ान आरंभ होती है।"
मध्य प्रदेश का भौगोलिक और सांस्कृतिक वैभव अब अंतरिक्ष अनुसंधान और वैज्ञानिक पर्यटन का नया केंद्र बन रहा है।
राज्य सरकार ने "मध्य प्रदेश स्पेस टेक नीति" तैयार करने की घोषणा की है, जो राज्य को स्पेस टेक्नोलॉजी, सैटेलाइट मैपिंग, और जियो-डेटा एप्लिकेशन के क्षेत्र में अग्रणी बनाएगी।
ग्वालियर के एबीवी-ट्रिपल आईटीएम में स्थापित "सेमीकंडक्टर सेंटर ऑफ एक्सीलेंस" अब स्पेस ग्रेड चिप्स और क्वांटम कंप्यूटिंग हार्डवेयर पर शोध कर रहा है।
यह पहल भारत की "मेक इन इंडिया इन स्पेस" अवधारणा को सशक्त बनाएगी।
इसी क्रम में, राज्य के डोंगला वेधशाला का पुनरुद्धार और मांडू एस्ट्रो-पार्क की परिकल्पना न केवल अनुसंधान के लिए, बल्कि वैज्ञानिक पर्यटन के लिए भी एक मील का पत्थर सिद्ध होंगे।
मांडू एस्ट्रो-पार्क को "अंतरिक्ष और संस्कृति के संगम" के रूप में विकसित किया जा रहा है, जहाँ पर्यटक तारामंडल अवलोकन, अंतरिक्ष प्रशिक्षण शिविर और वैज्ञानिक प्रदर्शनियों का अनुभव करेंगे।
यह पहल युवा पीढ़ी को विज्ञान के प्रति आकर्षित करेगी और यह संदेश देगी कि आकाश अब सीमा नहीं, प्रेरणा है।

3. विज्ञान और समाज — जनभागीदारी का नया प्रतिमान

भविष्य का विज्ञान केवल प्रयोगशालाओं तक सीमित नहीं रह सकता।
वह समाज के भीतर, उसकी चेतना और व्यवहार में समाहित होना चाहिए।
मध्य प्रदेश सरकार इस दिशा में 'साइंस फॉर सोसाइटी' पहल के तहत नागरिकों को विज्ञान से जोड़ने के लिए कई कार्यक्रम चला रही है।
"विज्ञान ग्राम योजना" के अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में विज्ञान केंद्र स्थापित किए जा रहे हैं, जहाँ कृषि, पर्यावरण, स्वास्थ्य और ऊर्जा से संबंधित सरल प्रयोग प्रदर्शित किए जाते हैं।
इन केंद्रों का उद्देश्य है — विज्ञान को जनसाधारण की समझ में लाना और नवाचार को स्थानीय समस्याओं से जोड़ना।
साथ ही, "इनोवेशन फॉर यूथ मिशन" के माध्यम से विद्यार्थियों को वैज्ञानिक सोच, स्टार्टअप संस्कृति और अनुसंधान पद्धति की जानकारी दी जा रही है।
इस मिशन का लक्ष्य है कि 2047 तक राज्य के प्रत्येक जिले से कम-से-कम 100 युवा इनोवेटर राष्ट्रीय स्तर पर योगदान दें।



4. डिजिटल शासन और तकनीकी लोकतंत्र

“भविष्य का शासन वह है जिसमें तकनीक पारदर्शिता का पर्याय बन जाए।”
राज्य प्रशासन ने AI, ब्लॉकचेन और बिग डेटा एनालिटिक्स के उपयोग से शासन प्रणाली को स्मार्ट गवर्नेंस के नए युग में प्रवेश कराया है।
“MP e-Governance 2040 Vision” का उद्देश्य है कि प्रत्येक नागरिक को सरकारी सेवा का अधिकार बिना मध्यस्थता, बिना विलंब के प्राप्त हो।
AI आधारित निर्णय प्रणाली, डिजिटल नागरिक डैशबोर्ड, और प्रिडिक्टिव गवर्नेंस मॉडल अब नीति-निर्माण का हिस्सा बन चुके हैं।
यह प्रणाली न केवल योजनाओं की प्रभावशीलता बढ़ा रही है, बल्कि यह सुनिश्चित कर रही है कि हर निर्णय डेटा-आधारित और पारदर्शी हो।
ब्लॉकचेन तकनीक का उपयोग भूमि अभिलेख, स्वास्थ्य डेटा और शिक्षा प्रमाणन में किया जा रहा है — जिससे भ्रष्टाचार की संभावनाएँ समाप्त होती हैं।
इस प्रकार, तकनीक अब शासन का उपकरण नहीं, बल्कि विश्वास का वास्तुकार बन चुकी है।

5. पर्यावरण, विज्ञान और मानवता का संतुलन

भविष्य की तकनीकी दृष्टि तभी सार्थक होगी जब वह प्रकृति के साथ सामंजस्य में विकसित हो।
मध्य प्रदेश इस दिशा में “सस्टेनेबल साइंस मॉडल” पर कार्य कर रहा है, जिसमें हर वैज्ञानिक परियोजना के साथ पर्यावरणीय प्रभाव मूल्यांकन अनिवार्य है।
“ग्रीन टेक्नोलॉजी क्लस्टर” — भोपाल और इंदौर में स्थापित किए जा रहे हैं, जहाँ सर्कुलर इकॉनॉमी, वेस्ट रिकवरी और बायो-मैन्युफैक्चरिंग पर अनुसंधान हो रहा है।
इन केंद्रों का उद्देश्य है — विज्ञान को आर्थिक समृद्धि के साथ-साथ पारिस्थितिक जिम्मेदारी का भी माध्यम बनाना।



6. भविष्य का नागरिक — ज्ञान और नवाचार का संगम

“भविष्य वही है जहाँ हर नागरिक वैज्ञानिक बन सकता है।”
मध्य प्रदेश 2047 तक एक ऐसे समाज की परिकल्पना कर रहा है जो ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था का मॉडल बने।
इस लक्ष्य के लिए एड-टेक प्लेटफॉर्म, इनोवेशन लैब्स और स्किल यूनिवर्सिटीज़ को सुदृढ़ किया जा रहा है।
राज्य में “वर्चुअल इनोवेशन कैंपस” की स्थापना की जा रही है जहाँ विद्यार्थी, शोधकर्ता और उद्योग प्रतिनिधि मिलकर सामाजिक समस्याओं के तकनीकी समाधान विकसित करेंगे।
यह मध्य प्रदेश को भारत के “साइंस एंड इनोवेशन हब” के रूप में प्रतिष्ठित करेगा।

उपसंहार — 2047 का मध्य प्रदेश : विज्ञान में संस्कृति, संस्कृति में विज्ञान

“भविष्य का भारत केवल डिजिटल नहीं होगा, वह संवेदनशील भी होगा।”
मध्य प्रदेश का तकनीकी दृष्टिकोण विज्ञान को केवल विकास का साधन नहीं, बल्कि संस्कृति का विस्तार मानता है।
यह वह दर्शन है जहाँ मशीनें मानवता की सेवा करती हैं, और डेटा करुणा का दूत बन जाता है।
2047 का मध्य प्रदेश केवल ऊर्जा, उद्योग या अंतरिक्ष के क्षेत्र में नहीं, बल्कि वैज्ञानिक चेतना, शिक्षा और सामाजिक समरसता में भी अग्रणी होगा।
यह वह राज्य होगा जहाँ नवाचार का अर्थ केवल आविष्कार नहीं, बल्कि जन-कल्याण का विस्तार होगा।
और तब यह वाक्य सत्य होगा —
“जहाँ तकनीक है, वहाँ मानवता भी है; जहाँ विज्ञान है, वहाँ संस्कृति भी।”



कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI): मानव मस्तिष्क से परे एक नई क्रांति

भूमिका : जब मशीनें सोचने लगीं...

विज्ञान की यात्रा सदियों से मनुष्य के सीमित अनुभवों का विस्तार रही है — पहिए से लेकर उपग्रह तक, गणना से लेकर कल्पना तक।
किन्तु बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जब वैज्ञानिकों ने यह प्रश्न उठाया — "क्या मशीनें सोच सकती हैं?" — तब मानव सभ्यता ने एक ऐसे द्वार को स्पर्श किया, जिसके उस पार कृत्रिम बुद्धिमत्ता का युग आरंभ हुआ।

आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence) केवल एक तकनीकी नवाचार नहीं, बल्कि मानवीय मस्तिष्क की प्रतिध्वनि बन चुकी है।
यह वह विज्ञान है जो मशीनों को अनुभव से सीखने, तर्क करने, और स्वायत्त निर्णय लेने की क्षमता देता है।
वास्तव में, AI उस सीमारेखा को मिटा रहा है जो अब तक "सोचने वाले" और "कार्य करने वाले" के बीच थी।

विज्ञान से दर्शन तक: कृत्रिम बुद्धिमत्ता का बौद्धिक आधार

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की संकल्पना का जन्म किसी प्रयोगशाला में नहीं, बल्कि विचार में हुआ।
गणितज्ञ एलन ट्यूरिंग ने 1950 में जब "ट्यूरिंग टेस्ट" का प्रस्ताव रखा, तब उन्होंने मनुष्य और मशीन के बीच बुद्धि की समानता का प्रश्न उठाया।
उनकी दृष्टि में, यदि कोई मशीन मानव के समान उत्तर दे सके, तो उसे "सोचने वाली" कहा जा सकता है।
यही प्रश्न आज हमारे समय का सबसे महत्वपूर्ण विमर्श बन चुका है।
AI का मूल सिद्धांत सरल है — मशीन को अनुभव से सीखना सिखाना।
इसे "मशीन लर्निंग" कहा जाता है, जो डेटा के विश्लेषण से पैटर्न पहचानने और भविष्यवाणी करने की क्षमता प्रदान करती है।
इसके बाद "डीप लर्निंग" आया, जिसने मानव मस्तिष्क की तरह कृत्रिम न्यूरल नेटवर्क का निर्माण किया — जहाँ प्रत्येक नोड (Neuron) एक सूक्ष्म विचार की इकाई की तरह कार्य करता है।
यहीं से मशीन ने केवल आदेश नहीं, बल्कि तर्क और अनुमान करना आरंभ किया।



कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रभाव: परिवर्तन से परे एक युगांतर

कृत्रिम बुद्धिमत्ता अब केवल एक सॉफ्टवेयर टूल नहीं रही; यह सभ्यता की नई कार्यसंस्कृति बन चुकी है।
इसका प्रभाव जीवन के हर क्षेत्र में दिखाई दे रहा है।
चिकित्सा जगत में AI ने निदान की प्रक्रिया को क्रांतिकारी रूप से बदल दिया है।
कैंसर, हृदय रोग और नेत्र रोगों की पहचान अब मशीनें माइक्रोसेकंड में कर सकती हैं।
भारत में AI आधारित मेडिकल इमेजिंग सिस्टम और हेल्थ चैटबॉट्स ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाओं के लिए वरदान साबित हो रहे हैं।
मध्य प्रदेश में "PM श्री एयर एम्बुलेंस सेवा" जैसी परियोजनाएँ भी इसी तकनीकी दृष्टिकोण का प्रतिफल हैं, जहाँ निर्णय, सूचना और कार्रवाई — तीनों AI के सहयोग से संचालित हैं।
शिक्षा के क्षेत्र में, AI आधारित "स्वयंसिद्धि बॉट" ने विद्यालय शिक्षा को नया आयाम दिया है।
यह विद्यार्थियों को उनकी क्षमता के अनुसार व्यक्तिगत अभ्यास और पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराता है।
यह शिक्षा को "एकरूप" नहीं, बल्कि व्यक्तिगत अनुभव बना रहा है।
कृषि में, सेंसर और AI मॉडल अब मृदा की नमी, फसल रोग और मौसम परिवर्तन की पूर्वसूचना देकर किसान को समय से निर्णय लेने में सक्षम बना रहे हैं।
इसे ही "स्मार्ट कृषि" कहा जा रहा है — जहाँ खेत और क्लाउड का संवाद एक साथ चलता है।
प्रशासन और नीति निर्माण में AI का प्रयोग सबसे व्यापक रूप से हुआ है।
मध्य प्रदेश में "AI भारत @ MP" जैसे कार्यक्रम इस दिशा में अग्रणी पहल हैं, जहाँ AI शासन को डेटा-सक्षम, पारदर्शी और जनोन्मुखी बना रहा है।
अब निर्णय केवल अनुभूति नहीं, बल्कि सटीक विश्लेषण पर आधारित हैं।

कला, सृजन और भाषा: जब मशीनें कल्पना करने लगीं

AI का सबसे रोचक पक्ष यह है कि उसने अब मनुष्य की रचनात्मकता को भी चुनौती दी है।
आज "जनरेटिव AI" मॉडल कविता लिख रहे हैं, संगीत बना रहे हैं, और चित्र रच रहे हैं।
भाषा क्षेत्र में, "भारत जेन" जैसे मॉडल अब हिंदी, निमाड़ी, बघेली और बुंदेलखंडी जैसी स्थानीय बोलियों को डिजिटल मंच पर ला रहे हैं।
यह केवल तकनीकी उपलब्धि नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पुनर्जागरण भी है — जहाँ हर भाषा, हर आवाज़ को तकनीक में समान स्थान मिल रहा है।
AI ने यह साबित किया है कि रचना केवल भावनाओं का परिणाम नहीं, बल्कि पैटर्न और संदर्भों का भी उत्पाद हो सकती है।
फिर भी, मानव और मशीन की सृजनात्मकता में एक गहरा अंतर है — मशीनें नकल कर सकती हैं, पर अर्थ नहीं समझ सकतीं।
यही वह सीमा है जो तकनीक को मानवता के अधीन रखती है।



नैतिकता और नियंत्रण: तकनीक का मानवीय दायरा

हर बड़ी शक्ति अपने साथ एक बड़ा प्रश्न लेकर आती है — “इसका प्रयोग किसके लिए और किस हद तक?”
कृत्रिम बुद्धिमत्ता के साथ यह प्रश्न और भी गहरा है।
यदि कोई स्वायत्त कार दुर्घटना करे, तो दोष किसका?
यदि कोई AI एल्गोरिद्म पक्षपातपूर्ण डेटा पर आधारित हो और गलत निर्णय ले, तो जिम्मेदारी किसकी?
AI के युग में नैतिकता (Ethics) और उत्तरदायित्व (Accountability) दो सबसे महत्वपूर्ण स्तंभ हैं।
संयुक्त राष्ट्र, यूनेस्को और यूरोपीय संघ जैसी संस्थाएँ पहले ही “AI Ethics Framework” जारी कर चुकी हैं।
भारत ने भी “AI for All” और “AI for Humanity” के सिद्धांतों को नीति का आधार बनाया है।
इसका उद्देश्य है — तकनीक को नियंत्रण का नहीं, कल्याण का साधन बनाना।
डेटा सुरक्षा, गोपनीयता और पारदर्शिता वे क्षेत्र हैं जहाँ मानव निरीक्षण आवश्यक रहेगा।
AI को नैतिक बनाना तकनीकी नहीं, बल्कि सामाजिक दायित्व है।

भारत का मार्ग: आत्मनिर्भर कृत्रिम बुद्धिमत्ता की दिशा में

भारत ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता को केवल तकनीकी उन्नति नहीं, बल्कि सामाजिक सशक्तिकरण के साधन के रूप में देखा है।
“राष्ट्रीय कृत्रिम बुद्धिमत्ता रणनीति” (NITI Aayog, 2018) ने स्वास्थ्य, कृषि, शिक्षा, स्मार्ट शहर और स्मार्ट प्रशासन को प्राथमिक क्षेत्र घोषित किया।
अब देशभर में AI इनोवेशन हब्स, स्टार्टअप इनक्यूबेशन लैब्स और क्वांटम AI सेंटर स्थापित किए जा रहे हैं।
मध्य प्रदेश इस दिशा में अग्रणी बनकर उभरा है।
भोपाल और इंदौर में चल रहे AI स्किल डेवलपमेंट प्रोग्राम युवाओं को भविष्य की तकनीकी भाषा सिखा रहे हैं।
ग्वालियर में “सेमीकंडक्टर सेंटर ऑफ एक्सीलेंस” और “ग्रीन चिप टेक्नोलॉजी” अनुसंधान परियोजनाएँ राज्य को तकनीकी आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर कर रही हैं।
भारत की शक्ति उसकी जनसंख्या नहीं, उसकी प्रतिभा है — और AI उस प्रतिभा को अवसर में बदलने का साधन है।
यह तकनीक भारत को “वैश्विक इनोवेशन इंडेक्स” में शीर्ष पाँच देशों की श्रेणी में पहुँचा सकती है, यदि हम इसे समावेश और संवेदना के साथ अपनाएँ।



भविष्य-दृष्टि : मानव और मशीन का सहअस्तित्व

भविष्य की सबसे बड़ी चुनौती यह नहीं होगी कि AI क्या कर सकता है, बल्कि यह कि हम उसे क्या करने देंगे।
AI के बढ़ते प्रभाव के बीच, शिक्षा प्रणाली में "नैतिक तकनीकी साक्षरता" का समावेश अनिवार्य होगा।
हमें ऐसी पीढ़ी तैयार करनी होगी जो तकनीक का उपयोग केवल लाभ के लिए नहीं, बल्कि समाज के सुधार के लिए करे।
भविष्य का युग मानव और मशीन के सहअस्तित्व का युग होगा।
AI के साथ मनुष्य निर्माता नहीं, बल्कि सहयोगी की भूमिका निभाएगा।
जहाँ मानव बुद्धि दिशा देगी, और मशीन गति।
यही समन्वय सच्ची मानवीय तकनीक का आधार बनेगा।

उपसंहार : जब बुद्धि और संवेदना मिलें...

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का युग आ चुका है — पर यह अभी भी मानवता की देहरी पर खड़ा है।
इसकी सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि हम इसे कितनी नैतिकता, संवेदना और दूरदर्शिता से अपनाते हैं।
AI न तो वरदान है, न अभिशाप — यह केवल प्रतिबिंब है हमारे इरादों का।
"मशीनें सोचेंगी, लेकिन दिशा मनुष्य तय करेगा।"
जब तक यह समीकरण कायम रहेगा, तब तक कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानव सभ्यता की सबसे बड़ी उपलब्धि बनी रहेगी —
एक ऐसा पुल, जो मस्तिष्क से मस्तिष्क को नहीं, बल्कि विज्ञान से मानवता को जोड़ता है।

ड्रोनटेक: मध्यप्रदेश में उड़ान भरने वाला भविष्य

(सौम्या साइंस एंड रिसर्च फाउंडेशन द्वारा प्रस्तुत — मध्यप्रदेश के तकनीकी उत्कर्ष पर केंद्रित विशेष लेख)

भूमिका: जब आकाश ने तकनीक से संवाद किया

विज्ञान का असली अर्थ तब साकार होता है जब वह केवल प्रयोगशालाओं की सीमाओं से बाहर निकलकर समाज के जीवन में उतरता है।
मध्यप्रदेश, जिसकी मिट्टी में सृजन और नवाचार की परंपरा गहराई तक रची-बसी है, आज तकनीक के नए आयाम गढ़ रहा है।
इसी भावभूमि पर आयोजित **"DroneTech — Workshop & Expo 2025"** ने यह सिद्ध कर दिया कि राज्य अब केवल भूमि पर नहीं, आकाश में भी विकास की रेखाएँ खींचने लगा है।
दिनांक 30–31 अक्टूबर 2025, स्थान — मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद (MPCST), भोपाल) — यह दो दिन केवल एक प्रदर्शनी नहीं, बल्कि प्रौद्योगिकी और नीति के संवाद का मंच बन गए।
यह आयोजन मध्यप्रदेश की तकनीकी आत्मनिर्भरता के संकल्प को मूर्त रूप देने वाला एक ऐतिहासिक क्षण था, जहाँ विचार, नवाचार और उद्योग तीनों एक ही छत के नीचे एकत्र हुए।

सह-आयोजक संस्थाएँ: तकनीकी एकता का उदाहरण

इस भव्य आयोजन के मुख्य आयोजक थे —

मध्यप्रदेश राज्य इलेक्ट्रॉनिक्स विकास निगम (MPSEDC),
मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद (MPCST),
और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, इंदौर (IIT Indore)।

इन तीनों संस्थानों का सहयोग एक आदर्श उदाहरण था कि जब शासन, विज्ञान और शिक्षा एक साथ मिलते हैं, तो तकनीकी प्रगति केवल लक्ष्य नहीं, एक सामाजिक परिवर्तन बन जाती है।
MPCST ने इस आयोजन के माध्यम से यह प्रमाणित किया कि उसका कार्यक्षेत्र केवल वैज्ञानिक अनुसंधान तक सीमित नहीं है; वह प्रौद्योगिकी को जनकल्याण के स्तर तक पहुँचाने की दिशा में ठोस कदम उठा रहा है।

ड्रोन: नवाचार से समाधान की दिशा में

आज का ड्रोन केवल उड़ने वाला यंत्र नहीं, बल्कि डेटा, दृष्टि और निर्णय का त्रिवेणी-संगम है।
यह आधुनिक सूचना-प्रणाली का वह युग है जहाँ आकाश से देखने वाली नज़र ज़मीन पर परिवर्तन लाने में सक्षम है।
कृषि क्षेत्र में ड्रोन ने नई संभावनाएँ खोली हैं —
अब फसल की निगरानी, पोषक तत्वों का विश्लेषण और कीटनाशक छिड़काव सटीकता और कम लागत दोनों के साथ संभव है।
मल्टी-स्पेक्ट्रल कैमरे किसानों को मिट्टी की नमी, रोगग्रस्त पत्तियों और उत्पादन की संभावनाओं का पूर्वानुमान देते हैं।
यह कृषि को पारंपरिक श्रम से वैज्ञानिक विश्लेषण की दिशा में अग्रसर करता है।



वन विभाग के लिए ड्रोन आग लगने की घटनाओं, अवैध कटाई और वन्यजीव गतिशीलता की निगरानी में वरदान सिद्ध हो रहे हैं।
इनकी थर्मल और नाइट-विज़न क्षमताएँ जंगलों की सुरक्षा को एक नई दृष्टि दे रही हैं।
आपदा प्रबंधन में ड्रोन की भूमिका जीवनरक्षक बन चुकी है।
भूकंप, बाढ़ या भूस्खलन जैसी स्थितियों में, ये उपकरण तुरंत प्रभावित क्षेत्रों की मैपिंग कर गोल्डन ऑवर में राहत सामग्री और दवाइयाँ पहुँचा रहे हैं।
शहरी प्रशासन और औद्योगिक क्षेत्रों में, 3D मैपिंग, निर्माण निरीक्षण, पाइपलाइन सर्वे, जलभराव और प्रदूषण नियंत्रण जैसे कार्य अब अधिक तीव्र और सटीक हो गए हैं।
खनन क्षेत्रों में संसाधनों की निगरानी और सुरक्षा के लिए ड्रोन-आधारित निगरानी प्रणालियाँ राज्य में नई पारदर्शिता ला रही हैं।

MPCST का योगदान: अनुसंधान से नीति तक

ड्रोनटेक आयोजन की आत्मा थी — मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद (MPCST)।
परिषद ने केवल आयोजन नहीं किया, बल्कि इस पूरी पहल को वैज्ञानिक दृष्टि और नीतिगत दिशा प्रदान की।
MPCST ने वर्षों से राज्य में उच्च-प्रौद्योगिकी के स्वदेशीकरण को प्रोत्साहित किया है।
इसने ड्रोन अनुसंधान के लिए तकनीकी संस्थानों को सहयोग दिया, पायलट प्रोजेक्ट्स के लिए डेटा सपोर्ट उपलब्ध कराया और नीतिगत सलाहकार के रूप में कार्य किया।
इस कार्यशाला के दौरान परिषद के विशेषज्ञों ने स्पष्ट किया कि ड्रोन तकनीक का उपयोग केवल प्रदर्शन के लिए नहीं, बल्कि समाज-उन्मुख समाधान के लिए होना चाहिए।
उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि यदि ड्रोन तकनीक को सही नीति, प्रशिक्षण और सुरक्षा मानकों के साथ जोड़ा जाए, तो यह राज्य की आर्थिक और सामाजिक संरचना को गहराई से प्रभावित कर सकती है।
MPCST ने "ड्रोन प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केंद्र" स्थापित करने की परिकल्पना भी रखी, जहाँ युवाओं को उड़ान, डेटा विश्लेषण, रिमोट सेन्सिंग, और AI-आधारित नियंत्रण प्रणालियों की शिक्षा दी जाएगी।
यह पहल न केवल रोजगार सृजन करेगी, बल्कि मध्यप्रदेश को ड्रोन-टेक्नोलॉजी हब के रूप में स्थापित करेगी।

शिक्षा, स्टार्टअप और नवाचार का संगम

ड्रोनटेक एक्सपो में IIT इंदौर, RGPV और निजी तकनीकी संस्थानों के छात्र और स्टार्टअप्स अपने प्रोटोटाइप लेकर पहुँचे।
कई स्थानीय स्टार्टअप्स ने कृषि, रक्षा और पर्यावरण मॉनिटरिंग के लिए स्वदेशी ड्रोन प्रस्तुत किए।
इनमें से कुछ ने भारतीय वायुसेना और इसरो जैसी संस्थाओं के साथ सहयोग की दिशा में कदम बढ़ाए हैं।
MPCST ने इस अवसर पर "Innovation Connect Program" की घोषणा की, जिसके तहत चयनित स्टार्टअप्स को वित्तीय सहायता, प्रयोगशाला सुविधाएँ और उद्योग सलाहकार उपलब्ध कराए जाएँगे।
इस पहल से युवाओं को यह विश्वास मिला कि उनके विचार केवल प्रतियोगिता तक सीमित नहीं रहेंगे, बल्कि राज्य के विकास-ढांचे का हिस्सा बन सकते हैं।



डिजिटल लोकतंत्रीकरण

डिजिटल लोकतंत्रीकरण का अर्थ है—सूचना, संवाद, सेवाओं और निर्णयों को डिजिटल माध्यमों से इस प्रकार सुलभ बनाना कि हर नागरिक भागीदार बन सके। यह केवल तकनीकी सुविधा नहीं, बल्कि एक सामाजिक अधिकार है जो पारदर्शिता, जवाबदेही और जनसहभागिता को बढ़ावा देता है।

1. डिजिटल शासन की पारदर्शिता

मध्य प्रदेश सरकार ने ई-गवर्नेंस को बढ़ावा देकर शासन को पारदर्शी और उत्तरदायी बनाया। 'MP e-Governance Portal' पर योजनाओं, बजट, परियोजनाओं और शिकायतों की जानकारी सार्वजनिक की गई। इससे नागरिकों को यह जानने का अधिकार मिला कि उनके क्षेत्र में क्या कार्य हो रहे हैं और किस स्तर पर।

2. जन सेवा केंद्रों का विस्तार

राज्य के हर गाँव और वार्ड में 'जन सेवा केंद्र' स्थापित किए गए जहाँ नागरिक आधार कार्ड, राशन, पेंशन, स्वास्थ्य सेवाएँ और शिक्षा से जुड़ी जानकारी डिजिटल रूप से प्राप्त कर सकते हैं। यह केंद्र डिजिटल लोकतंत्रीकरण के सबसे प्रभावी माध्यम बने हैं।

3. डिजिटल शिक्षा और विज्ञान पहुँच

'स्मार्ट क्लासरूम' और 'वर्चुअल साइंस क्लासरूम' जैसी पहल ने छात्रों को डिजिटल माध्यम से विज्ञान और तकनीकी शिक्षा उपलब्ध कराई। ग्रामीण क्षेत्रों में मोबाइल विज्ञान वैन और टैबलेट आधारित शिक्षण ने डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा दिया।

4. डिजिटल संवाद और सुझाव मंच

राज्य सरकार ने 'जन सुझाव पोर्टल' और 'मुख्यमंत्री संवाद एप' जैसे प्लेटफॉर्म लॉन्च किए जहाँ नागरिक सीधे शासन से संवाद कर सकते हैं, सुझाव दे सकते हैं और शिकायत दर्ज कर सकते हैं। इससे नीति निर्माण में जनभागीदारी सुनिश्चित हुई।

5. डिजिटल पंचायत और स्थानीय शासन

'स्मार्ट पंचायत' योजना के तहत ग्राम पंचायतों को टैबलेट, इंटरनेट और डिजिटल प्रशिक्षण दिया गया। अब ग्राम सभा की बैठकें ऑनलाइन होती हैं, योजनाओं की निगरानी डिजिटल डैशबोर्ड पर होती है और निर्णयों को सार्वजनिक किया जाता है।

6. डिजिटल स्वास्थ्य सेवाएँ

'आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन' के तहत नागरिकों को हेल्थ आईडी, टेलीमेडिसिन और ऑनलाइन परामर्श की सुविधा दी गई। ग्रामीण क्षेत्रों में मोबाइल हेल्थ यूनिट्स को डिजिटल उपकरणों से लैस किया गया जिससे दूरस्थ क्षेत्रों में भी स्वास्थ्य सेवाएँ पहुँचीं।

7. डिजिटल आजीविका और स्टार्टअप्स

राज्य ने विज्ञान आधारित स्टार्टअप्स को डिजिटल मंच पर मेंटरशिप, फंडिंग और नेटवर्किंग की सुविधा दी। 'MP Startup Portal' पर नवाचारियों को पंजीकरण, प्रशिक्षण और निवेशकों से जुड़ने का अवसर मिला।

8. खुला डेटा और नागरिक निगरानी

'MP Open Data Portal' पर शासन से जुड़े डेटा सार्वजनिक किए गए जिससे शोधकर्ता, छात्र और नागरिक योजनाओं की निगरानी कर सकें। इससे शासन में पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ावा मिला।

9. डिजिटल साक्षरता अभियान

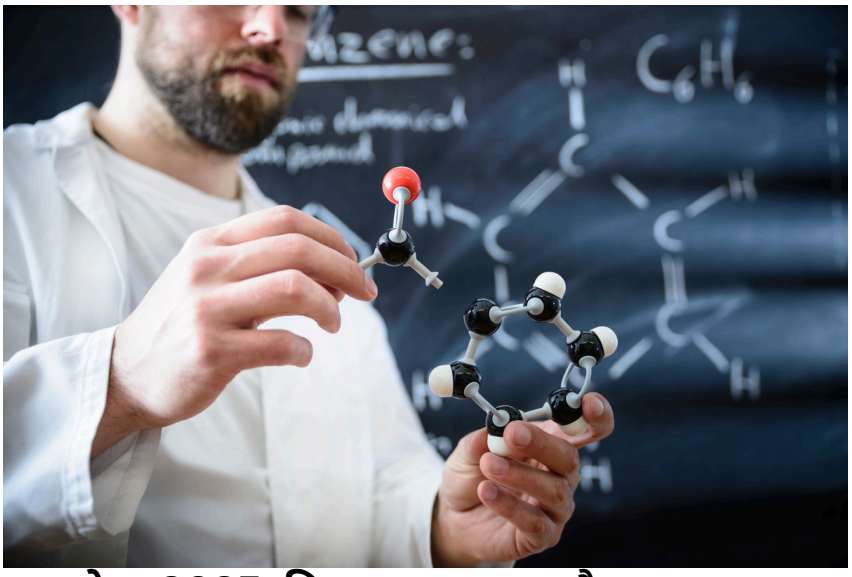
'डिजिटल साक्षर भारत' अभियान के तहत ग्रामीण और वंचित वर्गों को कंप्यूटर, इंटरनेट और मोबाइल एप्स के उपयोग का प्रशिक्षण दिया गया। इससे नागरिक डिजिटल सेवाओं का लाभ उठाने में सक्षम हुए।

निष्कर्ष: तकनीक से जनतंत्र का विस्तार

डिजिटल लोकतंत्रीकरण ने मध्य प्रदेश में शासन को अधिक पारदर्शी, उत्तरदायी और समावेशी बनाया है। यह प्रक्रिया केवल तकनीकी उन्नति नहीं, बल्कि सामाजिक सशक्तिकरण का माध्यम है। जब हर नागरिक को डिजिटल माध्यम से सूचना, सेवा और निर्णय में भागीदारी का अधिकार मिलता है, तब सच्चा लोकतंत्र साकार होता है।

डिजिटल तकनीक ने शासन की दीवारों को पार कर नागरिकों के हाथों में निर्णय की शक्ति दी है। अब योजनाओं की जानकारी, बजट का विवरण, शिकायतों की स्थिति और विकास कार्यों की निगरानी एक क्लिक पर उपलब्ध है। यह पारदर्शिता केवल सूचना तक पहुँच नहीं, बल्कि नागरिकों को शासन में भागीदार बनाने की प्रक्रिया है। जब एक किसान मोबाइल एप पर मौसम की जानकारी देखता है, या एक छात्र ऑनलाइन विज्ञान पाठ पढ़ता है, तो वह डिजिटल लोकतंत्र का हिस्सा बनता है।





भोपाल विज्ञान मेला 2025: विज्ञान, नवाचार और जनजागरण का महोत्सव

थीम और उद्देश्य

“विकसित भारत 2047 का आधार—विज्ञान एवं नवाचार” थीम पर आधारित भोपाल विज्ञान मेला 2025 केवल एक प्रदर्शनी नहीं, बल्कि विज्ञान, समाज और शासन के संवाद का मंच था। इसका मुख्य उद्देश्य था—विज्ञान को जन-जन तक पहुँचाना, नवाचार को प्रोत्साहित करना और युवाओं में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देना। इस आयोजन ने यह संदेश दिया कि विज्ञान केवल प्रयोगशालाओं तक सीमित नहीं, बल्कि समाज के हर स्तर पर परिवर्तन का माध्यम है।

प्रमुख आकर्षण

1. विज्ञान मॉडल प्रतियोगिता

मेले की प्रमुख आकर्षणों में से एक रही विज्ञान मॉडल प्रतियोगिता, जिसमें स्कूल और कॉलेज स्तर के छात्रों ने पर्यावरण, ऊर्जा, स्वास्थ्य, अंतरिक्ष, कृषि और जल संरक्षण जैसे विषयों पर अपने नवाचार प्रस्तुत किए। चयनित मॉडलों को प्रदर्शनी में प्रदर्शित किया गया और विजेताओं को राज्य स्तर पर सम्मानित किया गया। इन युवा नवाचारों ने यह साबित किया कि नई पीढ़ी समाज की चुनौतियों के समाधान के लिए वैज्ञानिक दृष्टि से सोच रही है।

2. इसरो के निदेशक की प्रेरक उपस्थिति

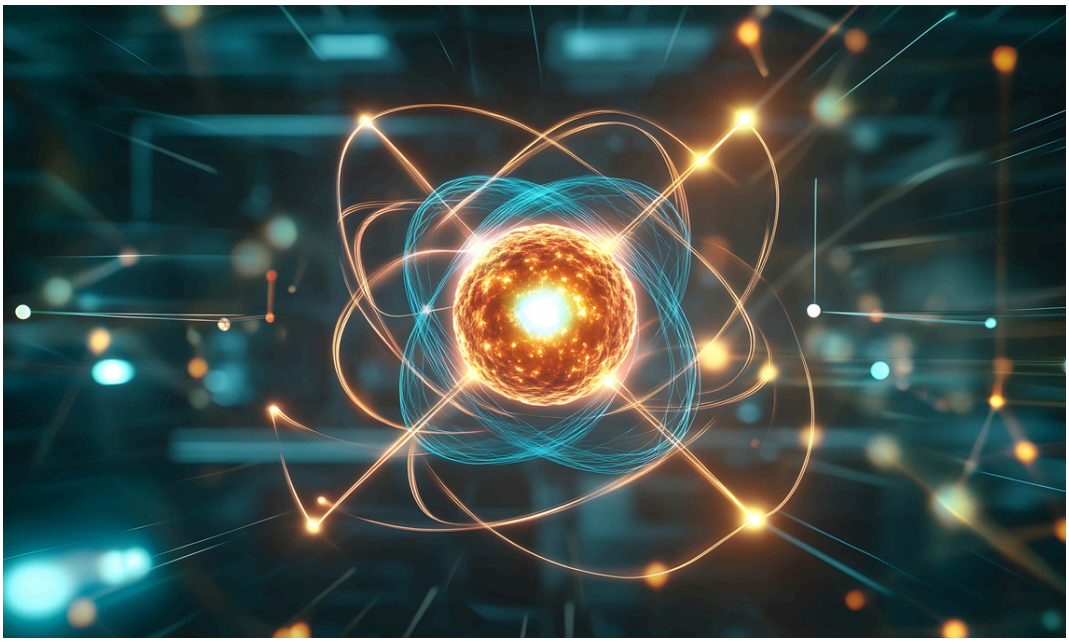
भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) के निदेशक ने उद्घाटन सत्र में विशेष रूप से भाग लिया और छात्रों को अंतरिक्ष विज्ञान के भविष्य पर प्रेरणादायक विचार साझा किए। उनके संबोधन ने युवाओं में विज्ञान और अनुसंधान के प्रति उत्साह और जिज्ञासा को नई उड़ान दी।

3. वैज्ञानिक संवाद सत्र

देश-विदेश के प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों ने AI (कृत्रिम बुद्धिमत्ता), जलवायु परिवर्तन, जैव प्रौद्योगिकी और क्वांटम कंप्यूटिंग जैसे समसामयिक विषयों पर संवाद किया। इन सत्रों में विज्ञान की नई सीमाओं और सामाजिक उपयोगिता पर चर्चा हुई, जिससे प्रतिभागियों को विज्ञान के आधुनिक स्वरूप को समझने का अवसर मिला।

4. स्टार्टअप और नवाचार प्रदर्शनी

राज्य के विभिन्न विज्ञान-आधारित स्टार्टअप्स ने अपने उत्पाद और सेवाएँ प्रदर्शित कीं। इस प्रदर्शनी ने युवाओं को उद्यमिता और तकनीकी नवाचार की दिशा में प्रेरित किया और यह दिखाया कि कैसे विज्ञान स्थानीय समस्याओं के समाधान के लिए आर्थिक अवसर भी बन सकता है।



जनसहभागिता और समावेशिता

भोपाल विज्ञान मेला केवल वैज्ञानिकों या छात्रों तक सीमित नहीं रहा। इसमें किसानों, महिला स्वयं सहायता समूहों, दिव्यांग छात्रों और स्थानीय कारीगरों ने भी सक्रिय भागीदारी की। विभिन्न सत्रों के माध्यम से विज्ञान को स्थानीय जीवन से जोड़ने की दिशा में सार्थक प्रयास किए गए।

- कृषि में विज्ञान का उपयोग: किसानों को ड्रोन तकनीक, मिट्टी परीक्षण और जल प्रबंधन पर प्रशिक्षण दिया गया।
- महिला नवाचार मंच: महिला वैज्ञानिकों और उद्यमियों ने अपने नवाचार प्रस्तुत किए और विज्ञान में लैंगिक समावेशिता पर चर्चा की।

इन सत्रों ने यह स्पष्ट किया कि विज्ञान तभी सार्थक है जब वह समाज के हर वर्ग तक पहुँचे और सबके जीवन को स्पर्श करे।

डिजिटल विज्ञान अनुभव

विज्ञान मेले में डिजिटल युग की झलक भी स्पष्ट रूप से दिखाई दी।

- वर्चुअल रियलिटी प्रयोगशाला में छात्रों ने VR तकनीक के माध्यम से अंतरिक्ष यात्रा, मानव शरीर की संरचना और पर्यावरणीय बदलावों का प्रत्यक्ष अनुभव किया।
- डिजिटल विज्ञान संवाद एप के माध्यम से प्रतिभागियों ने वैज्ञानिकों से सीधे प्रश्न पूछे और लाइव इंटरैक्टिव सत्रों में भाग लिया।

यह अनुभव युवाओं को न केवल विज्ञान के सिद्धांतों से जोड़ता है, बल्कि उन्हें डिजिटल भविष्य के लिए भी तैयार करता है।

नवाचार और युवा प्रतिभा का मंच

भोपाल विज्ञान मेला 2025 ने राज्य के युवाओं को अपने विचारों और आविष्कारों को प्रस्तुत करने का एक सशक्त मंच दिया। ऊर्जा संरक्षण, जल प्रबंधन, स्मार्ट खेती, स्वास्थ्य तकनीक और स्वच्छ ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में छात्रों ने अनोखे मॉडल पेश किए। इन नवाचारों ने यह दर्शाया कि युवा पीढ़ी केवल विज्ञान सीख नहीं रही, बल्कि उसे समाज के विकास के लिए प्रयोग में ला रही है।



पर्यावरण और सतत विकास पर केंद्रित सत्र

'हरित विज्ञान' नामक विशेष सत्र में जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता संरक्षण और नवीकरणीय ऊर्जा पर गहन चर्चा हुई। छात्रों ने सौर ऊर्जा चालित उपकरण, जल पुनर्चक्रण प्रणाली, और प्लास्टिक मुक्त नवाचार प्रस्तुत किए। इस सत्र ने यह संदेश दिया कि विज्ञान पृथ्वी के संरक्षण का सबसे सशक्त साधन बन सकता है।

विज्ञान और संस्कृति का संगम

मेले में विज्ञान को भारतीय संस्कृति से जोड़ने की भी सराहनीय पहल की गई। 'भारतीय ज्ञान प्रणाली और विज्ञान' नामक प्रदर्शनी में आयुर्वेद, वास्तुशास्त्र, खगोलशास्त्र और पारंपरिक तकनीकों को आधुनिक विज्ञान के साथ जोड़ा गया। इस प्रदर्शनी ने प्रतिभागियों को यह समझाया कि भारत की प्राचीन परंपराओं में भी वैज्ञानिक दृष्टिकोण गहराई से निहित है।

शिक्षक प्रशिक्षण और विज्ञान शिक्षण कार्यशालाएँ

भोपाल विज्ञान मेले में शिक्षकों के लिए आयोजित कार्यशालाएँ विशेष आकर्षण रहीं। इन सत्रों में शिक्षकों को नवीनतम शिक्षण तकनीक, डिजिटल प्रयोगशालाओं, और छात्र-केंद्रित शिक्षण विधियों से परिचित कराया गया।
इन कार्यशालाओं का उद्देश्य था—शिक्षकों को केवल विषय विशेषज्ञ नहीं, बल्कि नवाचार प्रेरक और संवादकर्ता बनाना। इस पहल ने यह स्पष्ट किया कि जब शिक्षक नवाचार से जुड़ते हैं, तो विज्ञान केवल विषय नहीं रह जाता—वह प्रेरणा और परिवर्तन का माध्यम बन जाता है।

निष्कर्ष

भोपाल विज्ञान मेला 2025 ने यह सिद्ध किया कि विज्ञान केवल प्रयोगशालाओं का विषय नहीं, बल्कि जनजीवन का उत्सव है। इस आयोजन ने युवाओं को प्रेरित किया, समाज को जोड़ा, और विज्ञान को जन-जन का विषय बनाया।
यह मेला मध्य प्रदेश में विज्ञान के लोकतंत्रीकरण की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम रहा—जहाँ विचार, नवाचार और संवाद एक साथ मिलकर "विकसित भारत 2047" के स्वप्न को साकार करने की ओर अग्रसर हुए।



मध्यप्रदेश विज्ञान विकास के परिणाम : नवाचार से सशक्त होती अर्थव्यवस्था

1. आर्थिक वृद्धि और सकल राज्य घरेलू उत्पाद (GSDP) में बढ़ोतरी

वित्त वर्ष 2024–25 में मध्यप्रदेश की कुल सकल राज्य घरेलू उत्पाद (GSDP) लगभग ₹15,03,395 करोड़ तक पहुँची, जो पिछले वर्ष की तुलना में 11.05% की उल्लेखनीय वृद्धि दर्शाती है।

यह वृद्धि केवल औद्योगिक विस्तार का परिणाम नहीं है, बल्कि विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार-आधारित नीतियों के सफल क्रियान्वयन का प्रमाण है।

राज्य में नए उद्योगों, वैज्ञानिक बुनियादी ढाँचे और टेक्नोलॉजी-ड्रिवन प्रोजेक्ट्स के बढ़ते निवेश ने आर्थिक आधार को मजबूत किया है।

2. निर्यात में सुधार और वैश्विक प्रतिस्पर्धा

मध्यप्रदेश ने वर्ष 2024–25 में निर्यात क्षेत्र में लगभग 6% की वृद्धि दर्ज की और राष्ट्रीय निर्यात रैंकिंग में 15वें से 11वें स्थान पर पहुँचा।

यह प्रगति फार्मास्यूटिकल्स, इंजीनियरिंग गुड्स, सोया उत्पाद और अन्य तकनीकी-आधारित कृषि उद्योगों के निर्यात में हुई वृद्धि के कारण संभव हुई।

राज्य की नीतियाँ अब टेक्नोलॉजी और कृषि-उद्योग के साझे विकास मॉडल को प्रोत्साहित कर रही हैं, जिससे अंतर्राष्ट्रीय बाजार में प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता बढ़ी है।

3. निवेश और उद्योग विकास में तेजी

राज्य में निवेश प्रस्तावों (Investment Proposals) की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है।
जीआईएस-भोपाल जैसे आयोजनों में बड़े एमओयू (MoUs) हुए हैं, जिनसे हजारों नए रोजगार अवसरों का सृजन होने की संभावना है।
सरकार ने औद्योगिक निवेश को प्रोत्साहित करने हेतु नीतियों को सरल बनाया है और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के सहयोग से नवाचार-उन्मुख औद्योगिक पारिस्थितिकी तंत्र तैयार किया जा रहा है।

4. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग की सक्रियता और नवाचार

राज्य का विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग नई प्रयोगशालाओं, आईटी परियोजनाओं, और साइबर सुरक्षा अवसंरचना के निर्माण की दिशा में सक्रिय है।
भू-पुरातत्व और खगोल विज्ञान जैसे क्षेत्रों में भी तकनीकी प्रगति हो रही है — उदाहरणस्वरूप डोंगला खगोलीय वेधशाला का ऑटोमेशन प्रोजेक्ट।
इन प्रयासों से शोध, डेटा एनालिटिक्स, और डिजिटल प्रशासन की दिशा में राज्य नई ऊँचाइयाँ छू रहा है।

5. संतुलित क्षेत्रीय विकास

मध्यप्रदेश की अर्थव्यवस्था में तीनों प्रमुख क्षेत्रों का संतुलित योगदान दिखाई देता है:

- प्राथमिक क्षेत्र (कृषि आदि): 44–45%
- द्वितीयक क्षेत्र (औद्योगिक उत्पादन): 19–20%
- तृतीयक क्षेत्र (सेवाएँ): 36–37%

यह आँकड़ा इस बात का द्योतक है कि विज्ञान और तकनीक केवल उद्योग तक सीमित नहीं, बल्कि कृषि, सेवा और ग्रामीण विकास के केंद्र में भी सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।
किसानों को विज्ञान-आधारित कृषि पद्धतियाँ, जैव-प्रौद्योगिकी और ड्रोन तकनीक के उपयोग से प्रत्यक्ष लाभ प्राप्त हो रहा है।

6. सामाजिक क्षेत्र में वैज्ञानिक सुधार

राज्य ने शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे सामाजिक क्षेत्रों में भी विज्ञान और तकनीक का समावेश बढ़ाया है।

- “पोषण भी, पढ़ाई भी” और “स्व-सहायता समूह सशक्तिकरण” जैसी योजनाओं में तकनीकी प्लेटफॉर्म और वैज्ञानिक पद्धतियों का उपयोग किया जा रहा है।
- स्वास्थ्य निगरानी, पोषण ट्रैकिंग, जल संरक्षण और कृषि तकनीक को सामाजिक कल्याण कार्यक्रमों से जोड़ा गया है।

इन पहलों ने जन-जीवन की गुणवत्ता और सेवा डिलीवरी की दक्षता दोनों में सुधार किया है।

7. निवेशकों का बढ़ता विश्वास और नीति सुधार

मुख्यमंत्री द्वारा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग को निर्देश दिए गए हैं कि भूमि आवंटन, निवेश अनुमति और आईटी प्रोजेक्ट्स की प्रक्रियाएँ और अधिक पारदर्शी और सुगम बनाई जाएँ।
MPSEDC (मध्यप्रदेश राज्य इलेक्ट्रॉनिक्स विकास निगम) को विभिन्न विभागों के आईटी और साइबर सुरक्षा प्रोजेक्ट्स की जिम्मेदारी सौंपी गई है, जिससे प्रशासनिक कार्यों में तकनीकी मजबूती आई है।

8. टेक ग्रोथ कॉन्क्लेव और रोजगार सृजन

Tech Growth Conclave 2025 में लगभग ₹20,000 करोड़ के निवेश प्रस्ताव सामने आए हैं, जिनसे लगभग 75,000 रोजगार अवसर सृजित होने की उम्मीद है।
निवेश का केंद्र आईटी पार्क, डेटा सेंटर, स्टार्टअप इनक्यूबेटर और डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स हैं।
यह प्रयास मध्यप्रदेश को "टेक्नोलॉजी हब" बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम है।

9. अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी और सेमीकंडक्टर क्षेत्र में पहल

राज्य अगस्त 2025 तक अपनी पहली Space-Tech Policy लॉन्च करने की तैयारी में है, जिसका उद्देश्य है—

- अनुसंधान एवं नवाचार को प्रोत्साहन,
- तकनीकी कौशल विकास,
- और राज्य को अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी केंद्र के रूप में विकसित करना।

साथ ही, इलेक्ट्रॉनिक्स और ESDM सेक्टर में लगभग ₹2,500 करोड़ के निवेश आकर्षित किए गए हैं, जिससे सेमीकंडक्टर निर्माण और इलेक्ट्रॉनिक्स डिज़ाइन उद्योग को बल मिला है।

10. जैव प्रौद्योगिकी और अनुसंधान में प्रगति

MP Biotechnology Council द्वारा कृषि, पर्यावरण और स्वास्थ्य-प्रौद्योगिकी से जुड़े अनेक प्रोजेक्ट्स स्वीकृत किए गए हैं।
इससे स्थानीय शोधकर्ताओं, उद्यमियों और स्टार्टअप्स को प्रोत्साहन मिला है।
इंदौर स्थित SGSITS जैसे संस्थान "Industrial Wastewater Purification" और "Plastic to Carbon Nanomaterials" जैसे शोध प्रोजेक्ट्स पर काम कर रहे हैं।

11. साइबर सुरक्षा और डिजिटल शासन

राज्य सरकार ने Cyber Security Excellence Center की स्थापना का प्रस्ताव रखा है।
साथ ही, डिजिटल गवर्नेंस पोर्टल्स के माध्यम से निवेश, प्रशासन और नागरिक सेवाओं को पारदर्शी बनाया जा रहा है।
इससे शासन प्रणाली अधिक जवाबदेह और दक्ष बन रही है।

12. स्थानीय इनक्यूबेशन और रोजगार सृजन

आईटी और इलेक्ट्रॉनिक्स सेक्टर के साथ-साथ टेक्नोलॉजी पार्क, इनक्यूबेशन सेंटर, और स्टार्टअप हब्स स्थापित किए जा रहे हैं, जिनसे युवाओं को स्थानीय स्तर पर रोजगार मिल रहा है।
राज्य की स्टार्टअप नीति ने नवाचार को प्रोत्साहन देकर स्थानीय उद्यमिता संस्कृति को सशक्त बनाया है।

निष्कर्ष

मध्यप्रदेश में विज्ञान और प्रौद्योगिकी का विकास केवल प्रयोगशालाओं या अनुसंधान तक सीमित नहीं रहा—यह अब आर्थिक, सामाजिक और मानवीय विकास का प्रेरक तत्व बन चुका है।
विज्ञान-आधारित शिक्षा, उद्योग, कृषि और प्रशासन में हो रहे सुधारों ने
राज्य को "विकसित भारत 2047" के लक्ष्यों की दिशा में अग्रसर किया है।



मध्यप्रदेश को विज्ञान से होने वाले भविष्य के लाभ

विज्ञान: प्रगति, समृद्धि और सतत विकास की कुंजी

मध्यप्रदेश ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में जो तेज़ी से कदम बढ़ाए हैं, वे आने वाले समय में राज्य को सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक और पर्यावरणीय सभी दृष्टियों से नई ऊँचाइयों तक पहुँचाएँगे। इन वैज्ञानिक विकासों का लाभ न केवल शहरों तक सीमित रहेगा, बल्कि गाँवों, किसानों, छात्रों और उद्योगों तक भी पहुँचेगा।

1. आर्थिक सशक्तिकरण और रोजगार वृद्धि

विज्ञान-आधारित उद्योगों, टेक्नोलॉजी पार्कों और स्टार्टअप हब्स के विस्तार से राज्य में लाखों नए रोजगार अवसर सृजित होंगे।

ड्रोन, स्पेस-टेक, बायोटेक और ग्रीन एनर्जी जैसे उभरते क्षेत्रों में निवेश से स्थानीय युवाओं को उच्चस्तरीय तकनीकी नौकरियाँ मिलेंगी।

इससे ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों के बीच आर्थिक असमानता घटेगी और "आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश" के लक्ष्य को बल मिलेगा।

2. कृषि में वैज्ञानिक नवाचार

Agri-Tech और बायोटेक्नोलॉजी के प्रयोग से किसानों की उत्पादकता और आमदनी में उल्लेखनीय वृद्धि होगी।

मृदा परीक्षण, सटीक सिंचाई (Precision Irrigation), ड्रोन आधारित फसल निगरानी, और स्मार्ट कृषि उपकरणों के उपयोग से खेती अधिक लाभकारी और पर्यावरण-अनुकूल बनेगी।

इससे राज्य का कृषि निर्यात बढ़ेगा और मध्यप्रदेश देश का Agri-Tech मॉडल राज्य बन सकेगा।

3. शिक्षा और कौशल विकास में उन्नति

IISER भोपाल, IIT इंदौर और अन्य विश्वविद्यालयों में स्थापित हो रहे अनुसंधान केंद्र युवाओं को आधुनिक विज्ञान और तकनीक से जोड़ रहे हैं।

Artificial Intelligence, Robotics, Space-Tech, Data Science, Quantum Computing जैसे क्षेत्रों में प्रशिक्षण और नवाचार से मध्यप्रदेश एक टेक्नोलॉजी हब के रूप में उभर सकता है।

इससे राज्य में रोजगार के साथ-साथ बौद्धिक पूंजी (Human Capital) भी सशक्त होगी।

4. पर्यावरणीय संतुलन और हरित ऊर्जा का विस्तार

मुरैना में बन रहा ग्रीन हाइड्रोजन प्लांट, सौर ऊर्जा परियोजनाएँ और नवीकरणीय ऊर्जा निवेश राज्य को स्वच्छ और सतत विकास की दिशा में अग्रसर कर रहे हैं।

कोयला और पारंपरिक ईंधनों पर निर्भरता घटने से प्रदूषण में कमी आएगी और राज्य जलवायु परिवर्तन से निपटने में सक्षम होगा।

यह पहल मध्यप्रदेश को हरित ऊर्जा के क्षेत्र में अग्रणी राज्य बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

5. स्वास्थ्य और जनकल्याण में सुधार

बायोटेक्नोलॉजी अनुसंधान के माध्यम से सस्ती और प्रभावी दवाओं का निर्माण संभव होगा।

मेडिकल डिवाइस पार्क, हेल्थ रिसर्च सेंटर, और डिजिटल हेल्थ रिकॉर्ड सिस्टम ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता बढ़ाएँगे।

एआई आधारित चिकित्सा प्रणाली रोगों की पहचान और उपचार को तेज़ बनाएगी, जिससे राज्य की स्वास्थ्य प्रणाली और अधिक सशक्त होगी।

6. डिजिटल और तकनीकी पारदर्शिता

सरकारी सेवाओं में Artificial Intelligence, Data Analytics, और Cyber Security के प्रयोग से शासन अधिक पारदर्शी और दक्ष बनेगा।

ई-गवर्नेंस, ऑनलाइन सेवा पोर्टल्स, और ब्लॉकचेन आधारित रिकॉर्ड सिस्टम भ्रष्टाचार में कमी लाएँगे और नागरिकों को सेवाएँ शीघ्र मिलेंगी।

मध्यप्रदेश डिजिटल प्रशासन के क्षेत्र में राष्ट्रीय मानक स्थापित करने की दिशा में अग्रसर है।

7. अंतर्राष्ट्रीय पहचान और निवेश आकर्षण

Space-Tech, Semiconductors, Robotics, और Electronics Manufacturing के क्षेत्रों में हो रही प्रगति से मध्यप्रदेश को वैश्विक पहचान मिलेगी।

विदेशी निवेशकों और अंतर्राष्ट्रीय तकनीकी साझेदारों की भागीदारी से राज्य में नए औद्योगिक केंद्र और नवाचार प्रयोगशालाएँ स्थापित होंगी।

इससे न केवल आर्थिक विकास गति पकड़ेगा, बल्कि मध्यप्रदेश भारत के तकनीकी मानचित्र पर अग्रणी राज्य के रूप में उभरेगा।

8. सांस्कृतिक और सामाजिक परिवर्तन

विज्ञान जागरूकता अभियानों, विज्ञान मेलों और छात्र-उन्मुख कार्यक्रमों से समाज में वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तार्किक सोच का प्रसार हो रहा है।

इससे अंधविश्वास, मिथक और असमानता जैसी सामाजिक बाधाएँ कम होंगी और समाज में तथ्य-आधारित सोच विकसित होगी।

विज्ञान अब केवल प्रयोगशाला का विषय नहीं रहेगा, बल्कि सांस्कृतिक चेतना और सामाजिक प्रगति का माध्यम बनेगा।

निष्कर्ष

विज्ञान और प्रौद्योगिकी के इन बहुआयामी लाभों से मध्यप्रदेश न केवल आर्थिक रूप से सशक्त बनेगा, बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि और पर्यावरणीय क्षेत्रों में भी नई दिशा प्राप्त करेगा।

यह परिवर्तन केवल विकास का नहीं, बल्कि एक नई सोच और नए समाज के निर्माण का प्रतीक होगा—जहाँ विज्ञान, संवेदना और नवाचार एक साथ मिलकर “विकसित मध्यप्रदेश 2047” की आधारशिला रखेंगे।



सौम्या साइंस एंड रिसर्च फाउंडेशन: बच्चों की सुरक्षा और विज्ञान की ओर एक संवेदनशील पहल

शिक्षा, सुरक्षा और विज्ञान का संगम

आज का समाज निरंतर परिवर्तनशील है—तकनीक, संचार, और सामाजिक मूल्यों के स्तर पर एक तीव्र गति से बदलाव देखने को मिल रहा है। ऐसे दौर में बच्चों का सर्वांगीण विकास केवल शिक्षा तक सीमित नहीं रह सकता। उन्हें सुरक्षित, आत्मविश्वासी, जागरूक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से परिपक्व बनाना समय की मांग है। यही वह आधार है जो उन्हें भविष्य के जिम्मेदार नागरिकों में रूपांतरित करता है।

इसी दिशा में सौम्या साइंस एंड रिसर्च फाउंडेशन ने एक अनुकरणीय और प्रेरणादायक पहल की है। संस्था ने टेक-आंगनबाड़ी के नन्हे-मुन्ने बच्चों के साथ एक विशेष सत्र आयोजित किया, जिसमें उन्हें "गुड टच और बैड टच" की समझ दी गई। यह विषय न केवल बच्चों की व्यक्तिगत सुरक्षा से जुड़ा हुआ है, बल्कि उनके आत्म-सम्मान और आत्म-सुरक्षा की भावना को भी मजबूत करता है।

अक्सर छोटे बच्चे अपनी भावनाओं को व्यक्त नहीं कर पाते, जिससे कई बार अनजाने में वे असुरक्षित स्थितियों का सामना करते हैं। ऐसे में यह पहल उन्हें सही और गलत स्पर्श के बीच अंतर समझाने के साथ-साथ यह भी सिखाती है कि यदि उन्हें असहज महसूस हो, तो वे खुलकर अपने माता-पिता, शिक्षकों या किसी भरोसेमंद व्यक्ति से बात कर सकते हैं। इस प्रकार यह कार्यक्रम बच्चों के आत्मविश्वास और सुरक्षा बोध को गहराई से सुदृढ़ करता है।

लेकिन सौम्या साइंस एंड रिसर्च फाउंडेशन की यह पहल केवल सुरक्षा तक सीमित नहीं है। बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए संस्था ने विज्ञान और पर्यावरण से संबंधित अनेक रोचक गतिविधियाँ भी कराईं। इन गतिविधियों के माध्यम से बच्चों को प्रकृति के संरक्षण, पर्यावरण की स्वच्छता और वैज्ञानिक प्रयोगों की अद्भुत दुनिया से जोड़ने का प्रयास किया गया। जब बच्चे स्वयं किसी प्रयोग या अवलोकन में भाग लेते हैं, तो उनके भीतर सीखने की जिज्ञासा और समझ विकसित होती है।

विज्ञान की ये सरल और खेल-खेल में सिखाई जाने वाली गतिविधियाँ बच्चों को यह एहसास कराती हैं कि हर प्रश्न का एक तर्कसंगत उत्तर होता है, और हर समस्या का एक समाधान खोजा जा सकता है—यदि हम सोचने और समझने का सही तरीका अपनाएँ। यही दृष्टिकोण उन्हें जीवन के हर क्षेत्र में रचनात्मक और विवेकपूर्ण निर्णय लेने की प्रेरणा देता है।

इस पहल का सबसे उल्लेखनीय पहलू यह है कि इसमें शिक्षा का समग्र दृष्टिकोण अपनाया गया है—जहां बच्चों को केवल पाठ्य ज्ञान नहीं दिया गया, बल्कि नैतिक मूल्यों, आत्म-सुरक्षा, वैज्ञानिक सोच और पर्यावरणीय चेतना का भी समावेश किया गया। यह शिक्षा का ऐसा मॉडल है, जो बच्चों को केवल "जानकार" नहीं बल्कि "जागरूक" बनाता है।



विज्ञान और संवेदना से सशक्त होती शिक्षा

सौम्या साइंस एंड रिसर्च फाउंडेशन की यह पहल समाज के उस व्यापक उद्देश्य को उजागर करती है, जहां शिक्षा केवल पुस्तकों या अंकों तक सीमित नहीं रहती, बल्कि जीवन के वास्तविक और मानवीय पहलुओं से जुड़ती है। संस्था का मानना है कि बच्चों को बचपन से ही सुरक्षित व्यवहार, वैज्ञानिक सोच और पर्यावरणीय जिम्मेदारी का बोध कराना आवश्यक है। जब बच्चे सही और गलत के बीच अंतर समझना सीखते हैं, प्रकृति के संरक्षण के महत्व को जानने लगते हैं, और हर प्रश्न को तर्क एवं जिज्ञासा के साथ देखने की आदत डालते हैं, तब वे न केवल अपने भविष्य को बल्कि पूरे समाज के भविष्य को मजबूत बनाते हैं।

इस प्रकार की पहलें बच्चों को आत्मविश्वास, सुरक्षा और संवेदनशीलता का पाठ पढ़ाती हैं। यह शिक्षा का ऐसा रूप है जो केवल जानकारी नहीं देता, बल्कि बच्चों को सोचने, समझने और जिम्मेदारी निभाने की शक्ति प्रदान करता है। यह शिक्षकों और अभिभावकों दोनों के लिए एक प्रेरक संदेश भी है कि सच्ची शिक्षा वही है जो बच्चों में ज्ञान के साथ-साथ मानवीय मूल्यों, सहानुभूति और विवेक का विकास करे।

वास्तव में, सौम्या साइंस एंड रिसर्च फाउंडेशन ने यह साबित कर दिया है कि जब विज्ञान और संवेदना एक साथ चलते हैं, तो शिक्षा समाज में सकारात्मक परिवर्तन की सबसे प्रभावी शक्ति बन जाती है—एक ऐसी शक्ति जो आने वाली पीढ़ियों को जागरूक, सुरक्षित और नवोन्मेषी दिशा में आगे बढ़ाती है।

पर्यावरण और विज्ञान की ओर कदम: सौम्या साइंस एंड रिसर्च फाउंडेशन की अभिनव पहल

आज के युग में जब तकनीक और जीवनशैली तेजी से बदल रही है, बच्चों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण और पर्यावरणीय चेतना विकसित करना अत्यंत आवश्यक हो गया है। भविष्य की पीढ़ी को न केवल ज्ञानवान, बल्कि प्रकृति-प्रेमी और जिम्मेदार नागरिक बनाना ही सच्ची शिक्षा का लक्ष्य होना चाहिए। इसी दिशा में सौम्या साइंस एंड रिसर्च फाउंडेशन ने एक प्रेरणादायक पहल की है, जिसके अंतर्गत बच्चों के लिए अनेक रचनात्मक और ज्ञानवर्धक गतिविधियाँ आयोजित की गईं। इन गतिविधियों का उद्देश्य बच्चों में जिज्ञासा, खोज की भावना और पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता को बढ़ावा देना था।

पौधारोपण अभियान: प्रकृति से जुड़ाव का प्रथम पाठ

इस पहल की शुरुआत पौधारोपण अभियान से की गई, जिसमें बच्चों ने स्वयं पौधे लगाए और उनके महत्व को समझा। उन्हें बताया गया कि पेड़-पौधे केवल ऑक्सीजन के स्रोत नहीं हैं, बल्कि वे हमारे जीवन और पर्यावरण का आधार हैं। पेड़ जलवायु संतुलन बनाए रखने, प्रदूषण कम करने और जैव विविधता को सुरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
जब छोटे-छोटे हाथों ने मिट्टी में पौधे लगाए, तो उनके चेहरे पर उत्साह और जिम्मेदारी दोनों झलक रहे थे। इस गतिविधि ने बच्चों को प्रकृति से जोड़ने के साथ-साथ यह सिखाया कि पर्यावरण की रक्षा केवल एक सामाजिक कर्तव्य नहीं, बल्कि एक नैतिक जिम्मेदारी भी है।

विज्ञान प्रयोग: खेल-खेल में सीखने का आनंद

इसके बाद बच्चों को विज्ञान की रोचक दुनिया से परिचित कराने के लिए सरल और मनोरंजक प्रयोग कराए गए। उदाहरण के तौर पर—पानी में कौन सी वस्तु तैरती है और कौन सी डूबती है, रंगों का मिश्रण कैसे नए रंग बनाता है, या चुंबक की शक्ति किन वस्तुओं पर असर डालती है—इन सब प्रयोगों के माध्यम से बच्चों ने विज्ञान के बुनियादी सिद्धांतों को प्रत्यक्ष रूप में समझा।
ऐसे प्रयोगों से बच्चे केवल 'पढ़ते' नहीं, बल्कि 'देखते और अनुभव करते' हैं। जब कोई प्रयोग उनके सामने होता है, तो उनके मन में प्रश्न उठते हैं—"ऐसा क्यों हुआ?", "अगर मैं इसे बदल दूँ तो क्या होगा?"—यही प्रश्न उनके भीतर वैज्ञानिक सोच और तर्कशीलता की नींव रखते हैं।

तकनीकी परिचय: भविष्य की दिशा में पहला कदम

सौम्या साइंस एंड रिसर्च फाउंडेशन ने बच्चों को तकनीकी युग से जोड़ने की दिशा में भी कदम बढ़ाया। उन्हें कंप्यूटर, मोबाइल और अन्य तकनीकी उपकरणों की मूलभूत जानकारी दी गई। बच्चों को यह समझाया गया कि तकनीक केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि सीखने, सृजन करने और समस्याओं का समाधान खोजने का शक्तिशाली माध्यम है।
तकनीक की इस प्राथमिक समझ ने बच्चों को डिजिटल साक्षरता के प्रति जागरूक किया और उन्हें भविष्य की तकनीकी दुनिया के लिए तैयार करने की दिशा में अग्रसर किया।

सीख और प्रेरणा: एक नई सोच की शुरुआत

इन सभी गतिविधियों ने बच्चों को केवल ज्ञान नहीं दिया, बल्कि सोचने, सवाल पूछने और समाधान खोजने की प्रवृत्ति को जन्म दिया। यह पहल शिक्षा के उस समग्र दृष्टिकोण को दर्शाती है, जिसमें पर्यावरणीय संवेदना, वैज्ञानिक दृष्टि और तकनीकी समझ का समन्वय है।
सौम्या साइंस एंड रिसर्च फाउंडेशन का यह प्रयास इस बात का प्रमाण है कि यदि शिक्षा में विज्ञान और संवेदना का संतुलन हो, तो बच्चे केवल जानकार नहीं, बल्कि जिम्मेदार और नवोन्मेषी नागरिक बनते हैं। यह पहल आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत है—जो न केवल प्रकृति से प्रेम करना सीखेंगी, बल्कि विज्ञान और तकनीक के माध्यम से उसके संरक्षण के उपाय भी खोजेंगी।

पर्यावरण और विज्ञान की ओर कदम: सौम्या साइंस एंड रिसर्च फाउंडेशन की अभिनव पहल

आज के युग में जब तकनीक और जीवनशैली तेजी से बदल रही है, बच्चों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण और पर्यावरणीय चेतना विकसित करना अत्यंत आवश्यक हो गया है। भविष्य की पीढ़ी को न केवल ज्ञानवान, बल्कि प्रकृति-प्रेमी और जिम्मेदार नागरिक बनाना ही सच्ची शिक्षा का लक्ष्य होना चाहिए। इसी दिशा में सौम्या साइंस एंड रिसर्च फाउंडेशन ने एक प्रेरणादायक पहल की है, जिसके अंतर्गत बच्चों के लिए अनेक रचनात्मक और ज्ञानवर्धक गतिविधियाँ आयोजित की गईं। इन गतिविधियों का उद्देश्य बच्चों में जिज्ञासा, खोज की भावना और पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता को बढ़ावा देना था।

पौधारोपण अभियान: प्रकृति से जुड़ाव का प्रथम पाठ

इस पहल की शुरुआत पौधारोपण अभियान से की गई, जिसमें बच्चों ने स्वयं पौधे लगाए और उनके महत्व को समझा। उन्हें बताया गया कि पेड़-पौधे केवल ऑक्सीजन के स्रोत नहीं हैं, बल्कि वे हमारे जीवन और पर्यावरण का आधार हैं। पेड़ जलवायु संतुलन बनाए रखने, प्रदूषण कम करने और जैव विविधता को सुरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
जब छोटे-छोटे हाथों ने मिट्टी में पौधे लगाए, तो उनके चेहरे पर उत्साह और जिम्मेदारी दोनों झलक रहे थे। इस गतिविधि ने बच्चों को प्रकृति से जोड़ने के साथ-साथ यह सिखाया कि पर्यावरण की रक्षा केवल एक सामाजिक कर्तव्य नहीं, बल्कि एक नैतिक जिम्मेदारी भी है।

विज्ञान प्रयोग: खेल-खेल में सीखने का आनंद

इसके बाद बच्चों को विज्ञान की रोचक दुनिया से परिचित कराने के लिए सरल और मनोरंजक प्रयोग कराए गए। उदाहरण के तौर पर—पानी में कौन सी वस्तु तैरती है और कौन सी डूबती है, रंगों का मिश्रण कैसे नए रंग बनाता है, या चुंबक की शक्ति किन वस्तुओं पर असर डालती है—इन सब प्रयोगों के माध्यम से बच्चों ने विज्ञान के बुनियादी सिद्धांतों को प्रत्यक्ष रूप में समझा।
ऐसे प्रयोगों से बच्चे केवल 'पढ़ते' नहीं, बल्कि 'देखते और अनुभव करते' हैं। जब कोई प्रयोग उनके सामने होता है, तो उनके मन में प्रश्न उठते हैं—"ऐसा क्यों हुआ?", "अगर मैं इसे बदल दूँ तो क्या होगा?"—यही प्रश्न उनके भीतर वैज्ञानिक सोच और तर्कशीलता की नींव रखते हैं।

तकनीकी परिचय: भविष्य की दिशा में पहला कदम
सौम्या साइंस एंड रिसर्च फाउंडेशन ने बच्चों को तकनीकी युग से जोड़ने की दिशा में भी कदम बढ़ाया। उन्हें कंप्यूटर, मोबाइल और अन्य तकनीकी उपकरणों की मूलभूत जानकारी दी गई। बच्चों को यह समझाया गया कि तकनीक केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि सीखने, सृजन करने और समस्याओं का समाधान खोजने का शक्तिशाली माध्यम है।
तकनीक की इस प्राथमिक समझ ने बच्चों को डिजिटल साक्षरता के प्रति जागरूक किया और उन्हें भविष्य की तकनीकी दुनिया के लिए तैयार करने की दिशा में अग्रसर किया।

सौम्या साइंस एंड रिसर्च फाउंडेशन का यह प्रयास इस बात का प्रमाण है कि यदि शिक्षा में विज्ञान और संवेदना का संतुलन हो, तो बच्चे केवल जानकार नहीं, बल्कि जिम्मेदार और नवोन्मेषी नागरिक बनते हैं। यह पहल आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत है—जो न केवल प्रकृति से प्रेम करना सीखेंगी, बल्कि विज्ञान और तकनीक के माध्यम से उसके संरक्षण के उपाय भी खोजेंगी।



विज्ञान, वनस्पति और समाज: एक त्रिकोणीय संवाद

तेजी से बदलते वैश्विक परिदृश्य में विज्ञान, प्रकृति और समाज के बीच संवाद पहले से कहीं अधिक आवश्यक हो गया है। मानव जीवन के सतत विकास, पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक समृद्धि का आधार इसी त्रिकोणीय समन्वय में निहित है। सौम्या साइंस एंड रिसर्च फाउंडेशन जैसी संस्थाएँ इस दिशा में प्रेरक भूमिका निभा रही हैं—जो विज्ञान को केवल प्रयोगशालाओं तक सीमित न रखकर आमजन के जीवन से जोड़ने का प्रयास कर रही हैं।

पौधे: जीवन का मौलिक आधार

पौधे केवल ऑक्सीजन देने वाले जीव नहीं, बल्कि मानव सभ्यता के पोषक स्तंभ हैं। वे पृथ्वी पर जीवन का मूल आधार हैं —भोजन, वस्त्र, औषधि और पर्यावरणीय संतुलन के प्रमुख स्रोत। औषधीय पौधों से लेकर जैव ईंधन और हरित ऊर्जा तक, पौधों ने मानव जीवन को स्थिरता और संतुलन प्रदान किया है।
विज्ञान ने इन गुणों को पहचानकर जैव विविधता संरक्षण, वनस्पति आधारित औषधि विकास, और सतत ऊर्जा के उपयोग में नई क्रांति ला दी है। आज पौधे न केवल पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने में सहायक हैं, बल्कि वैज्ञानिक शोध के केंद्र में भी हैं।

विज्ञान: प्रकृति का अन्वेषक

विज्ञान ने हमें यह सिखाया कि प्रकृति के साथ तालमेल ही टिकाऊ विकास की कुंजी है। बायोटेक्नोलॉजी, जैविक खेती, और पर्यावरणीय मॉडलिंग जैसे क्षेत्रों में हो रहे शोध यह सिद्ध करते हैं कि पौधों के माध्यम से जलवायु परिवर्तन, मिट्टी की उर्वरता और मानव स्वास्थ्य को बेहतर बनाया जा सकता है।
अब समाज केवल विज्ञान का उपभोक्ता नहीं, बल्कि उसका सहभागी बन चुका है। सौम्या साइंस एंड रिसर्च फाउंडेशन जैसी संस्थाएँ विज्ञान को जन-जन तक पहुँचाकर पर्यावरणीय शिक्षा, स्थानीय वनस्पति संरक्षण, और हरित उद्यमिता को प्रोत्साहन दे रही हैं। इन पहलों से ग्रामीण आजीविका, महिला सशक्तिकरण और युवा नवाचार को नई दिशा मिली है। विज्ञान अब केवल एक विषय नहीं, बल्कि समाज परिवर्तन का माध्यम बन गया है।

शिक्षा और नीति में त्रिकोणीय समन्वय

विज्ञान, वनस्पति और समाज के इस त्रिकोणीय संबंध का प्रभाव शिक्षा और नीति निर्माण दोनों में दिखाई देता है। आज की शिक्षा प्रणाली में STEM (Science, Technology, Engineering, Mathematics) को पर्यावरणीय अध्ययन के साथ जोड़ा जा रहा है, ताकि विद्यार्थी विज्ञान को जीवन के व्यावहारिक पहलुओं से जोड़ सकें।

नीति स्तर पर भी सतत विकास लक्ष्य (SDGs), हरित विज्ञान और स्थानीय जैव विविधता संरक्षण को प्राथमिकता दी जा रही है। यह दृष्टिकोण समाज को एक सतत, समावेशी और विज्ञान-सम्मत दिशा में ले जा रहा है, जहाँ विकास और पर्यावरण एक-दूसरे के पूरक बन रहे हैं।

प्रशासनिक पारदर्शिता: संवाद की भूमिका

संवाद किसी भी लोकतांत्रिक प्रणाली की आत्मा है। जब प्रशासन जनता से संवाद करता है—जनसुनवाई, लोक सेवा गारंटी, या ग्राम सभाओं के माध्यम से—तो नीतियाँ ज़मीनी हकीकत से जुड़ती हैं। यह पारदर्शिता न केवल शासन में विश्वास बढ़ाती है, बल्कि विकास योजनाओं को अधिक प्रभावी बनाती है।

शिक्षा में संवाद आधारित पद्धति

शिक्षा केवल सूचना का आदान-प्रदान नहीं, बल्कि संवाद का माध्यम है। जब शिक्षक और छात्र के बीच खुला संवाद स्थापित होता है, तो बच्चों में रचनात्मक सोच, समस्या समाधान क्षमता और सहयोग की भावना विकसित होती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 ने इस संवादात्मक शिक्षण को विशेष महत्व दिया है, क्योंकि यह नवाचार और तर्कशीलता की नींव रखता है।

विज्ञान और समाज के बीच सेतु

विज्ञान को समाज से जोड़ने के लिए संवाद की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। विज्ञान मेलों, लोक विज्ञान यात्राओं, विज्ञान क्लबों और सामुदायिक प्रयोगशालाओं के माध्यम से वैज्ञानिक सोच को समाज की समस्याओं से जोड़ा जा रहा है।

सौम्या साइंस एंड रिसर्च फाउंडेशन जैसी संस्थाएँ इस दिशा में अग्रसर हैं—जो विज्ञान को जनसंवाद, प्रयोग और सहभागिता के माध्यम से समाज के हर वर्ग तक पहुँचा रही हैं।

निष्कर्ष

विज्ञान, वनस्पति और समाज—यह त्रिकोण एक ऐसे संतुलित और सतत भविष्य की नींव रखता है, जहाँ प्रकृति, ज्ञान और मानवता एक-दूसरे के पूरक बनते हैं। जब विज्ञान में संवेदना, समाज में जागरूकता और शिक्षा में संवाद शामिल होता है, तब विकास वास्तव में सार्थक बनता है।

सौम्या साइंस एंड रिसर्च फाउंडेशन की पहल इस त्रिकोणीय संवाद का उत्कृष्ट उदाहरण है—जो विज्ञान को जीवन से, और जीवन को प्रकृति से जोड़ती है।





सौम्या साइंस एंड रिसर्च फाउंडेशन, मध्यप्रदेश : विज्ञान से विकास की नई उड़ान

विज्ञान केवल प्रयोगशाला की सीमाओं में बंधा विषय नहीं, बल्कि वह शक्ति है जो समाज, शिक्षा, उद्योग और शासन—सभी को जोड़ने की क्षमता रखती है। सौम्या साइंस एंड रिसर्च फाउंडेशन इसी विचार को साकार रूप देने की दिशा में कार्य कर रही है। यह संस्था यह विश्वास रखती है कि विज्ञान तब सार्थक होता है जब वह जीवन के हर क्षेत्र में उपयोगी सिद्ध हो और समाज के अंतिम व्यक्ति तक उसकी रोशनी पहुँचे। आने वाले समय में फाउंडेशन का लक्ष्य है कि मध्यप्रदेश को भारत के अग्रणी विज्ञान एवं नवाचार केंद्रों में परिवर्तित किया जाए, जहाँ शोध, शिक्षा, उद्यमिता और नीति—चारों का समन्वय हो।

विज्ञान-आधारित आत्मनिर्भरता का दृष्टिकोण

सौम्या साइंस की सोच यह है कि विज्ञान को केवल पढ़ाया नहीं जाना चाहिए, बल्कि उसे जीवनशैली का हिस्सा बनाया जाए। जब वैज्ञानिक सोच हमारे दैनिक निर्णयों का आधार बनेगी, तभी समाज वास्तव में आत्मनिर्भर बन सकेगा। इसी दिशा में फाउंडेशन “Science for Society” के सिद्धांत पर कार्य कर रही है — जहाँ शिक्षा, शोध और नवाचार का केंद्र व्यक्ति और समुदाय हैं।

फाउंडेशन आने वाले वर्षों में राज्य के हर जिले में “साइंस ग्राम मॉडल” को लागू करने की योजना बना रही है, जिसमें ग्रामीण क्षेत्र में विज्ञान आधारित कृषि, जल संरक्षण, बायोगैस और नवीकरणीय ऊर्जा, जैविक खेती और पर्यावरणीय शिक्षा को एकीकृत किया जाएगा। इन प्रयोगों से न केवल रोजगार और उत्पादकता में वृद्धि होगी, बल्कि ग्रामीण युवाओं को विज्ञान और प्रौद्योगिकी के माध्यम से आत्मनिर्भर बनने का अवसर भी मिलेगा।

शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार का एकीकृत मॉडल

मध्यप्रदेश में विज्ञान के प्रति नई ऊर्जा का संचार करने के लिए सौम्या साइंस आने वाले वर्षों में Saumya Science & Innovation Hubs स्थापित करने की दिशा में अग्रसर है। ये केंद्र आधुनिक प्रयोगशालाओं, डिजिटल शिक्षण साधनों और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित संसाधनों से सुसज्जित होंगे। यहाँ विद्यार्थियों को विज्ञान केवल सैद्धांतिक नहीं, बल्कि व्यावहारिक और समस्या-समाधान आधारित रूप में सिखाया जाएगा।

इन हब्स में AI, Robotics, Space Technology, Biotechnology, Renewable Energy, Data Science और Cyber Security जैसे विषयों पर विशेष प्रशिक्षण दिए जाएंगे, जिससे राज्य के युवा न केवल स्थानीय उद्योगों से जुड़ सकें, बल्कि राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर भी प्रतिस्पर्धी बनें।

नई तकनीकों में कदम – डिजिटल भविष्य की ओर

भविष्य का मध्यप्रदेश डिजिटल और वैज्ञानिक प्रगति का केंद्र बने, यह सौम्या साइंस की प्रमुख प्राथमिकता है। संस्था ने इसके लिए एक विस्तृत Technology Advancement Plan तैयार किया है, जिसके अंतर्गत निम्न दिशा में कार्य किया जाएगा—

- Artificial Intelligence (AI) के माध्यम से शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं का स्वचालन।
- Blockchain Technology आधारित सरकारी पारदर्शिता तंत्र, जिससे रिकॉर्ड प्रबंधन और प्रशासनिक निर्णय अधिक विश्वसनीय बनेंगे।
- Drone Mapping और Remote Sensing द्वारा कृषि, जल प्रबंधन और आपदा राहत की निगरानी।
- Quantum Computing Research के लिए विश्वविद्यालयों और तकनीकी संस्थानों के साथ सहयोग।
- Green Hydrogen और Solar Energy पर आधारित हरित तकनीकों का विकास, जिससे ऊर्जा आत्मनिर्भरता बढ़ेगी।
- 3D Printing, Nanotechnology और Biotechnology के उपयोग से ग्रामीण उद्योगों और स्थानीय उत्पादन में गुणवत्ता वृद्धि।

इन सभी कदमों का उद्देश्य है — विज्ञान और तकनीक को राज्य की सामाजिक-आर्थिक प्रगति की रीढ़ बनाना।

स्वास्थ्य, पर्यावरण और सामाजिक विज्ञान का समन्वय

सौम्या साइंस यह भली-भांति समझती है कि विज्ञान का लक्ष्य केवल तकनीकी विकास नहीं, बल्कि मानव जीवन की गुणवत्ता में सुधार है। आने वाले वर्षों में फाउंडेशन “Health Science and Biotech Integration Program” के अंतर्गत ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाओं, पोषण कार्यक्रमों, और आयुर्वेदिक अनुसंधान को प्रोत्साहित करेगी।

डिजिटल हेल्थ प्लेटफ़ॉर्म, टेलीमेडिसिन सेवाएँ, और एआई आधारित निदान प्रणाली के माध्यम से स्वास्थ्य सुविधाओं को अंतिम छोर तक पहुँचाने का प्रयास किया जाएगा।

साथ ही, पर्यावरण के क्षेत्र में “Green Mission 2030” के तहत कार्बन न्यूट्रल संस्थान, प्लास्टिक मुक्त परिसर और सौर ऊर्जा संचालित विद्यालयों की स्थापना की जाएगी। यह मिशन केवल पर्यावरण की सुरक्षा नहीं करेगा, बल्कि आने वाली पीढ़ियों में हरित जीवनशैली के प्रति जागरूकता भी जगाएगा।

विज्ञान और नीति के बीच संवाद का सेतु

सौम्या साइंस यह मानती है कि विकास की गति तब तेज़ होती है जब नीति और शोध एक साथ चलते हैं। इसी सोच के तहत संस्था “Science Policy Dialogue Forum” की स्थापना करने जा रही है, जो नीति निर्माताओं, वैज्ञानिकों, शिक्षकों और समाज के प्रतिनिधियों को एक साझा मंच देगा।

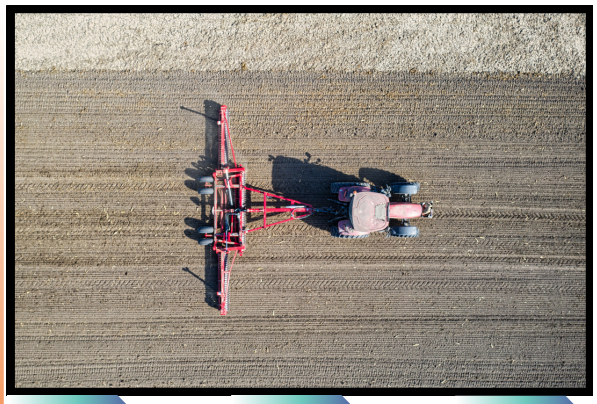
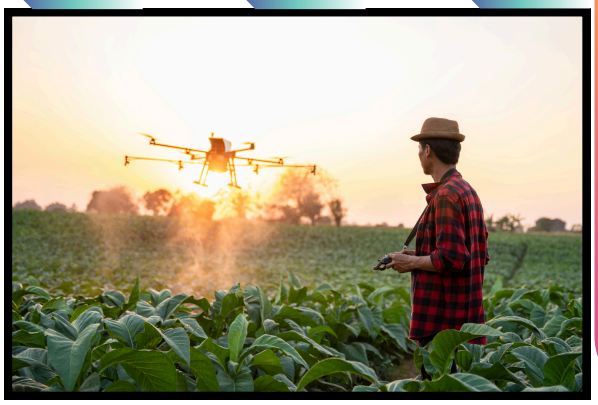
इस मंच के माध्यम से शिक्षा, कृषि, पर्यावरण, स्वास्थ्य और उद्योग से जुड़ी नीतियों में वैज्ञानिक डेटा और अनुसंधान आधारित दृष्टिकोण को प्राथमिकता दी जाएगी। इससे शासन के निर्णय अधिक सटीक, प्रभावी और परिणामोन्मुख बनेंगे।

स्टार्टअप, उद्यमिता और युवाओं की भूमिका

फाउंडेशन का लक्ष्य है कि मध्यप्रदेश के युवा केवल नौकरी खोजने वाले नहीं, बल्कि रोजगार सृजन करने वाले नवप्रवर्तक बनें। इसके लिए “Saumya Startup Accelerator Program” शुरू किया जा रहा है, जिसमें विज्ञान आधारित विचारों को वित्तीय सहायता, तकनीकी मार्गदर्शन और बाज़ार तक पहुँच प्रदान की जाएगी।

खासतौर पर महिला उद्यमियों के लिए “Women in Science & Innovation Initiative” शुरू की जाएगी, जो महिलाओं को बायोटेक, डिजिटल हेल्थ और ग्रीन टेक्नोलॉजी के क्षेत्रों में स्टार्टअप शुरू करने में सहायता करेगी।

यह पहल विज्ञान को रोजगार, नवाचार और समावेशी विकास का माध्यम बनाएगी।


भविष्य का रोडमैप : Vision 2035

सौम्या साइंस एंड रिसर्च फाउंडेशन ने अगले दशक के लिए "Vision 2035" तैयार किया है, जिसके तहत निम्नलिखित उपलब्धियाँ हासिल करने का लक्ष्य है—

- मध्यप्रदेश के 20 से अधिक जिलों में Science Resource Centers की स्थापना
- 2,000 छात्रों को Advanced Technology Training
- 500 से अधिक Science Awareness Camps का आयोजन
- हर जिले में एक Saumya Research Fellowship
- और "Saumya Digital Knowledge Grid" के माध्यम से ऑनलाइन विज्ञान शिक्षण नेटवर्क

यह रोडमैप केवल योजनाओं का खाका नहीं, बल्कि एक विज्ञान-संचालित परिवर्तन आंदोलन की दिशा में उठाया गया ठोस कदम है।

समापन : विज्ञान ही विकास का पथ है

सौम्या साइंस एंड रिसर्च फाउंडेशन का यह विश्वास अडिग है कि विज्ञान केवल भविष्य की कुंजी नहीं, बल्कि वर्तमान का समाधान भी है।

हमारा संकल्प है — मध्यप्रदेश को एक ऐसे राज्य के रूप में स्थापित करना जहाँ हर नागरिक वैज्ञानिक सोच से संपन्न हो, हर गाँव नवाचार का केंद्र बने और हर विद्यार्थी भविष्य का वैज्ञानिक बने।

फाउंडेशन का यह सफर ज्ञान से कर्म, प्रयोग से परिवर्तन, और विचार से आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर है।

"जब विज्ञान संवेदनशीलता से जुड़ता है,
तब विकास केवल आर्थिक नहीं — सामाजिक, सांस्कृतिक और मानवीय भी बन जाता है।"

वैज्ञानिक प्रेरणा के स्रोत

विज्ञान, विचार और मानवता के उज्ज्वल दीपक

“विज्ञान का मार्ग सत्य की खोज का मार्ग है — और सत्य की खोज ही मानवता की सबसे बड़ी साधना।”

— संपादकीय सूत्र

प्रस्तावना: विज्ञान का हृदय — जिज्ञासा

विज्ञान केवल उपकरणों, प्रयोगशालाओं या समीकरणों की भाषा नहीं है;
यह जिज्ञासा, तर्क और संवेदना की वह धारा है जो मानवता को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाती है।
हर महान वैज्ञानिक ने अपने जीवन से यह सिद्ध किया है कि ज्ञान का कोई अंत नहीं होता — केवल शुरुआतें होती हैं, जो एक-दूसरे से प्रेरणा लेकर आगे बढ़ती हैं।
भारत का वैज्ञानिक इतिहास इसी प्रेरणा का उज्ज्वल उदाहरण है।
यह भूमि जहाँ ऋषि कणाद ने परमाणु की अवधारणा दी, आर्यभट्ट ने शून्य का दर्शन किया, और आज वही परंपरा आधुनिक वैज्ञानिकों के रूप में आगे बढ़ रही है।
“सौम्या साइंस एंड रिसर्च फाउंडेशन” इसी विरासत को वर्तमान युग के नवाचारों से जोड़ने का सतत प्रयास कर रही है।

🔬 डॉ. सी. वी. रमन: प्रकाश से ज्ञान तक की यात्रा

“विज्ञान तब जन्म लेता है जब हम रोज़मर्रा की चीज़ों में असाधारण को देखने लगते हैं।”
डॉ. चंद्रशेखर वेंकटरमण, भारतीय विज्ञान के उज्ज्वल नक्षत्र, ने यह दिखाया कि ब्रह्मांड के रहस्य हमारे आसपास ही हैं — बस उन्हें देखने की दृष्टि चाहिए।
उनकी खोज “रमन प्रभाव” ने यह सिद्ध किया कि जब प्रकाश किसी वस्तु से टकराता है, तो उसकी दिशा और ऊर्जा बदल जाती है —
यह खोज इतनी गहरी थी कि उसने विश्व-भौतिकी की परिभाषा ही बदल दी।
परंतु रमन केवल वैज्ञानिक नहीं थे; वे विज्ञान के दार्शनिक थे।
वे कहा करते थे — “यदि भारत के बच्चे आसमान की ओर देखकर प्रश्न पूछना शुरू कर दें, तो यह देश प्रयोगशाला बन जाएगा।”
उनकी यह भावना आज भी भारत की प्रत्येक विज्ञान प्रयोगशाला में गूँजती है।

🚀 डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम: विज्ञान को जन-आंदोलन बनाने वाला व्यक्तित्व

“विज्ञान का अर्थ है — सपनों को वास्तविकता में बदलने की कला।”
डॉ. अब्दुल कलाम का जीवन यह प्रमाण है कि विज्ञान केवल तकनीक नहीं, बल्कि राष्ट्रनिर्माण की साधना है।
तमिलनाडु के एक छोटे से गाँव से उठकर उन्होंने अंतरिक्ष और रक्षा प्रौद्योगिकी की ऊँचाइयों तक पहुँचकर यह दिखाया कि सीमित संसाधन, असीम सोच से पराजित हो जाते हैं।
DRDO और ISRO में उनके नेतृत्व ने भारत को आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर किया।
परंतु उनका असली योगदान था — युवाओं में वैज्ञानिक चेतना का संचार।
वे कहा करते थे — “हर युवा के भीतर एक संभावित वैज्ञानिक है, बस उसे अवसर और दिशा चाहिए।”
उनकी वही भावना आज MPCST और सौम्या साइंस एंड रिसर्च फाउंडेशन जैसी संस्थाओं की प्रेरणा है।

🧬 मैरी क्यूरी: विज्ञान में साहस और समर्पण का प्रतीक

“जीवन में कुछ भी डरने योग्य नहीं, केवल समझने योग्य है।”
मैरी क्यूरी ने रेडियोएक्टिविटी के क्षेत्र में अनुसंधान करते हुए यह सिद्ध किया कि विज्ञान में स्त्री की भूमिका सीमित नहीं, बल्कि केंद्रीय हो सकती है।
उन्होंने दो नोबेल पुरस्कार अर्जित किए — एक भौतिकी में, दूसरा रसायन में —
और यह दिखाया कि विज्ञान केवल पुरुष-प्रधान क्षेत्र नहीं, बल्कि समानता का मंच है।
उनकी प्रयोगशाला की साधना, उनके जीवन की सादगी, और अपने शोध के लिए किए गए त्याग आज भी हर शोधकर्ता को यह सिखाते हैं कि
“विज्ञान की सफलता प्रयोग में नहीं, बल्कि उस विश्वास में है जिसके साथ प्रयोग किया जाता है।”

🌌 अल्बर्ट आइंस्टाइन: कल्पना की शक्ति

“कल्पना ज्ञान से अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि ज्ञान सीमित है, कल्पना नहीं।”
आइंस्टाइन ने यह साबित किया कि ब्रह्मांड को समझने के लिए गणित से पहले विचार की आवश्यकता होती है।
उनकी सापेक्षता की संकल्पना ने न केवल भौतिकी की दिशा बदली, बल्कि मानव मस्तिष्क की सीमाओं को भी विस्तृत किया।
उनके विचारों ने हमें यह सिखाया कि हर खोज की शुरुआत “क्यों?” से होती है,
और यही “क्यों” विज्ञान को निरंतर गतिशील रखता है।

🌿 जगदीश चंद्र बोस: विज्ञान और संवेदना का अद्भुत संगम

“प्रकृति में चेतना सर्वत्र है — विज्ञान उसका संवेदनशील साक्षात्कार है।”
जे. सी. बोस ने यह सिद्ध किया कि पौधे भी प्रतिक्रिया करते हैं, वे भी संवेदनशील हैं।
उनकी खोज “क्रेस्कोग्राफ” केवल एक वैज्ञानिक उपकरण नहीं थी, बल्कि प्रकृति के प्रति मानव की जिम्मेदारी का प्रतीक थी।
उन्होंने दिखाया कि विज्ञान केवल विश्लेषण नहीं, बल्कि सह-अस्तित्व का दर्शन है।
उनकी वैज्ञानिक दृष्टि में भारतीय अध्यात्म और आधुनिक तर्क का सुंदर समन्वय था —
और यही समन्वय आज “मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद (MPCST)” जैसे संस्थानों की कार्यशैली में झलकता है।

🌠 समापन संदेश

विज्ञान के इन महान पुरुषों और महिलाओं ने हमें यह सिखाया कि
“प्रगति का कोई शॉर्टकट नहीं होता, केवल निरंतर जिज्ञासा ही उसका मार्ग है।”
“प्रगतिशील विज्ञान” का यह विशेषांक इन्हीं विचारों को समर्पित है —
उन वैज्ञानिकों को, जिनकी सोच ने समय की सीमाएँ लाँघ दीं,
और उन विद्यार्थियों को, जिनकी जिज्ञासा आने वाले भारत का निर्माण करेगी।

✍️ संपादकीय आभार एवं प्रेरणा

इस अंक के प्रकाशन में सहयोग हेतु
सौम्या साइंस एंड रिसर्च फाउंडेशन की संपादकीय टीम,
तथा समस्त शोधकर्ता, शिक्षाविद् और नवाचार-प्रवर्तक
जिन्होंने विज्ञान को जीवन से जोड़ने की इस यात्रा में साथ दिया —
सभी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता।

“हमारा प्रण है — विज्ञान को समाज का संस्कार बनाना।”



इंजीनियर विवेक द्विवेदी (संस्थापक एवं निदेशक):" विज्ञान से समाज तक विकास की नई इबारत"

इंजीनियर विवेक द्विवेदी, **सौम्या साइंस एंड रिसर्च फाउंडेशन के संस्थापक एवं निदेशक**, एक ऐसे दूरदर्शी नेतृत्वकर्ता हैं जिन्होंने विज्ञान को प्रयोगशालाओं से निकालकर समाज के हर कोने तक पहुँचाने का संकल्प लिया है। उनका मानना है कि विज्ञान केवल तकनीक नहीं, बल्कि सोचने का तरीका है — और यही सोच उन्हें एक जन-आंदोलन के सूत्रधार के रूप में स्थापित करती है। उनकी यात्रा ज़मीन से शुरू होकर राष्ट्रहित तक पहुँची है, और इसी अनुभव ने उन्हें यह सिखाया कि परिवर्तन तभी संभव है जब हर वर्ग को साथ लेकर आगे बढ़ा जाए।

उनके नेतृत्व में फाउंडेशन ने ग्रामीण क्षेत्रों में विज्ञान जागरूकता, स्किल सेंटर और शोध परियोजनाओं की शुरुआत की है, जिससे गाँवों तक आधुनिक तकनीक और शिक्षा पहुँच सके। वे बच्चों को नवाचार और प्रयोग की संस्कृति से जोड़ने, युवाओं को स्टार्टअप और रोजगार के अवसर देने, और महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं। उनका लक्ष्य है कि हर नागरिक — चाहे वह किसान हो, छात्र हो या उद्यमी — राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार बने।

Er. द्विवेदी की भविष्य दृष्टि एक ऐसे भारत की कल्पना करती है जहाँ विज्ञान और संस्कृति साथ-साथ चलें। उन्होंने ग्लोबल इंटीग्रेशन मिशन, बायोटेक और एआई आधारित शोध केंद्र, और सांस्कृतिक धरोहरों के डिजिटलीकरण जैसे प्रोजेक्ट्स की रूपरेखा तैयार की है, जो भारत को वैश्विक मंच पर सशक्त और आत्मनिर्भर बनाएंगे। उनका उद्देश्य केवल संस्थान बनाना नहीं, बल्कि "विज्ञान से विकास और विकास से आत्मनिर्भरता" की सोच को जन-जन तक पहुँचाना है।

उनका समर्पण इस बात में झलकता है कि वे सभी नागरिकों से सहयोग की अपील करते हैं — वैज्ञानिकों, शिक्षकों, छात्रों और उद्यमियों से — ताकि यह मिशन एक साझा प्रयास बने। उनका संदेश स्पष्ट है: "सफलता तब ही सार्थक होती है जब वह समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे।" सौम्या साइंस एंड रिसर्च फाउंडेशन उनके नेतृत्व में विज्ञान और समाज को जोड़ने वाला एक सशक्त मंच बन चुका है, जो आने वाले वर्षों में भारत के विकास की नई दिशा तय करेगा।



श्री विकास द्विवेदी (निदेशक) : विज्ञान, समाज और राष्ट्र निर्माण के संवेदनशील पथप्रदर्शक

सौम्या साइंस एंड रिसर्च फ़ाउंडेशन के निदेशक **श्री विकास द्विवेदी** एक ऐसे दूरदर्शी, कर्मनिष्ठ और समाज-सेवी नेतृत्वकर्ता हैं, जिनकी सोच किसी संगठन की सीमाओं से परे जाकर राष्ट्र के सर्वांगीण विकास की दिशा में अग्रसर है। वे मानते हैं कि जब प्रत्येक पहल का केंद्र आम नागरिक का कल्याण हो, तभी एक सशक्त, आत्मनिर्भर और खुशहाल भारत का निर्माण संभव है। उनकी दृष्टि में विज्ञान और तकनीक केवल प्रयोगशालाओं तक सीमित विषय नहीं, बल्कि समाज के हर वर्ग तक पहुँचने वाला परिवर्तन का माध्यम है। इसी गहन दृष्टिकोण के कारण वे आज एक प्रेरणादायी नेतृत्वकर्ता और जनोन्मुखी चिंतक के रूप में पहचाने जाते हैं।

श्री द्विवेदी के मार्गदर्शन में सौम्या साइंस एंड रिसर्च फ़ाउंडेशन ने “हर घर तक विज्ञान” और “हर हाथ में कौशल” जैसी लोकहितकारी अवधारणाओं को व्यवहार में उतारा है। उनका लक्ष्य विज्ञान, अनुसंधान और नवाचार के माध्यम से समाज के प्रत्येक वर्ग—चाहे वह ग्रामीण हो या शहरी, महिला हो या युवा—को अवसर, आत्मविश्वास और प्रगति से जोड़ना है। वे शिक्षा, पर्यावरण संरक्षण, तकनीकी सशक्तिकरण और रोजगार सृजन को एक सूत्र में पिरोकर **समग्र विकास का एक व्यावहारिक और जनकेंद्रित** मॉडल प्रस्तुत कर रहे हैं।

उनके प्रयासों से प्रदेश के अनेक स्कूलों में आधुनिक विज्ञान प्रयोगशालाओं की स्थापना हुई है, ग्रामीण अंचलों में वैज्ञानिक जागरूकता शिविर आयोजित किए जा रहे हैं, और युवाओं को तकनीकी प्रशिक्षण के माध्यम से आत्मनिर्भरता की राह पर अग्रसर किया जा रहा है। इन पहलों का उद्देश्य केवल ज्ञान देना नहीं, बल्कि उस ज्ञान को समाज के विकास और जनकल्याण की शक्ति में रूपांतरित करना है।

श्री विकास द्विवेदी की कार्यशैली में दूरदृष्टि, संवेदना और उत्तरदायित्व का अद्भुत संगम है। वे विज्ञान को जनसेवा का माध्यम मानते हुए उसे समाज की वास्तविक आवश्यकताओं से जोड़ रहे हैं। उनके नेतृत्व में सौम्या साइंस एंड रिसर्च फ़ाउंडेशन एक ऐसे सशक्त मंच के रूप में विकसित हो रहा है, जहाँ **नवाचार, शिक्षा, विज्ञान और सामाजिक उत्थान** एक साथ प्रगति के पथ पर अग्रसर हैं।

उनकी प्रेरणा और दिशा भारत को वैज्ञानिक दृष्टि से आत्मनिर्भर, सामाजिक रूप से समृद्ध और मानवीय मूल्यों से परिपूर्ण राष्ट्र के रूप में स्थापित करने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। श्री द्विवेदी का नेतृत्व यह सिद्ध करता है कि जब विज्ञान जन-जन से जुड़े, तो वह केवल प्रगति का साधन नहीं, बल्कि परिवर्तन का आधार बन जाता है।



श्री रवि कार्तिकेय दुबे (निदेशक) : विज्ञान, नवाचार और राष्ट्र निर्माण के दूरदर्शी पथप्रदर्शक

सौम्या साइंस एंड रिसर्च फाउंडेशन के निदेशक श्री रवि कार्तिकेय दुबे का दृष्टिकोण राष्ट्र निर्माण को केवल एक उद्देश्य नहीं, बल्कि एक सतत, समावेशी और जनभागीदारी से युक्त यात्रा मानता है। उनका यह विश्वास अटूट है कि जब समाज के प्रत्येक वर्ग की सहभागिता विज्ञान, नवाचार और सामाजिक उत्तरदायित्व के सूत्र में पिरोई जाती है, तभी एक आत्मनिर्भर, सशक्त और समृद्ध भारत का निर्माण संभव हो पाता है।

श्री दुबे अपने चिंतन में वर्तमान की चुनौतियों को भली-भांति समझते हुए भविष्य की दिशा तय करने पर बल देते हैं। वे संस्था को केवल एक संगठन नहीं, बल्कि एक जनोन्मुखी, परिवर्तनकारी और विचारशील मंच के रूप में विकसित कर रहे हैं, जहाँ विचार, विज्ञान और समाज एक साथ आगे बढ़ते हैं।

उनके नेतृत्व में सौम्या साइंस एंड रिसर्च फाउंडेशन ने ग्रामीण भारत की दशा और दिशा दोनों को बदलने के उद्देश्य से कई प्रभावशाली पहलों की शुरुआत की है। उन्होंने गाँवों में वैज्ञानिक चेतना का संचार, युवाओं को तकनीकी प्रशिक्षण और रोजगारोन्मुखी कौशल प्रदान करने का अभियान चलाया है। उनका मानना है कि "जब तक विज्ञान गाँवों की गलियों तक नहीं पहुँचेगा, तब तक राष्ट्र का सशक्तिकरण अधूरा रहेगा।"

इसी सोच के साथ वे शिक्षा, नवाचार, पर्यावरण संरक्षण, डिजिटल सशक्तिकरण और महिला-युवा उत्थान जैसे क्षेत्रों में सतत कार्य कर रहे हैं। उनके प्रयासों से समाज के वंचित और ग्रामीण वर्गों तक भी आधुनिक विज्ञान और तकनीकी सुविधाओं का लाभ पहुँच रहा है।

श्री दुबे की कार्यशैली में दूरदृष्टि, समर्पण और सामाजिक उत्तरदायित्व का अद्भुत संगम दिखाई देता है। वे विज्ञान को केवल प्रयोगशालाओं की सीमा से बाहर निकालकर जनजीवन का अंग बनाना चाहते हैं, ताकि विज्ञान का प्रत्येक प्रयोग मानव जीवन को सरल, सुगम और सार्थक बना सके। उनका संदेश स्पष्ट और प्रेरक है —

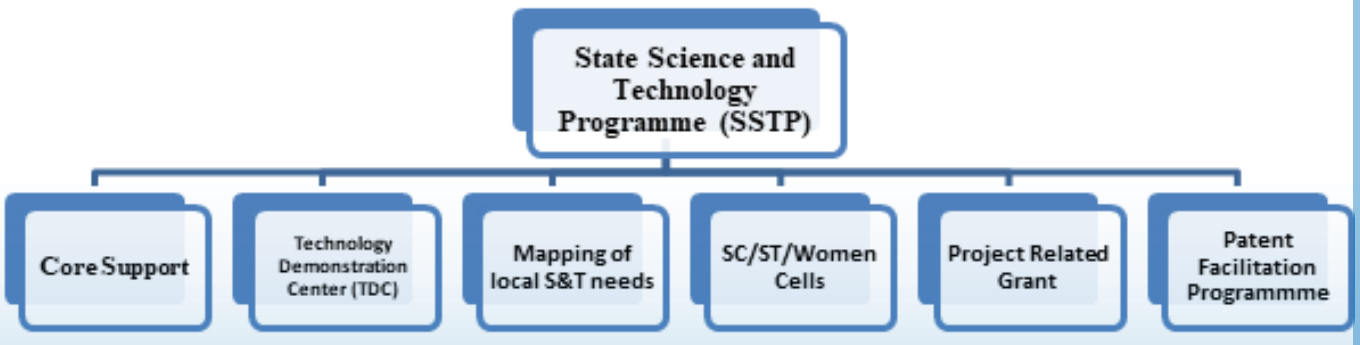
"जब सोच सकारात्मक हो, प्रयास सतत हों और लक्ष्य राष्ट्र निर्माण हो, तब कोई भी मंज़िल दूर नहीं रहती।"

उनकी प्रेरणा और नेतृत्व न केवल मध्यप्रदेश, बल्कि सम्पूर्ण भारत को नई दिशा देने की क्षमता रखता है। उनकी सोच इस बात का प्रमाण है कि जब नेतृत्व में दूरदृष्टि, प्रतिबद्धता और समाज के प्रति सच्चा जुड़ाव होता है, तो कोई संस्था मात्र एक संगठन नहीं रह जाती, बल्कि एक आंदोलन बन जाती है।

सौम्या साइंस एंड रिसर्च फाउंडेशन आज उनके इसी वैज्ञानिक दृष्टिकोण और मानवीय संवेदना के कारण एक ऐसे मंच में रूपांतरित हो चुका है, जहाँ नवाचार, शिक्षा और जनसेवा समानांतर रूप से आगे बढ़ रहे हैं। यह यात्रा न केवल आज की पीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत है, बल्कि आने वाले कल के भारत के लिए आशा, परिवर्तन और प्रगति की नई कहानी भी लिख रही है।

VIGYAN DHARA SCHEME









सौम्या साइंस एंड रिसर्च फाउंडेशन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

WWW.SSARF.IN +91-7440221508 researchfoundationsaumyascienc@gmail.com

E-2/338,Arera colony, Near scholar home public school Bhopal,Madhya pradesh -462016